॥ श्री: ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
८६

# मध्यसिद्धान्तकौमुदी - चन्द्रिका

(प्रथमो भागः)

(पूर्वमध्यमा-प्रथमखण्डस्य प्रश्नोत्तरी)

**नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु प्रश्नोत्तर सहित**

लेखक
आचार्य विजयमित्र शास्त्री

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

# परीक्षापयोगी प्रश्नोत्तरात्मक पुस्तकें

## (संस्कृत भाषा में)


अभिधावृत्तिमातृका-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
अलङ्कारशास्त्रस्येतिहासः । परमेश्वरदीन पाण्डेय
उत्तररामचरितादर्श । डॉ. रमाशंकर मिश्र
कर्पूरमंजरी-दीपिका । गौरीनाथ मिश्र 'भास्कर'
कादम्बरी-कला-प्रकाशः । डॉ. नरेश झा
कादम्बरी-सोपानम् । शिवप्रसाद द्विवेदी
काव्यप्रकाश-रहस्यम् । श्रीरामजीलाल शर्मा
काव्यमीमांसा-दीपिका । वेदव्यास शुक्ल (१-५ अध्याय)
काव्यशास्त्रस्येतिहास-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तेः-आलोकः । (तृतीयाधिकरण प्रश्नोत्तरी) । डॉ. नरेश झा
किरातार्जुनीय-रहस्यम् । डॉ. कृष्णदेव प्रसाद । १-२ सर्ग, ३-६ सर्ग
कुमारसम्भवम्-रहस्यम् । श्री रामप्रसाद त्रिपाठी । १-२ सर्ग
कुवलयानन्दालोकः । डॉ. नरेश झा
चन्द्रकलानाटिका-रहस्यम् । परमेश्वरदीन पाण्डेय
चन्द्रालोक-रहस्यम् । मानवल्ली तथा बेताल
चम्पूरामायण सोपानम् । डॉ शिवप्रसाद द्विवेदी
तर्कभाषा-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
तर्कसंग्रह-रहस्यम् । श्रीकीर्त्यानन्द झा
दशकुमारचरित-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
ध्वन्यालोक-प्रकाशिका । श्री राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
नलचम्पू-रहस्यम् । पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय
नाट्यशास्त्र-प्रश्नोत्तरी । १-७ अध्याय; १७-२० अध्याय
नैषधीयचरित-प्रश्नोत्तरी । मिश्र एवं द्विवेदी । १-५ सर्ग; १०-१३ सर्ग
परमलघुमञ्जूषा-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
परिभाषेन्दुशेखर-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
पाणिनीयशिक्षा-सोपानम् । डॉ. बालगोविन्द झा
प्रतिमानाटक-रहस्यम् । डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी
प्रबन्धसङ्ग्रहः (व्याकरणाचार्य निबन्ध) । डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
भट्टिकाव्य-दर्पणः । स्वामी प्रज्ञान भिक्षु । १-४ सर्ग, ५-८ सर्ग
भट्टिकाव्यालोकः । डॉ. रमाशङ्कर मिश्र । १४-१७ सर्ग, १८-२२ सर्ग
भारतीयसंस्कृति-सोपानम् । आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
मध्यसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका । आचार्य विजयमित्रशास्त्री (१-४ खण्ड) सम्पूर्ण

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

८६

B-3

# ध्यसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका

(प्रथमो भागः)

(पूर्वमध्यमा-प्रथमखण्डस्य प्रश्नोत्तरी)

नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु
प्रश्नोत्तर सहित

लेखक
आचार्य विजयमित्र शास्त्री

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

प्रकाशक

**चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन**

( भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक )

के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन

पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001

दूरभाष : 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 2011-12

मूल्य : 65.00

अन्य प्राप्तिस्थान

**चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस**

4697/2, भू-तल ( ग्राउण्ड फ्लोर )

गली नं. 21-ए, अंसारी रोड

दरियागंज, नई दिल्ली 110002

दूरभाष : 32996391

ई-मेल : chaukhamba_neeraj@yahoo.com

❖

**चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**

38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर

पो. बा. नं. 2113

दिल्ली 110007

दूरभाष : 23856391

❖

**चौखम्बा विद्याभवन**

चौक ( बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे )

पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

दूरभाष : 2420404

# प्रस्तावना

इयं वैयाकरणमध्यसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका प्रश्नोत्तरमुखीना व्याकरणशशिचन्द्रिकेवाऽस्माभिर्महता श्रमेण प्रयत्नेन च प्राकाश्यमानायि। सत्स्वप्यनेकेषु प्रश्नोत्तरीयग्रन्थेष्विदं ग्रन्थरत्नं मूर्धाऽभिषिक्तं समस्तव्याकरणज्ञानजिज्ञासुच्छात्रमण्डलकल्याणाय प्रकल्पिष्यते, इत्यत्र नास्ति कोऽपि विसंवादः। अस्य ग्रन्थरत्नस्य वैशेषिका गुणाः स्वयमेव प्रकाशन्तेतमाम्, तथापि केचनात्र प्रस्तूयन्ते—

१. समस्तवाङ्मयज्ञानमूलान्यक्षराण्येव सन्तीति वेदैः समाम्नायते। तथाहि—

'ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति च इत्तदविदुस्त इमे समासते॥'

—ऋग्वेदः, मं० १, सू० १६४, मं० ३९

तान्यक्षराणि च चतुर्दशसूत्रमूलानि सर्वथा वेदवदनादीनि महर्षिणा पतञ्जलिना महाभाष्ये प्रतिष्ठापितानि। तथाहि—

'अक्षर नक्षरं विद्यादश्नोतेर्वा सरोक्षरम्।
वर्णं वाहुः पूर्वसूत्रे किमर्थमुपदिश्यते॥'

'अथ किमर्थमक्षरमिति ? न क्षीयते न क्षरतीति वाऽक्षरम्। अश्नोतेर्वा पुनरौणादिकः सरन् प्रत्ययः। अश्नुते इत्यक्षरम्। अथवा पूर्वसूत्रे वर्णस्याक्षरमिति संज्ञा क्रियते।'

अथ किमर्थ उपदेशः क्रियते ?

'वर्णज्ञानं वाग्विषयो यत्र च ब्रह्म वर्तते।
तदर्थमिष्टवुद्ध्यर्थं लघ्वर्थञ्चोपदिश्यते॥'

'सोऽयमक्षरसमाम्नायो वाक्समाम्नायः पुष्पितः फलितश्चन्द्रतारकवत् प्रतिमण्डितो वेदितव्यो ब्रह्मराशिः। सर्ववेदपुण्यफलावाप्तिश्चास्य ज्ञाने भवति। मातापितरौ चास्य स्वर्गे लोके महीयेते।'—महाभाष्यम् अ० १, आ० २।

इमानि चतुर्दशसूत्राणि न केवलं व्याकरणस्यैव मूलभूतान्यपितु : -ज्ञानविज्ञानमयस्यास्य चतुर्दशभुवनस्य कारणभूतानि सन्तीति विज्ञेयम्। अत एवैतेषां पूर्णज्ञानाय सर्वैरेव प्रयत्नो विधेयः। तदर्थमेवात्र पूर्णज्ञानाय विविधा उपायाः प्रदर्शिताः।

२. सर्वेषां वर्णानां ( व्यञ्जनानाम्, स्वराणाम् अयोगवाहानाञ्च )

स्थानप्रयत्नबोधाय बहवो विधयो नवनवोन्मेषशालीनि नूतनानि बोधकचक्राणि चात्र प्रकाशितानि ।

३. अध्येतृसौविध्याय बहुविधाः सूचयोऽत्र सन्निवेशिताः । तथाहि—विषय-सूची, व्याख्यातसूत्रसूची, श्लोकसूची, व्याख्यातवार्तिकसूची, प्रतीकव्याख्यासूची, प्रश्नसूची, प्रयोगसूची चेति सूचयोऽत्र ग्रन्थरत्नस्य नयनानि सरसि कमलानीव शोभमानाः दृश्यन्तेतराम् ।

४. विषयसूची मध्यसिद्धान्तकौमुदीक्रमेणैवात्र सन्निवेशिता ।

५. परीक्षासु बहुषु वर्षेषु पृष्टानि विशिष्टानि सूत्राणि सरलार्थसंवलितानि सम्यग्व्याख्यातानि ।

६. परीक्षासु बहुषु वर्षेषु पृष्टाः कारिकाः श्लोकाश्चात्र सोदाहरणं व्याख्याताः ।

७. परीक्षासु बहुषु वर्षेषु पृष्टानि विशिष्टानि वार्तिकानि सोदाहरणं व्याख्यातानि ।

८. ग्रन्थे प्रोक्तानि प्रतीकानि सरलसंस्कृतगिरा सम्यग्व्याख्याताः ।

९. अत्र बहवो विषयाः सम्भावितप्रश्नोत्तरमुखेन सम्यग्व्याख्याताः ।

१०. सर्वे प्रयोगाः कार्यप्रदर्शनसूत्रपुरस्सरं सम्यगवधानेन साधिताः । इतः पूर्वं प्रकाशिताः सर्वे ग्रन्थाः प्रायशोऽशुद्धिबहुलाः दृश्यन्ते । सूत्रोल्लेखं विनैव कार्यप्रदर्शनमात्रसिद्धार्था विराजन्ते ।

११. एतस्य ग्रन्थस्य छात्राणां महोपकारकत्वाद् दीर्घकालस्थायिमहर्घशुभ्र-कर्गलेषु नूतनाक्षरैर्मुद्रणं कृतम् ।

१२. सूचीनेत्रं विना नयनविहीनशोभनपुरुष इव ग्रन्थो विषीदति । इतः पूर्वं प्रकाशितेषु प्रश्नोत्तरीयग्रन्थेषु काचिदपि सूची न प्रकाशिता । अत्र तु सप्त-सूचीप्रकाशनात्पूर्वप्रकाशिताः सर्वे ग्रन्था नेत्रविहीनत्वात्पराभूताः ।

एतत्प्रकाशनेऽस्मज्ज्येष्ठपुत्रः डा० अशोकचन्द्रगौडो व्याकरणाचार्यः बहु-साहाय्यमदात्, ततस्तस्मै शुभाशिषः प्रदीयन्ते । सुरभारतीप्रकाशनाध्यक्षेभ्यः, मुद्रणालयाध्यक्षेभ्यः, प्रत्यक्षेभ्योऽप्रत्यक्षेभ्यश्च सहायकेभ्यो बहुशो धन्यवादाः वितीर्यन्ते ।

दीपावली
विवेदानन्दनगरम्
सी० २७।२११—एल १।१
वाराणसी—२

मनस्विनां वशंवदः
**विजयमित्र शास्त्री**

# विषयानुक्रमः

## प्रकरण-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| संज्ञाप्रकरणम् | १ | हल्सन्धिप्रकरणम् | २९ |
| प्रत्याहारबोधः | ३ | विसर्गसन्धिप्रकरणम् | ४१ |
| प्रत्याहार-परिभाषा | ३ | स्वादिसन्धिप्रकरणम् | ४२ |
| प्रत्याहारनिविष्टवर्णसूची | ३ | अजन्तपुंल्लिङ्गप्रकरणम् | ४७ |
| सूत्र-परिभाषा | ७ | अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् | ७४ |
| कतिविधसूत्रसंख्या | ७ | अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् | ८५ |
| ध्वन्यात्मकस्वरभेदबोधकचक्रम् | ११ | हलन्तपुंल्लिङ्गप्रकरणम् | ९६ |
| स्वराणां स्थान-प्रयत्नबोधकचक्रम् | १२ | हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् | १५७ |
| व्यञ्जनानां स्थानप्रयत्नबोधचक्रम् | १३ | हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् | १७० |
| अच्सन्धिप्रकरणम् | १६ | अव्ययप्रकरणम् | १८४ |


## व्याख्यातसूत्रसूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| अणुदित्सवर्णस्य० | १५ | ओतो गार्ग्यस्य | ४३ |
| अतो भिस ऐस् | ४९ | कृन्मेजन्तः | १८४ |
| अतो रोरप्लुतादप्लुते | ४२ | क्त्वातोसुन्कसुनः | १८५ |
| अदर्शनं लोपः | ८ | ङमो ह्रस्वादचि० | ३६ |
| अन्तरं बहिर्योग० | ५१ | ङेप्रथमयोरम् | १२५ |
| अलोऽन्त्यस्य | १७ | ढ्रलापे पूर्वस्य० | ४५ |
| आकडारादेका संज्ञा | ५७ | तद्धितश्चासर्व० | १८४ |
| आतो धातोः | ५७ | तस्मिन्निति० | १७ |
| आदिरन्त्येन सहेता | ९ | तस्य लोपः | ९ |
| आदेशप्रत्यययोः | ५१ | तुल्यास्यप्रयत्नं | ११ |
| आमन्त्रितं पूर्व० | १३२ | तेमयावेकवचनस्य | १३० |
| उच्चैरुदात्तः | १० | त्यदादीनामः | ६३ |
| ऊकालोज्ह्रस्व | ९ | द्वितीयाटौस्स्वेनः | १०२ |
| ओत् | २८ | न ङिसम्बुद्ध्योः | १०५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| न चवाहाहैवयुक्ते | १३२ | षणान्ताः षट् | ११४ |
| नलोपः सुप्स्वर० | १०६ | सपूर्वायाः प्रथमाया० | १३२ |
| नश्छव्यप्रशान् | ३७ | समाहारः स्वरितः | १० |
| नामन्त्रिते० | १३३ | सम्बुद्धौ शाकल्यस्य० | २८ |
| निपात एकाजनाङ् | २७ | सर्वादीनि सर्वनामानि | ५१ |
| नीचैरनुदात्तः | १० | ससजुषो रुः | ४२ |
| परः सन्निकर्षः० | १६ | सामन्त्रितम् | १३२ |
| पश्यार्थैश्चानालोचने | १३२ | सुडनपुंसकस्य | ५६ |
| पादः पत् | १३३ | सुप्तिङन्तम्पदम् | १६ |
| पूर्वपराऽवर० | ५१ | स्कोः संयोगा० | १२१ |
| बहुवचनस्य वस्नसौ | १३० | स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ | ४९ |
| भोभगोअघो० | ४३ | स्थानेऽन्तरतमः | १७ |
| मुखनासिका० | ११ | स्पृशोऽनुदके क्विन् | १४८ |
| यचि भम् | ५७ | स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् | ५१ |
| युष्मदस्मदोः० | १३० | स्वरादिनिपातं० | १८४ |
| रो रि | ४५ | स्वादिष्वसर्वं० | ५६ |
| वा शरि | ४१ | हलन्त्यम् | ८ |
| विसर्जनीयस्य सः | ३७,४१ | हलि सर्वेषाम् | ४४ |
| व्रश्चभ्रस्जसृज० | ११९ | हलोऽनन्तराः संयोगः | १६ |
| व्योर्लघुप्रयत्न० | ४३ | हशि च | ४३ |
| शर्परे विसर्जनीयः | ४१ | हो ढः | ९६ |
| शि तुक् | ३५ | | |


## व्याख्यातश्लोक-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| इदमस्तु | १०२ | पीलुर्वृक्ष | ८९ |
| ईषदर्थे | २७ | पूर्वेगैवाण् | १५ |
| एकस्मान् | ६ | यन्निमित्तमुपादाय | ८८ |
| गवाक्शब्दस्य | १८० | लघूनि | ७ |
| ञ्छौ अचछा | ३५ | वष्टिभागुरि | १८६ |
| धातुसूत्र | ८ | श्रीशस्त्वा | १३० |
| वृत्तावसाने | २ | सदृशं त्रिषु | १८६ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ा च | ७ | स्वल्पाक्षर् | ७ |
| ं वां नौ | १३० | हकारो | ८ |
| ्सुप्सु नव | १८० | | |


## व्याख्यातवार्तिक-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| ंवाक्ये निघातः | १३१ | खर्परे शरि वा | ४१ |
| वान्नादयः | १३२ | द्विपर्यन्तानामेवेष्टिः | ६३ |
| तो णिदिति वाच्यम् | ७३ | | |


## प्रतीकव्याख्या सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| ादिसंज्ञार्थानि | २ | नप्त्रादिग्रहणं नियमार्थम् | ७१ |
| ामन्त्या इतः | ३ | माहेश्वराणि | २ |
| अकारः प्रथमो वर्णः | ९ | लणमध्ये त्वित्संज्ञकः | ८ |


---

## प्रयोग-सूची


| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ | | अतिचम्वै | ६९ | अनडुहे | ९९ |
| ौहिणी | २१ | अतिलक्ष्मीः | ६५ | अनड्वान् | ९८ |
| ेनमत् | १३३ | अतिसर्वाय | ५३ | अनड्वाहः | ९८ |
| ेनमथः | १३३ | अत्युच्चैसौ | १८५ | अनड्वाहम् | ९९ |
| ेनमथौ | १३३ | अदः | १८३ | अनड्वाहौ | ९८ |
| ेनमद् | १३३ | अद्भिः | १६४ | अनया | १६० |
| ेनमद्भ्याम् | १३४ | अद्भ्यः | १६४ | अनयोः | १०५, १६१ |
| ने तव | १३२ | अधिहरि | १८५ | अनादये | ८८ |
| ो याहि | ४४ | अनडुत्सु | १०० | अनादिने | ८८ |
| ्क्कितः | ३३ | अनडुद्भिः | ९९ | अनेन | १०३ |
| ्श्वितः | ३३ | अनडुद्भ्यः | १०० | अनेहा | १५३ |
| तिचमूनाम् | ६९ | अनडुद्भ्याम् | ९९ | अन्तरस्यै | ७६ |
| तिचम्वाः | ६९ | अनडुहः | ९९,१०० | अन्तरे | ५३ |
| तिचम्वाम् | ६९ | अनडुहा | ९९ | अयः | १६४ |

अपाम् १६४
अप्सु १६४
अमी १५५
अमी ईशाः २६
अमीभिः १५५
अमीभ्यः १५६
अमीषाम् १५७
अमीषु १५७
अमुकेऽत्र २६
अमुना १५५
अमुम् १५५
अमुम् १६७
अमुया १६७
अमुयोः १५६, १६९
अमुष्मात् १५६
अमुष्मिन् १५७
अमुष्मै १५६
अमुष्य १५६
अमुष्याः १६९
अमुष्यै १६८
अमू १५४,१६७,१८३
अमूः १६७
अमूनि १८३
अमून् १५५
अमूभिः १६८
अमूभ्यः १६८
अमूभ्याम् १५५,१६८
अमूषाम् १६९
अमूषु १७०
अमूष्याम् १६९

अयम् १०२
अर्वतः ११२
अर्वता ११२
अर्वद्भ्याम् ११२
अर्वन्तः ११२
अर्वन्तौ ११२
अर्वा ११२
अवश्यलाव्यम् १९
अष्ट ११५
अष्टभिः ११५
अष्टभ्यः ११५
अष्टसु ११६
अष्टानाम् ११६
अष्टाभिः ११५
अष्टाभ्यः ११५
अष्टासु ११६
अष्टौ ११५
असकौ १५४
असः शिवः ४७
असुकः १५४
असौ १५४,१६७
अस्मत् १२८
अस्मभ्यम् १२७
अस्माकम् १२९
अस्मात् १०४
अस्मान् १२६
अस्माभिः १२७
अस्मासु १२९
अस्मिन् १०५
अस्मै १०४

अस्य १
अस्याः १
अस्याम् १
अस्यै १
अहनी १
अहम् १
अहरहः
अहर्गणः
अहर्पतिः
अहः १
अहःसु १
अहानि १
अहो ईशाः
अहोभ्याम् १
अहो रथन्तरम्
अहोरात्रः
अहोरूपम्
अह्नी १
आ एवं नु मन्यसे
आक्रंस्यते

आ

आगच्छ कृष्ण ३ अत्र
गोश्चरति
आच्छादयति
आपः १
आभिः १
आभ्यः १
आभ्याम् १०३,१
आर्च्छत्
आवयोः १

आवाभ्याम् १२७
आवाम् १२५
आविष्कृतम् ३९
आशिषः १६६
आशिषौ १६६
आशीः १६६
आशीर्भ्याम् १६६
आसाम् १६२
आसु १६२

इ

इ इन्द्रः २६
इदम् १७१
इमाः १६०
इमानि १७२
इमान् १०३
इमाम् १६०
इमे १०२, १६०, १७२
इमौ १०२,१०३
इयम् १०३,१६०

ई

ईट्टे ३०

उ

उ उमेशः २७
उत्थानम् ३१
उत्तम्भनम् ३२
उत्तरपूर्वस्यै ७६
उत्तरपूर्वायै ७६
उदग्भ्याम् १३८
उदङ् १३६
उदञ्चौ १३७
उदीचः १३७
उदीचा १३७
उदञ्चः १३७
उदेतोः १८५
उपानत् १५७
उपानत्सु १५७
उपानद् १५७
उपानद्भ्याम् १५७
उपेतः २१
उपेन्द्रः १९
उपैति २१
उपैधते २१
उपोषति २३
उशना १५३
उशनोभ्याम् ११३
उष्णिक् १५८
उष्णिग् १५८
उष्णिग्भ्याम् १५८

ऊ

ऊर्क् १७५
ऊर्ञ्जि, ऊर्ञ्जी १७५

ऋ

ऋत्विक् ११६
ऋत्विग् ११६
ऋत्विग्भ्याम् ११७
ऋत्विजः ११७
ऋत्विजा ११७
ऋत्विजौ ११६

ए

एकतरम् ८६
एतत् १७७
एतद् १७७
एतन्मुरारिः ३१
एतम् १२३
एतयोः १२४
एतानि १७७
एतान् १२४
एते १२३, १७७
एतेन १२४
एतौ १२३
एनत् १७२
एनद् १७२
एनम् १२३
एनयोः १२४, १७२
एनान् १२४
एनेन १२४,१७२
एनौ १२३
एभिः १०४
एभ्यः १०४
एषः १२३
एषको रुद्रः ४६
एष विष्णुः ४६
एषाम् १०५
एषु १०५
एषोऽत्र ४७

ओ

ओष्णम् २७

क

कतरत् ८६
कतरद् ८६

| | |
|---|---|
| कति | ६२ |
| कतीनाम् | ६२ |
| कर्कन्धुः | २३ |
| कवी अमू | २६ |
| कस्कः | ३९ |
| कः | १०५ |
| कः त्सरुः | ४१ |
| कानि | १७१ |
| काँस्कान् | ४० |
| किन् ह्नुते | ३४ |
| किम् | १७१ |
| किम्वुक्तम् | २८ |
| किम् ह्मलयति | ३४ |
| कियँ ह्यः | ३४ |
| किलँ ह्लादयति | ३४ |
| किवँ ह्वलयति | ३४ |
| कुलटा | २३ |
| कृत्वा | १८५ |
| कृष्णर्द्धिः | २० |
| कृष्णैकत्वम् | २० |
| कृष्णोत्कण्ठचम् | २१ |
| के | १०२, १७१ |
| को | १०२ |
| कौतस्कुतः | ३९ |
| क्रय्यम् | १९ |
| क्रुङ् | १४२ |
| कुङ्भ्याम् | १४३ |
| क्रुञ्चः | १४३ |
| क्रुञ्चौ | १४३ |
| क्रोष्टरि | ६८ |
| क्रोष्टवे | ६७ |
| क्रोष्टा | ६६ |
| क्रोष्टारौ | ६८ |
| क्रोष्टुः | ६७ |
| क्रोष्टुना | ६७ |
| क्रोष्टूनाम् | ६८ |
| क्रोष्टून् | ६७ |
| क्रोष्ट्रा | ६७ |
| क्रोष्ट्री | ८४ |
| क्रोष्ट्रे | ६७ |
| क्रोष्ट्रोः | ६८ |
| क्वेव | २४ |
| क्षय्यम् | १९ |
| **ख** | |
| खलपूः | ६९ |
| खलप्वः | ६९ |
| खलप्वौ | ६९ |
| **ग** | |
| गङ्गे अमू | २६ |
| गङ्गोदकम् | १९ |
| गङ्गौघः | २१ |
| गतमहो रात्रिरेषा | ४४ |
| गम्यते | ३२ |
| गवाक् | १७७ |
| गवाग् | १७७ |
| गवाग्भ्याम् | १७८ |
| गवाक्षु | १७८ |
| गवेन्द्रः | २५ |
| गव्यम् | १८ |
| गव्यूतिः | १८ |
| गाम् | ७३ |
| गाः | ७३ |
| गावः | ७३ |
| गावौ | ७३ |
| गीः | १५८ |
| गीः काम्यति | ३८ |
| गीर्पतिः | ४५ |
| गुम्फितः | ३३ |
| गोः | २५ |
| गो अग्रम् | २५ |
| गोचा | १७८ |
| गोची | १७७ |
| गौः | ७३ |
| गौरी | ८० |
| गौर्य्यः | ८० |
| गौर्य्यै | ८० |
| गौर्य्यौ | २८,८० |
| ग्रामण्याम् | ६६ |
| ग्लावः | ७४ |
| ग्लावौ | ७४ |
| ग्लौः | ७४ |
| **घ** | |
| घनाघनः क्षोभणः | ४१ |
| घृतस्पृक् | १४८ |
| घृतस्पृग् | १४८ |
| **च** | |
| चक्रिंस्त्रायस्व | ३७ |
| चक्रि अत्र | २८ |
| चक्रिण्ढौकसे | ३० |
| चतसृणाम् | १५९ |

चतसृभिः १५९
चतसृभ्यः १५९
चतसृषु १५९
चतस्रः १५८
चतुरः १०१
चतुर्णाम् १०१
चतुर्भिः १०१
चतुर्भ्यः १०१
चतुर्मुखः ३१
चतुर्षु १०१
चत्वारः १००
चत्वारि १७१
चरमे ५४
चिकीः १५०
चिकीर्षु १५१
चित्रग्वग्रम् २५
चिद्रूपम् ३१
चिन्मयम् ३१

ज

जक्षत् १४६
जक्षतः १४६
जय्यम् १९
जरसौ ७७
जरे ७७
जीवसे १८४
ज्ञानम् ८५
ज्ञानानि ८६
ज्ञाने ८६

त

त आगच्छन्ति २०
तच्छास्त्रम् ३२
तच्छिवः ३२
तच्छ्लोकेन ३२
तट्टीका ३०
तत् १७६
तत्र शालायाम् १८५
तद् १७६
तन्मात्रम् ३१
तल्लयः ३१
तव १२८
तवल्कारः २०
तादृक् १४६
तादृग् १४६
तादृग्भ्याम् १४७
तादृशः १४६
तानि १७६
तिरश्चः १४०
तिरश्चा १४१
तिरश्चौ १४०
तिर्यग्भ्याम् १४१
तिर्यङ् १४०
तिसृणाम् ७८
तिसृषु ७९
तिस्रः ७८
तुदत् १८०
तुदती १८०
तुदन्ति १८१
तुदन्ती १८०
तुभ्यम् १२७
तुराषाट् १००
तुराषाड् १००
तृढः ४६
ते १२२,१७६
तौ १२२
त्यद् १७५
त्याः १६३
त्यानि १७५
त्ये १२२, १६३, १७५
त्यौ १२२
त्रयः ६२
त्रयाणाम् ६२
त्रीन् ६२
त्वङ्करोषि ३३
त्वत् १२८
त्वन्तनोषि ३३
त्वम् १२४
त्वया १२६
त्वयि १२९
त्वाम् १२६
त्विट् १६५
त्विट्त्सु १६६
त्विट्सु १६६
त्विड्भ्याम् १६५

द

दण्डि १७४
दण्डिनी १७४
दण्डीनि १७४
ददत् १४५, १८०
ददति १८०
ददतौ १४६

ददन्ति १८०
ददाति १८०
दधनि ९०
दधृक् १४८
दधृग् १४८
दधृग्भ्याम् १४९
दध्नः ८९
दध्ना ८९
दध्नाम् ९०
दध्नि ९०
दध्ने ८९
दध्नोः ९०
दिक् १६४
दिक्षु १६५
दिग् १६४
दिग्भिः १६५
दिग्भ्यः १६५
दिग्भ्याम् १६४
दीव्यत् १८१
दीव्यन्ति १८२
दीव्यन्ती १८१
दुष्कृतम् ३९
दृक् १६५
दृग् १६५
दृग्भ्याम् १६५
दृन्भूः ७०
दृन्भ्वौ ७०
दे३वदत्त३ २८
देवा इह ४३
देवा यान्ति ४४
देवाऽस्मान् पाहि १३२
देवेट् १२०
देवेड् १२०
देवैश्वर्यम् २१
दैत्यारिः २४
द्यौः १५८
द्वयोः ६३
द्वाभ्याम् ६३, ७९
द्वितये ५४
द्वितीयस्मात् ५५
द्वितीयस्मिन् ५५
द्वितीयस्मै ५४
द्वितीयस्यै ७७
द्वे ७९
द्वौ ६३

**ध**

धनुः १८२
धनुषी १८२
धनुष्कपालम् ३९
धनूंषि १८२
धाता ७०
धातारौ ७१
धातृ ९२
धातृणा ९३
धातृणी ९२
धातृणाम् ७१, ९३
धातृणि ९३
धात्रंश १७
धात्रा ९३
धीमन्तः १४४
धीमन्तौ १४४
धीमान् १४४
धुक् ९६
धुक्षु ९७
धुग् ९६
धुग्भ्याम् ९६
धूर्पतिः ४५
ध्रुक् ९७
ध्रुक्षु ९७
ध्रुग् ९७
ध्रुग्भ्याम् ९७
ध्रुट् ९७
ध्रुट्त्सु ९७
ध्रुट्सु ९७
ध्रुड् ९७
ध्रुड्भ्याम् ९७

**न**

नक् १४७
नग् १४७
नग्भ्याम् १४८
नट् १४७
नड् १४७
नड्भ्याम् १४८
नरः ७२
नरौ ७२
नशः १४८
नशौ १४८
ना ७२
नायकः १८
नाव्यम् १८

निर्जरसौ ५५
निष्प्रत्यूहम् ३९
नृणाम् ७२
नृ ँ पाहि ३७

प

पचत् १८१
पचन्ति १८१
पचन्ती १८१
पञ्च ११४
पञ्चभिः ११४
पञ्चभ्यः ११५
पञ्चसु ११५
पञ्चानाम् ११५
पतञ्जलिः २३
पत्या ६१
पत्युः ६२
पत्ये ६२
पत्यौ ६२
पथः ११३
पथा ११३
पथाम् ११४
पथि ११४
पथिभिः ११४
पथिभ्यः ११४
पथिभ्यः ११४
पथिभ्याम् ११३
पथिषु ११४
पथे ११४
पथोः ११४
पदः ५५
पदा ५६
पन्थाः ११२
पन्थानः ११३
पन्थानम् ११३
पन्थानौ ११३
पत्री ६४
पप्यः ६४
पयः १८२
पयसी १८२
पयस्कल्पम् ३८
पयस्पाशम् ३८
पयांसि १८२
पयोभ्याम् १८३
परमतैः २२
परिमृट् १२०
परिमृड् १२०
परिव्राट् १२०
परिव्राड् १२०
पावकः १८
पितरः ७१
पितरम् ७२
पितरौ ७१
पिता ७१
पितॄणाम् ७२
पिपठीः १५०
पिपठीर्भ्याम् १५०
पिपठीष्षु १५०
पिपठीःषु १५०
पिबध्यै १८४
पीलुने ८९
पुंसः १५२
पुंसु १५२
पुँस्कोकिल ३६
पुँस्पुत्रः ३७
पुना रमते ४५
पुमांसौ १५२
पुमान् १५२
पूर्वस्मात् ५३
पूर्वस्मिन् ५३
पूर्वे ५२
पेष्टा ३०
प्रतीचः १३६
प्रत्यग्भ्याम् १३६
प्रत्यङ् १३५
प्रत्यङ्ङात्मा ३६
प्रत्यञ्चः १३६
प्रत्यञ्चा १३५
प्रथमे ५४
प्रद्यु ९३
प्रद्युना ९४
प्रद्युनी ९३
प्रद्यूनि ९४
प्रधीः ६५
प्रध्यः ६५
प्रध्यम् ६५
प्रध्यि ६६
प्रध्यौ ६५
प्रराभ्याम् ९५
प्ररि ९४
प्ररिणी ९४

प्ररिणा ९४
प्रीणाम् ९५
प्रीणि ९४
प्रशान् १०१
प्रश्नः २९
प्रष्ठौहः २१
प्राग्भ्याम् १३५
प्राङ् १३४, १४१
प्राङ्क्षु १४२
प्राङ्ख्षष्ठः ३४
प्राङ्भ्याम् १४२
प्राङ्षु १४२
प्राचः १३४
प्राचा १३५
प्राञ्चः १३४,१४१
प्राञ्चौ १३४,१४१
प्रातःकल्पम् ३८
प्रार्च्छति २२
प्रार्णम् २२
प्रार्षभीयति २२
प्रियत्रयाणाम् ६३
प्रेजते २२
प्रेदिधत् २१
प्रैषः २२
प्रैष्यः २२
प्रौढिः २२
प्रौहः २२

ब

बहुश्रेयसी ६४
बहुश्रेयसीनाम् ६४
बहुश्रेयस्याः ६४
बहुश्रेयस्याम् ६५
बहुश्रेयस्यै ६४
बिम्बोष्ठः २४
ब्रह्म १७३
ब्रह्म ऋषिः २८
ब्रह्मणः १०९
ब्रह्मणा १०९
ब्रह्मणी १७३
ब्रह्मर्षिः २८
ब्रह्माणि १७३

भ

भगो नमस्ते ४४
भवन् १४५
भवन्तौ १४५
भवान् १४५
भात् १८१
भाती १८१
भान्ति १८१
भृट् १२१
भृड् १२१
भृड्भ्याम् १२१
भो अच्युत ४३
भो देवाः ४४
भ्रुवाम् ८४
भ्रुवि ८४
भ्रूः ८४

म

मघवतः ११०
मघवता १११
मघवद्भ्याम् १११
मघवन्तः ११०
मघवन्तम् ११०
मघवन्तौ ११०
मघवान् १०९
मघोनः १११
मत् १२८
मतेय ७७
मतेः ७७
मतौ ७८
मत्याः ७७
मत्याम् ७८
मत्यै ७७
मधु ९१
मधुना ९२
मधुनी ९१
मधूनि ९१
मध्वरिः १७
मनीषा २३
मनोरथः ४६
मन्यते ३३
मम १२८
मया १२६
मयि १२९
महतः १४४
महद्भ्याम् १४४
महान् १४३
महान्तः १४४
महान्तौ १४३
मह्यम् १२७

माच्छिदत् ४०
माता ८५
मातॄः ८५
माम् १२६
मासपूर्वाय ५३
म्लेच्छति ४०

य

यँल्लोकम् ३४
यः १२२
यज्वनः १०८
यज्वना १०८
यज्वभ्याम् १०८
यज्वा १०८
यज्वानः १०८
यज्वानौ १०८
यत् १७६
यद् १७६
यशस्कल्पम् ३८
यशस्काम्यति ३८
यशांसि ३३
यानि १७६
युंग्भ्याम् ११८
युङ् ११८
युञ्जः ११८
युवभ्याम् ११२
युवयोः १२८
युवाभ्याम् १२६
युवाम् १२५
युष्मत् १२८
युष्मभ्यम् १२७
युष्माकम् १२९
युष्मान् १२६
युष्माभिः १२७
युष्मासु १२९
यूनः १११
यूना १११
यूयम् १२५
ये १२३, १७६
यौ १२३

र

रत्नमुट् १४९
रत्नमुड् १४९
रत्नमुड्भ्याम् १४९
रमया ७५
रमयोः ७५
रमाः ७४
रमायाः ७५
रमायाम् ७५
रमायै ७५
रमे ७४
रमेशः १९
राः ७३
राजः ११९
राजनि १०७
राजभिः १०७
राजभ्यः १०७
राजभ्याम् १०७
राजा १०५
राजानः १०६
राजानम् १०६
राजानौ १०६
राज्ञी ११९
राज्ञः १०६, १०७
राज्ञा १०६
राज्ञाम् १०७
राज्ञि १०७
राज्ञे १०७
राट् ११९
राड् ११९
राड्भ्याम् १२०
रामः ४७
रामकृष्णावमू आसाते २६
रामम् ४८
रामयोः ५०
रामश्चिनोति २९
रामष्टीकते ३०
रामष्षष्ठः २९
रामस्य ५०
रामाः ४८
रामान् ४९
रामाणाम् ५१
रामात् ५०
रामाभ्याम् ४९
रामाय ५०
रामे ५१
रामेण ४९
रामेभ्यः ५०
रामेषु ५१
रामैः ४९
रामौ ४८

राभ्याम् ७४
रायः ७४
रायौ ७४
ल
लक्ष्मीः ८१
लक्ष्मीच्छाया ४०
लब्ध्यम् १९
लाकृतिः १७
लाङ्गलीषा २३
लिट् ९६
लिट्त्सु ९६
लिट्सु ९६
लिड् ९६
लिड्भ्याम् ९६
लीढः ४६
व
वधूः ८४
वयम् १२५
वर्णाश्रमेतराणाम् ५३
वर्णाश्रमेतरे ५४
वर्षाभ्वौ ७०
वाः १७१
वाक् १६३
वागीशः ३१
वाग् १६३
वाग्घरिः ३२
वाग्भ्याम् १६३
वाप्यश्वः २८
वारा १७१
वारि ८७
वारिणः ८८
वारिणी ८७
वारिणे ८८
वारी १७१
वारीणाम् ८८
वारीणि ८७
विट् १४७
विड् १४७
विड्भ्याम् १४७
विदुषः १५१
विद्वद्भ्याम् १५२
विद्वांसौ १५१
विद्वाँल्लिखति ३१
विद्वान् १५१
विभ्राट् १२०
विभ्राड् १२०
विरप्शम् ३२
विशौ १४७
विश्नः २९
विश्वपः ५७
विश्वपा ५७
विश्वपाः ५६
विश्वपौ ५६
विश्वसृट् १२०
विश्वसृड् १२०
विश्वाराट् १२१
विश्वाराड् १२१
विश्वाराड्भ्याम् १२१
विश्वौहः ९८
विष्ण इह २०
विष्णविह २०
विष्णवे १८
विष्णुस्त्राता ४१
विष्णू इमौ २६
विष्णूदयः २४
विष्णोऽव २५
विष्णो इति २७
विसृपः १८५
वृत्रघ्नः १०९
वृत्रहणः १०९
वृत्रहणौ १०९
वृत्रहा १०९
वेधाः १५३
वेधोभ्याम् १५४
व्योम १७२
व्योमनी १७३
व्योमानि १७३
व्योम्नी १७३
श
शकन्धुः २३
शकृती १८०
शकृत् १८०
शकृन्ति १८०
शम्भू राजते ४६
शान्तः ३३
शार्ङ्गिञ्जयः २९
शिवच्छाया ४०
शिवायों नमः २४
शिवेहि २४
शिवोऽर्च्यः ४२

शिवो वन्द्यः ४३
शुद्धधियौ ६६
श्रियः ८२,८३
श्रियम् ८२
श्रिया ८३
श्रियाः ८३
श्रियाम् ८३,८४
श्रियि ८४
श्रिये ८३
श्रियै ८३
श्रियौ ८२
श्रीः ८२
श्रीणाम् ८३
श्रीपम् ८७
श्रीपाय ८७
श्रीशः २४

ष

षट् १४९
षट्ते ३०
षट्त्सन्तः ३४
षट्त्सु १५०
षट् सन्तः ३०
षट्सु १५०
षड् १४९
षड्भिः १४९
षण्णगर्यः ३१
षण्णवतिः ३०
षण्णाम् ३०,१४९

स

संवत्सरः ३३
सँस्स्कर्ता ३६
सः १२२
सखा ६०
सखायः ६०
सखायम् ६१
सखायौ ६०
सखीन् ६१
सख्या ६१
सख्युः ६१
सख्ये ६१
सख्यौ ६१
सच्चित् २९
सजुषौ १६६
सजूः १६६
सजूर्भ्याम् १६६
सञ्च्छम्भुः ३५
सध्रीचः १३९
सध्र्यग्भ्याम् १४०
सध्र्यङ् १३९
सध्र्यञ्चौ १३९
सन्त्सः ३५
सन्नच्युतः ३६
सन् षष्ठः ३१
समीचः १३८
सम्यग्भ्याम् १३९
सम्यङ् १३८
सम्यञ्चौ १३८
सम्राट् ३४
सर्पिष्कम् ३९
सर्पिष्कल्पम् ३८
सर्पिष्काम्यति ३९
सर्पिष्कुण्डिका ३९
सर्पिष्टमम् ३०
सर्पिष्पाशम् ३८
सर्वस्मात् ५२
सर्वस्मिन् ५२
सर्वस्मै ५२
सर्वस्याः ७६
सर्वस्याम् ७६
सर्वस्यै ७५
सर्वासाम् ७६
सर्वे ५१
सर्वेषाम् ५२
स शम्भुः ४६
सारङ्गः २४
सीमन्तः २३
सुखार्तः २२
सुख्युः ६६
सुगण्ठ्षष्ठः ३५
सुगण्णीशः ३६
सुत्युः ६६
सुद्युभ्याम् १००
सुद्यौः १००
सुधि ९०
सुधिना ९१
सुधिनी ९०
सुधिने ९१
सुधिया ९१
सुधिये ९१
सुधियौ ६६

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुधीनि | ९० | स्त्रियम् | ८१ | स्वैरिणी | २१ |
| सुध्युपास्यः | ९६ | स्त्रिया | ८२ | स्वैरी | २१ |
| सुनु | ९५ | स्त्रियाः | ८२ | ह | |
| सुनुना | ९५ | स्त्रियै | ८२ | हर इह | २० |
| सुनुनी | ९५ | स्त्रियौ | ८१ | हरयः | ५८ |
| सुनूनि | ९५ | स्त्री | ८१ | हरयिह | २० |
| सुपथि | १७४ | स्त्रीः | ८१ | हरये | १८,५९ |
| सुपथी | १७४ | स्त्रीणाम् | ८२ | हरिं वन्दे | ३२ |
| सुपदः | १३३ | स्त्रीम् | ८१ | हरिः | ५७ |
| सुपदा | १३३ | स्थूलोतुः | २४ | हरिणा | ५८ |
| सुपन्थानि | १७५ | स्नुक् | ९८ | हरिभिः | ५९ |
| सुपात् | १३३ | स्नुग् | ९८ | हरिभ्यः | ५९ |
| सुपाद् | १३३ | स्नुट् | ९८ | हरिभ्याम् | ५८ |
| सुपाद्भ्याम् | १३३ | स्नुड् | ९८ | हरिम् | ५८ |
| सुपुंसी | १८३ | स्यः | १२१ | हरिश्शेते | २९ |
| सुपुमांसि | १८३ | स्या | १६३ | हरिः शेते | ४१ |
| सुपुम् | १८३ | स्रक् | १६२ | हरिषु | ६० |
| सुयुक् | ११९ | स्रग् | १६२ | हरिः स्फुरति | ४१ |
| सुयुग् | ११९ | स्वच्छाया | ४० | हरी | ५७ |
| सुयुग्भ्याम् | ११९ | स्वनडुत् | १७० | हरी एतौ | २५ |
| सुयुजः | ११९ | स्वनडुद् | १७० | हरीणाम् | ५९ |
| सुयुजा | ११९ | स्वनडुही | १७० | हरीन् | ५८ |
| सुलु | ९२ | स्वनड्वांहि | १७० | हरी रम्यः | ४५ |
| सुलुना | ९२ | स्वभुवौ | ७० | हरेः | ५९ |
| सुलुनी | ९२ | स्वभूः | ७० | हरेऽव | २५ |
| सुलूनि | ९२ | स्वयम्भूः | ७० | हरौ | ६० |
| सुल्वा | ९२ | स्वसा | ८४ | हर्योः | ५९ |
| सेमामविड्ढि प्रभृतिम् | ४७ | स्वसारः | ८५ | हलीषा | २३ |
| सैष दाशरथी रामः | ४७ | स्वे | ५२ | हे अतिचमू | ६८ |
| स्त्रियः | ८१ | स्वैरम् | २१ | हे अनड्वन् | ९९ |

| | |
|---|---|
| हे अनेहः | १५३ |
| हे अम्ब | ७७ |
| हे अम्बाडे | ७७ |
| हे उशन | १५३ |
| हे उशनः | १५३ |
| हे उशनन् | १५३ |
| हे कलरव् | ८६ |
| हे गौरि | ८० |
| हे ज्ञान | ८५ |
| हे धातः | ७०,९३ |
| हे धातृ | ९३ |
| हे धीमन् | १४५ |
| हे पुमन् | १५२ |
| हे बहुश्रेयसि | ६४ |
| हे ब्रह्म | १७३ |
| हे ब्रह्मन् | १७३ |
| हे मघु | ९२ |
| हे मघो | ९२ |
| हे महन् | १४४ |
| हे रमे | ७५ |
| हे राजन् | १०६ |
| हे राम | ४८ |
| हे वारे | ८७ |
| हे विद्वन् | १५१ |
| हे वृत्रहन् | १०९ |
| हे वेधः | १५४ |
| हे श्रीः | ८३ |
| हे सखे | ६१ |
| हे सुधि | ९१ |
| हे सुधे | ९१ |
| हे स्त्रि | ८१ |
| हे हरे | ५८ |
| होतृकारः | २५ |

॥ श्रीः ॥

# मध्यकौमुदी-चन्द्रिका

## ( मध्यसिद्धान्तकौमुदीप्रश्नोत्तरीयम् ) ।

### मङ्गलाचरणम्

समस्तसृष्टिकर्तारं सर्वज्ञानमयङ्गुरुम् ।
प्रणम्य पितरौ चैव प्रकृतिब्रह्मरूपिणौ ॥ १ ॥
बालानां सुखबोधाय शब्दशास्त्रानुरागिणाम् ।
मध्यसिद्धान्तकौमुद्याः रहस्यं सम्प्रकाश्यते ॥ २ ॥
साङ्गोपाङ्गवेदविदुषः ब्रह्मानन्दस्वरूपिणः ।
श्रीत्यागानन्दशिष्येण विजयमिश्रशास्त्रिणा ॥ ३ ॥
परीक्षाब्धितितीर्षूणां शिष्याणामस्तु तन्मुदे ।
प्रमोदाय तथान्येषां विदुषां शेमुषीजुषाम् ॥ ४ ॥
प्रश्नोत्तरमुखेनैव व्याख्यानं क्रियते मया ।
यथाज्ञानविकासेन जायन्तां शिष्यसम्पदः ॥ ५ ॥

### अथ संज्ञाप्रकरणम्

अथ शब्दानुशासनम्—केषां शब्दानामनुशासनं क्रियते ? लौकिकानां वैदिकानञ्च । कथम् अनुशासनं क्रियते ? प्रकृत्यादिविभागकल्पनया सामान्य-विशेषवता लक्षणेन ।

अथ किमर्थो वर्णानामुपदेशः ? प्रत्याहारार्थः । किमर्थः प्रत्याहारः ? प्रत्याहारो लाघवेन शास्त्र प्रवृत्त्यर्थः । शास्त्रञ्चाऽत्र व्याकरणम् । किन्नाम व्याकरणम् ? व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम् । वि आङ् उपसर्गपूर्वात् कृधातोः करणे ल्युट् प्रत्ययः ।

अ इ उ ण् ॥ १ ॥ ऋ ऌ क् ॥ २ ॥ ए ओ ङ् ॥ ३ ॥ ऐ औ च् ॥ ४ ॥ ह य व र ट् ॥ ५ ॥ ल ण् ॥ ६ ॥ ञ म ङ ण न म् ॥ ७ ॥ झ भ ञ् ॥ ८ ॥ घ ढ ध ष् ॥ ९ ॥ ज ब ग ड द श् ॥ १० ॥ ख फ छ ठ थ च ट त व् ॥ ११ ॥ क प य् ॥ १२ ॥ श ष स र् ॥ १३ ॥ ह ल् ॥ १४ ॥

इत्ययमक्षरसमाम्नायः वर्णसमाम्नायः ब्रह्मराशिर्वेत्युच्यते ।

इति माहेश्वराणि सूत्राणि, अणादिसंज्ञार्थानि । एषामन्त्या इतः ।

**माहेश्वराणि** ( ई० ३० )—ननु इमानि सूत्राणि मुनित्रयग्रन्थबहिर्भूतत्वादप्रमाणमित्यत आह—इति माहेश्वराणि सूत्राणीति । महेश्वरादागतानि महेश्वरात् प्राप्तानीत्यर्थः । तदुक्तम्—

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥
( नन्दिकेश्वरकाशिका )

'माहेश्वराणि' इत्यत्र 'तत आगतः' ( अष्टा० ४।३।७४ ) इति सूत्रेण अण् प्रत्ययः । अथवा—महेश्वरेण प्रोक्ता उपज्ञाता माहेश्वराः, चतुर्दशानुबन्धाः, ते सन्ति येषु तानि माहेश्वराणि महेश्वरकृतानुबन्धयुतानि—इत्यर्थः ।

अत्र सूत्राणि महेश्वरादागतानि अनुबन्धा आचार्यपाणिनिना कृताः इत्येकः पक्षः । सूत्राण्यनादिसिद्धानि, अनुबन्धास्तु माहेश्वराः अर्थात् महेश्वरेण कृताः इत्यपरः पक्षः ।

अत्रैवं विचार्यते, कः पक्षः साधीयान् ? कोऽनुबन्धकर्ता ? महेश्वरः पाणिनिर्वा ? सूत्राणामनादित्वस्वीकारे वेदवत् पूर्णताऽपेक्षिता । सत्यामपूर्णतायां नाऽनादित्वं वेदवत् सम्प्रतिष्ठते, तत्रानुबन्धसाकांक्षत्वात् । तस्मात् सानुबन्धान्येव सूत्राण्यनादिसिद्धानि, न त्वनुबन्धरहितानि ।

महेश्वरकृतानि सूत्राणीति पक्षे तु—अनुबन्धानां प्रत्याहारमूलकत्वात् प्रत्याहारस्य व्याकरणाधारभूतत्वात् महेश्वरस्य च भविष्यद्द्रष्टृत्वादृषिकल्पत्वाच्च सानुबन्धान्येव सूत्राणि तेन कृतानीति सिद्धान्तो व्यवतिष्ठते । अतः पाणिनिना अनुबन्धाः कृता इति पक्षः पूर्णतया निरस्तः । पाणिनिना तेषां सूत्राणां सानुबन्धानां महेश्वरकृतानां स्वव्याकरणशास्त्रनिर्माणे समुपयोगः कृत—इत्येव पक्षो राद्धान्तः ।

**अणादिसंज्ञार्थानि**—ननु महेश्वरप्रणीतसूत्राणामेतेषां वैयाकरणसिद्धान्तप्रकाशने उपयोगाभावादिह तदुपन्यासो व्यर्थ इत्यत आह—अणादिसंज्ञार्थानीति । अण् आदिर्यासां संज्ञानां ता अणादयः संज्ञाः, के पुनस्तावदणादयः ? अण्, अक्, इक्, उक् इत्येवमादयः । अणादयश्च ताः संज्ञाश्च अणादिसंज्ञाः, ताः अर्थः

प्रयोजनं येषां तानि अणादिसंज्ञार्थानि । एषां सूत्राणामणादिसंज्ञाद्वारा व्याकरण-शास्त्रे उपयोगान्नानर्थक्यमिति भावः ।

एषामन्त्या इतः—प्रतिज्ञावाक्यमिदम् । एतेषां चतुर्दशसूत्राणामन्त्या अन्तिमाः वर्णाः—ण् क् ङ् च् इत्येवमादयः, इतः—वक्ष्यमाणेन 'हलन्त्यम्' ( अष्टा० १।३।३ ) इति सूत्रेण इत् संज्ञकाः भवन्ति ।

## अथ प्रत्याहारबोधः

चतुर्दशसूत्राणि प्रत्याहारबोधकानि । तत्र केन सूत्रेण कः प्रत्याहार इति लिख्यते :—

अ इ उ ण् ॥ १ ॥—अण् इत्येकः प्रत्याहारः ।

ऋ ऌ क् ॥ २ ॥—अक्, इक्, उक् इत्येते त्रयः प्रत्याहराः ।

ए ओ ङ् ॥ ३ ॥—एङ् इत्येकः प्रत्याहारः ।

ऐ औ च् ॥ ४ ॥—अच्, इच्, एच्, ऐच् इत्येते चत्वारः प्रत्याहाराः ।

ह य व र ट् ॥ ५ ॥—अट् इत्येकः प्रत्याहारः ।

ल ण् ॥ ६ ॥—अण्, इण्, यण् इत्येते त्रयः प्रत्याहाराः । अत्र अण् परेण णकारेण बोध्यः ।

ञ म ङ ण न म् ॥ ७ ॥—अम्, यम्, ङम् इत्येते त्रयः प्रत्याहाराः ।

झ भ ञ् ॥ ८ ॥—यञ् इत्येकः प्रत्याहारः ।

घ ढ ध ष् ॥ ९ ॥—झष्, भष् इत्येतौ द्वौ प्रत्याहारौ ।

ज ब ग ड द श् ॥ १० ॥—अश्, हश्, वश्, झश्, जश् बश् इत्येते षट् प्रत्याहाराः ।

ख फ छ ठ थ च ट त व् ॥ ११ ॥—छव् इत्येकः प्रत्याहारः ।

क प य् ॥ १२ ॥—यय्, मय्, झय्, खय् इत्येते चत्वारः प्रत्याहाराः ।

श ष स र् ॥ १३ ॥—यर्, झर्, खर्, चर्, शर् इत्येते पञ्च प्रत्याहाराः ।

ह ल् ॥ १४ ॥—अल्, हल्, वल्, रल्, झल्, शल् इत्येते षट् प्रत्याहाराः ।

## प्रत्याहारपरिभाषा

प्रत्याह्रियन्ते आक्षिप्यन्ते वर्णा अनेनेति प्रत्याहारः ।

## प्रतिप्रत्याहारनिविष्टवर्णानां सूची

( १ ) अण्—अ, इ, उ । इति त्रयो वर्णाः ।

( २ ) अक्—अ, इ, उ, ऋ ऌ। इति पञ्च वर्णाः।
( ३ ) इक्—इ, उ, ऋ, ऌ। इति चत्वारो वर्णाः।
( ४ ) उक्—उ, ऋ, ऌ। इति त्रयो वर्णाः।
( ५ ) एङ्—ए, ओ। इति द्वौ वर्णौ।
( ६ ) अच्—अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। इत्येते नव वर्णाः।
( ७ ) इच्—इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। इत्येते अष्ट वर्णाः।
( ८ ) एच्—ए, ओ, ऐ, औ। इत्येते चत्वारो वर्णाः।
( ९ ) ऐच्—ऐ, औ। इत्येतौ द्वौ वर्णौ।
( १० ) अट्—अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र। इत्येते त्रयोदश वर्णाः।
( ११ ) अण्—अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल। इत्येते चतुर्दश वर्णाः।
( १२ ) इण्—इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल। इत्येते त्रयोदश वर्णाः।
( १३ ) यण्—य, व, र, ल। इत्येते चत्वारो वर्णाः।
( १४ ) अम्—अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न। इत्येते एकोनविंशति वर्णाः।
( १५ ) यम्—य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न। इत्येते नव वर्णा।
( १६ ) ङम्—ङ, ण, न। इत्येते त्रयो वर्णाः।
( १७ ) यञ्—य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ। इत्येते एकादश वर्णाः।
( १८ ) झष्—झ, भ, घ, ढ, ध। इत्येते पञ्च वर्णा।
( १९ ) भष्—भ, घ, ढ, ध। इत्येते चत्वारो वर्णाः।
( २० ) अश्—अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, द। इत्येते अष्टाविंशति वर्णाः
( २१ ) हश्—ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द। इत्येते विंशति वर्णाः।
( २२ ) वश्—व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द। इत्येते अष्टादश वर्णाः।

(२३) झश्—झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द । इत्येते दश वर्णाः ।

(२४) जश्—ज, ब, ग, ड, द । इत्येते पञ्च वर्णाः ।

(२५) बश्—ब, ग, ड, द । इत्येते चत्वारो वर्णाः ।

(२६) छव्—छ, ठ, थ, च, ट, त । इत्येते षड् वर्णाः ।

(२७) यय्—य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प । इत्येते एकोनत्रिंशद् वर्णाः ।

(२८) मय्—म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प । इत्येते चतुर्विंशति वर्णाः ।

(२९) झय्—झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प । इत्येते विंशति वर्णाः ।

(३०) खय्—ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प । इत्येते दश वर्णाः ।

(३१) यर्—य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स । इत्येते द्वात्रिंशति वर्णाः ।

(३२) झर्—झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स । इत्येते त्रयोविंशति वर्णाः ।

(३३) खर्—ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स । इत्येते त्रयोदश वर्णाः ।

(३४) चर्—च, ट, त, क, प, श, ष, स । इत्येते अष्ट वर्णाः ।

(३५) शर्—श, ष, स । इत्येते त्रयो वर्णाः ।

(३६) अल्—अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह । इत्येते त्रिचत्वारिंशद् वर्णाः ।

(३७) हल्—ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह । इत्येते चतुस्त्रिंशद् वर्णाः ।

(३८) वल्—व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह । इत्येते द्वात्रिंशति वर्णाः ।

( ३९ ) रल्—र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। इत्येते एकत्रिंशद् वर्णाः।

( ४० ) झल्—झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह। इत्येते चतुर्विंशतिवर्णाः।

( ४१ ) शल्—श, ष, स, ह। इत्येते चत्वारो वर्णाः।

( ४२ ) भट्टोजिदीक्षित-प्रभृतयो नव्याश्च 'लण्' सूत्रस्थम् 'अकारम्' इतं मन्यन्ते तेन 'र' इत्यपरः प्रत्याहारः स्वीक्रियते। रप्रत्याहारे ( र, ल ) वर्णौ भवतः।

( ४३ ) प्राचीनास्तु 'ञमन्ताड्डः' इत्यौणादिक सूत्रेण 'ञम्' इत्यन्यमपि प्रत्याहारं स्वीकुर्वन्ति। अस्मिन्प्रत्याहारे ( ञ, म, ङ, ण, न ) इति पञ्च वर्णाः भवन्ति।

तस्मात् प्रत्याहाराणां संख्या त्रिचत्वारिंशत् सञ्जाता। अन्येऽपि बहवः प्रत्याहाराः भवितुमर्हन्ति परन्तु न ते गण्यन्ते प्रयोजनाऽभावात्, सम्प्रति समुपलब्ध लौकिकवैदिकव्याकरणयोरेतैरेव प्रत्याहारैर्गतार्थत्वाच्च। तस्मात् त्रिचत्वारिंशदेव प्रत्याहारा इति सिद्धम्। तदत्र संग्रहः—

एकस्माङ्ञणवटा द्वाभ्यां षः, त्रिभ्य एव कणमाः स्युः।
ज्ञेयौ चयौ चतुर्भ्यो रः पञ्चभ्यः शलौ षड्भ्यः॥ इति॥

ङ्, ञ्, ण्, व्, ट्, इत्संज्ञकाः वर्णाः एकमेकम्प्रत्याहारं वर्तयन्ति। यथाः—
अइउण्—इति सूत्रे, इत्सञ्ज्ञकः 'ण्' वर्णः 'अण्' इत्येकम्प्रत्याहारं वर्तयति।
एओङ्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'ङ्' वर्णः 'एङ्' इत्येकम्प्रत्याहारं वर्तयति।
हयवरट्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'ट्' वर्णः 'अट्' इत्येकम्प्रत्याहारं वर्तयति।
झभञ्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'ञ्' वर्णः 'यञ्' इत्येकम्प्रत्यहारं वर्तयति।
खफछठथचटतव्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'व' वर्णः 'छव्' इत्येकम्प्रत्याहारं वर्तयति।

'ष्' इत्सञ्ज्ञकः वर्णः द्वौ प्रत्याहारौ वर्तयति। यथा—घढधष्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'ष्' वर्णः झष्, भष् इति द्वौ प्रत्याहारौ वर्तयति।

क्, ण्, म्, इत्सञ्ज्ञकाः वर्णाः त्रीन् प्रत्याहारान् वर्तयन्ति। यथा—ऋ लृ क्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'क्' वर्णः 'अक्', 'इक्', 'उक्' इति त्रीन् प्रत्याहारान्

वर्तयति। लण्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'ण्' वर्णः त्रीन्प्रत्याहारान् वर्तयति— 'अण्', 'इण्' 'यण्'। ञमङणनम्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'म्' वर्णः 'अम्', 'यम्', 'ङम्' इति त्रीन् प्रत्याहारान् वर्तयति।

'च्' 'य्' इत्संञ्ज्ञकौ वर्णौ चतुरश्चतुरः प्रत्याहारान् वर्तयतः। यथा— ऐऔच्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'च्' वर्णः 'अच्', 'इच्', 'एच्' 'ऐच्', इति चतुरः प्रत्याहारान् वर्तयति। कपय्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'य्' वर्णः 'यय्', 'मय्', 'झय्', 'खय्' इति चतुरः प्रत्याहारान्वर्तयति।

'र्' इत्सञ्ज्ञकः वर्णः पञ्च प्रत्याहारान् वर्तयति। यथा—शषसर्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'र्' वर्णः 'यर्', 'झर्', 'खर्', 'चर्' 'शर्' प्रत्याहारान् वर्तयति।

'श्' 'ल्' इत्सञ्ज्ञकौ वर्णौ षट् षट् प्रत्याहारान् वर्तयतः। यथा—जबगडदश्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'श्' वर्णः 'अश्', 'हश्', 'वश्', 'झश्', 'जश', बश्', इति षट् प्रत्याहारान् वर्तयति। हल्—इति सूत्रे इत्सञ्ज्ञकः 'ल्' वर्णं 'अल्', 'हल्', 'वल्' 'रल्' 'झल्', 'शल्' इत्येतान् षट् प्रत्याहारान् वर्तयति।

## सूत्रपरिभाषा

( १ ) स्वल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्।
अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥

( २ ) लघूनि सूचितार्थानि स्वल्पाक्षरपदानि च।
सर्वतः सारभूतानि सूत्राण्याहुर्मनीषिणः॥

## कतिविधानि सूत्राणि

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥

१. संज्ञासूत्रम् :—यथा—वृद्धिरादैच्॥ ( अष्टा० १।१।१॥ )
२. परिभाषासूत्रम् :—यथा—इको गुणवृद्धी॥ ( अष्टा० १।१।३॥ )
३. विधिसूत्रम् :—यथा—कर्मण्यम्॥ ( अष्टा० ३।२।१॥ )
४. नियमसूत्रम् :—यथा—पतिः समास एव॥ ( अष्टा० १।४।८॥ )
५. अतिदेशसूत्रम् :—यथा—स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ॥ (अष्टा० १।१।५६॥)
६. अधिकारसूत्रम् :—यथा—अङ्गस्य॥ ( अष्टा० ६।४।१॥ )

अ इ उ ण्—अ इ उ ण्, ऋ लृ क्, ए ओ ङ् प्रभृतिषु प्रत्याहारसूत्रेषु संहितायाः अविवक्षितत्वात् न यणादिसन्धिकार्यम्। सौत्रत्वादेतेभ्यो न विभक्त्युत्पत्तिः। आनुपूर्वीसम्पादनमात्रप्रयोजनकत्वात् 'बहुलम्' इत्यनुवर्तनाच्च 'वर्णात् कारः' इत्यनेन न 'कार'प्रत्ययः।

ह य व र ट्, ह ल्—ह कारादीनां अकारः सुखेनोच्चारणार्थः पठितः। अन्यथा 'ह् य् व् र्' इत्येवं क्लिष्टोच्चारणापत्तेः। ननु—'ह य व र ट्' इति सूत्रस्थहकारेणैव प्रत्याहारप्रयोजने सिद्धे 'ह ल्' इति सूत्रे पुनर्हकार ग्रहणं किमर्थमित्याह—

'हकारो द्विरुपात्तोऽयमटि शल्यपि वाञ्छता।
अर्हेणाघुक्षदित्यत्र द्वयं सिद्धं भविष्यति॥'

अर्थात् अट्प्रत्याहारे हकारग्रहणार्थम्, शल्प्रत्याहारेऽपि हकारस्य ग्रहणार्थं हकारो द्विधा पठितः। अटि हकारग्रहणात् 'अर्हेण' इत्यत्र 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' (अष्टा० ८।४।२॥) इति सूत्रेण नकारस्य णत्वम्। शलि हकारग्रहणात् 'अघुक्षत्' इत्यत्र 'शल इगुपधादनिटः क्सः' (अष्टा० ३।१।४५) इति सूत्रेण च्लेः क्स आदेशः।

ल ण्—लण्मध्ये त्वित्संज्ञकः। उपरि व्याख्यातमस्माभिर्यत् सर्वेषु प्रत्याहारसूत्रेषु व्यञ्जनस्थ अकार उच्चारणार्थः। परन्तु 'लण्' सूत्रे लकारस्थ अकार इत्संज्ञकः। तेन 'उरण्रपरः' (अष्टा० १।१।५१॥) इति सूत्रस्थ 'र' प्रत्याहारसिद्धिः। 'र' प्रत्याहारे 'र' 'ल' इत्येतयोर्वर्णयोर्ग्रहणं भवति।

## हलन्त्यम् ॥१।३।३॥

उपदेशावस्थायां यद् अन्त्यं हल् तदित्संज्ञं स्यात्।

उपदेशपरिभाषा—उपदेशः आद्योच्चारणम्। अद्यानां शिवपाणिनिकात्यायनपतञ्जलिप्रभृतीनां मुनीनामाद्यमुच्चारणमुपदेशः। यद्वा आद्यश्च तदुच्चारणञ्चेत्याद्योच्चारणम् प्रथममुच्चारणमित्यर्थः। शिवपाणिनिप्रभृतीनामाद्यमुच्चारणमुपदेशः। केचित्तु—

'धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम्।
आगमप्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥' इत्याहुः।

## अदर्शनं लोपः ॥ १।१।६०॥

प्रसक्तस्यादर्शनं लोपसंज्ञं स्यात्। शास्त्रतोऽर्थतश्च प्रसक्तस्य प्राप्तोच्चारणस्येत्यर्थः। दृशेर्ज्ञानसामान्यार्थकत्वात्तस्य च निषेधाऽसम्भवादुच्चारणसत्ताया एव निषेध इति भावः। यथा अक् इत्यत्र अ इ उ ऋ ऌ इत्येते वर्णाः गृह्यन्ते, णकारककारयोग्रहणं न भवति, तस्य लोपत्वात्। यस्य यस्य इत् संज्ञा तस्य तस्य लोप इति नियमात्। एवं सर्वत्र व्याकरणशास्त्रे बोध्यम्।

## तस्य लोपः ॥१।३।९॥

तस्य इत्संज्ञकस्य लोपः स्यात् ।

णादयोऽणाद्यर्थाः—अ इ उ ण्, ऋ ऌ क्, ए ओ ङ्, ऐ औ च् प्रभृतिषु प्रत्याहारसूत्रेषु णादयः—ण्, क्, ङ्, च् प्रभृतय इत् संज्ञकाः वर्णाः अणादिप्रत्याहारसाधकाः । अण् आदिर्येषां तेऽणादयस्तेऽर्थाः प्रयोजनं येषान्तेऽणाद्यर्थाः ।

## आदिरन्त्येन सहेता ॥१।१।७१॥

अन्त्येन इता सह आदिर्मध्यगानां वर्णानां स्वस्य च रूपस्य संज्ञा स्यात् । अन्ते भवः अन्त्यः । तेन इता सहोच्चार्यमाण आदिः अण् अच् इत्यादि रूपः संज्ञेत्यर्थः । यस्मात् पूर्वं नास्ति परश्चास्ति स आदिः । यस्मात् परं नास्ति पूर्वश्चास्ति स अन्त्यः । इहाद्यन्ताभ्यामवयवत्वेन बोधकाभ्यां शब्दाभ्यां मध्यगा आक्षिप्यन्ते । अतस्तेषां संज्ञेति लभ्यते । 'स्वं रूपम्' इति पूर्वसूत्रात् 'स्वं रूपं 'शब्दस्याऽशब्दसंज्ञा' इत्येतस्मात् अनुवर्तते । उदाहरणानि तावत्—अण् इति अ इ उ वर्णानां संज्ञा । एवमच्, हल्, अल् इत्यादिष्वपि बोध्यम् ।

## ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः ॥१।२।२७॥

उश्च ऊश्च ऊ३श्च वः । वां काल इव कालो अस्य सोऽच् क्रमाद् ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञको भवति । ह्रस्वदीर्घप्लुतः इत्यत्र समाहार-द्वन्द्व-समासः । समाहार द्वन्द्वसमस्तः शब्दः 'स [२]नपुंसकम्' इति सूत्रेण नपुंसकलिङ्गो भवति । तेन 'ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतम्' इत्यनेन भाव्यम् । किन्त्वत्र पुंल्लिङ्गता दृश्यते । तस्मात् प्रयोगोऽयमार्षः, सूत्राणामार्षत्वात् । एकमात्रिकद्विमात्रिकत्रिमात्रिकोकाराणामुच्चारणकालसदृशोच्चारणकालविशिष्टोऽच् क्रमशो ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत-संज्ञको भवतीति सूत्रार्थोऽवधेयः । वां काल इत्यत्र वः इति 'उ' शब्दस्य प्रथमाबहुवचनम् । वाम् इति षष्ठीबहुवचनम् । वां काल इव कालो यस्येति फलितार्थः । एकमात्रात्मकोच्चारणकालसदृशोच्चारणकालिको योऽच् स ह्रस्वसंज्ञको भवति । एवं द्विमात्रात्मकोकारोच्चारणकालसदृश उच्चारणकालो यस्याचः स दीर्घसंज्ञको भवति । एवं त्रिमात्रात्मकोकारोच्चारणकालसदृशोच्चारणकालिको योऽच् सः प्लुतसंज्ञको भवति ।

ननु अकारः प्रथमो वर्णस्तर्हि ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः इति कथमुक्तम्, कथन्नोक्तम् आकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुत इति चेदुच्यते । एकदा पाणिनिर्ब्राह्मे मुहूर्ते

---

१. पाणिनि—अष्टाध्यायी, १।१।६८॥

२. तदेव, २।४।१७ ॥

ह्रस्वदीर्घप्लुतविषयं विचारयन् सूत्रं प्रणयितुमियेष, तस्मिन्नेव काले सहसा कश्चित् कुक्कुटः स्वाव्यक्तं ध्वनिं व्याजहार। तत्र उकारं ध्वनिं श्रुत्वा, उकारमेव एकद्वित्रिमात्रिकध्वनिमानकं मत्वा स 'ऊकालोऽज्' इति सूत्रं प्रणिनाय।

स प्रत्येकमुदात्तादिभेदेन त्रिधा। सः ( लब्धह्रस्वादिसंज्ञकः ) ह्रस्वः, दीर्घः, प्लुतश्च अच् प्रत्येकमुदात्तादिभेदेन—उदात्तत्वेन, अनुदात्तत्वेन, स्वरितत्वेन च धर्मविशेषेण त्रिधा त्रिभिः प्रकारैर्वर्तत इत्यर्थो बोध्यः।

## उच्चैरुदात्तः ॥१।२।२९॥

ताल्वादिषु सभागेषु स्थानेषूर्ध्वभागे निष्पन्नोऽजुदात्तसंज्ञको भवति। अत्र उच्चैः शब्दः अधिकरणशक्तिप्रधानः ऊर्ध्वभागे इत्यर्थे वर्तते। अत्र 'ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः' इति सूत्राद् अजित्यनुवर्तते। सभागेष्विति। अत्र ताल्वादीनां स्थानानां सावयवत्वकथनं उदर्ध्वभागे इत्यस्योपपादनार्थम्। तेषामखण्डत्वे ऊर्ध्वभागे इत्यनुपपत्तेः।

तालु आदि स्थानों के ऊर्ध्व भाग से उच्चारित किये जाने वाले अच् की 'उदात्त' संज्ञा होती है।

## नीचैरनुदात्तः ॥१।२।३०॥

ताल्वादिषु सभागेषु स्थानेष्वधोभागे निष्पन्नः—उच्चार्यमाणो योऽच् सोऽनुदात्तसंज्ञको भवति। अत्र 'नीचैः' शब्दः अधिकरणशक्तिप्रधानः, अधोभागे इत्यर्थे वर्तते।

तालु आदि स्थानों के अधोभाग ( निम्न भाग ) से उच्चारित किये जाने वाले अच् की 'अनुदात्त' संज्ञा होती है।

## समाहारः स्वरितः ॥१।२।३१॥

उदात्तानुदात्तत्वे वर्णधर्मौ समाह्रियेते यस्मिन् सोऽच् स्वरितसंज्ञको भवति। पूर्वसूत्राभ्यामत्र उदात्तानुदात्तपदे अनुवृत्ते व्याख्यानात् धर्मप्रधाने षष्ठ्यन्ततया च विपरिणम्येते। यस्मिन् समाहरणं स समाहारः। अधिकरणे घञ्। ततश्च उदात्तत्वानुदात्तत्वयोर्धर्मयोर्यस्मिन्नचि मेलनं सोऽच् स्वरितसंज्ञकः इत्यर्थः। स नवविधोऽपि प्रत्येकमनुनासिकाननुनासिकत्वाभ्यां द्विधा। उदात्तह्रस्वः, अनुदात्तह्रस्वः, स्वरितह्रस्व, उदात्तदीर्घः, अनुदात्तदीर्घः, स्वरितदीर्घः, उदात्तप्लुतः, अनुदात्तप्लुतः, स्वरितप्लुतः इति रीत्या य एकैकः अच् नवविधः स्थितः स प्रत्येकं सानुनासिकत्वेन निरनुनासिकत्वेन च द्विधा द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां वर्तत इत्यर्थः।

उदात्त और अनुदात्त जिस स्वर में सम्मिलित हों उसे स्वरित कहते हैं।

**मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ॥ १।१।८ ॥**

उच्यतेऽसौ वचनः। अत्र कर्मणि ल्युट्। मुखसहिता नासिका मुखनासिका, तया य उच्चार्यते वर्णः सोऽनुनासिक संज्ञको भवति। तदित्थम्—अ इ उ ऋ एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादशभेदाः। ऌवर्णस्य द्वादशभेदाः तस्य दीर्घाभावात्। एचाम्—ए ओ ऐ औ एषां वर्णानामपि द्वादशभेदाः, तेषां ह्रस्वाभावात्।

मुख और नासिका ( उभय ) से जिस वर्ण की उच्चारण हो वह अनुनासिक संज्ञक वर्ण कहलाता है।

**ध्वन्यात्मकस्वरभेदबोधकचक्रम्**

| अक्षराणि | अ इ उ ऋ ऌ | अ इ उ ऋ ए ओ ऐ औ | अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ |
|---|---|---|---|
| भेदाः | १. ह्रस्वोदात्तानुनासिकः | ७. दीर्घोदात्तानुनासिकः | १३. प्लुतोदात्तानुनासिकः |
| | २. ह्रस्वोदात्ताननुनासिकः | ७. दीर्घोदात्ताननुनासिकः | १४. प्लुतोदात्ताननुनासिकः |
| | ३. ह्रस्वानुदात्तानुनासिकः | ९. दीर्घानुदात्ताननुनासिकः | १५. प्लुतानुदात्तानुनासिकः |
| | ४. ह्रस्वानुदात्ताननुनासिकः | १०. दीर्घानुदात्ताननुनासिकः | १६. प्लुतानुदात्ताननुनासिकः |
| | ५. ह्रस्वस्वरितानुनासिकः | ११. दीर्घस्वरितानुनासिकः | १७. प्लुतस्वरितानुनासिकः |
| | ६. ह्रस्वस्वरिताननुनासिकः | १२. दीर्घस्वरिताननुनासिकः | १८. प्लुतस्वरिताननुनासिकः |

**तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ॥ १।१।९ ॥**

आस्ये–मुखे भवमास्यम्–ताल्वादिस्थानम्। 'शरीरावयवाद्यत्' ( अष्टा० ५।१।६ ) इति सूत्रेण भवार्थे यत् प्रत्ययः। प्रकृष्टो यत्नः प्रयत्नः। आस्यं च प्रयत्नश्च आस्यप्रयत्नौ, तुल्यौ आस्यप्रयत्नौ यस्य वर्णजालस्य तत् तुल्यास्यप्रयत्नम्। ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तरप्रयत्नश्चेत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णसंज्ञं स्यादिति सूत्रार्थः।

जिन वर्णों का तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न एक हो वह परस्पर सवर्ण संज्ञावाले होते हैं।

**वा०—ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम् ॥**

ऋ-लृ वर्ण की ( भिन्न स्थान होने पर भी ) परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है ऐसा कहना चाहिए।

**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।**

अ—अकार, कु—कवर्ग ( क, ख, ग, घ, ङ ), ह और विसर्ग ( : ) का उच्चारणस्थान कण्ठ है—अतः इनको कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

**इचुयशानां तालु।**

इ—इकार, चु—चवर्ग ( च, छ, ज, झ, ञ ), य और श का उच्चारण-स्थान तालु है—अतः इनको तालव्य वर्ण कहते हैं।

**ऋटुरषाणां मूर्द्धा।**

ऋ—ऋकार, टु—टवर्ग ( ट, ठ, ड, ढ, ण ), र और ष का उच्चारण-स्थान 'मूर्धा' है—अतः इनको मूर्धन्य वर्ण कहते हैं।

**लृतुलसानां दन्ताः।**

लृ—लृकार, तु—तवर्ग ( त, थ, द, ध, न ), ल और स का उच्चारणस्थान 'दन्त' है—अतः इनको 'दन्त्य' वर्ण कहते हैं।

**उपूपध्मानीयानामोष्ठौ।**

उ—उकार, पु—पवर्ग ( प, फ, ब, भ, म ) और उपध्मानीय ( ᳵप ᳵफ) का उच्चारणस्थान 'ओष्ठ' है—अतः इनको ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

**ञमङणनानां नासिका च।**

'ञ म ङ ण न' का उच्चारण स्थान नासिका तथा कण्ठ तालु मूर्धा दन्त ओष्ठ भी हैं—अतः इनको नासिक्य तथा कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य वर्ण भी कहते हैं।

**एदैतोः कण्ठतालु।**

एकार, ऐकार का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु हैं—अतः इनको कण्ठ्यतालव्य कहते हैं।

**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।**

ओकार, औकार का उच्चारण कण्ठ और ओष्ठ है—अतः इनको 'कण्ठयो-ष्ठ्य' वर्ण कहते हैं।

वकारस्य दन्तोष्ठम् ।

वकार का उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ है—अतः इसको 'दन्त्योष्ठ्य' वर्ण कहते हैं ।

जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ।

जिह्वामूलीय ( ᳵक ᳵख ) का उच्चारण स्थान जीभ का मूल ( जड़ भाग ) है—अतः इनको जिह्वामूलीय कहते हैं ।

नासिकाऽनुस्वारस्य ।

अनुस्वार ( ) का उच्चारण स्थान नासिका है । अतः इसको नासिक्य कहते हैं ।

यत्नो द्विधा । आभ्यन्तरो बाह्यश्च । आद्यः पञ्चधा । स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्-विवृतविवृतसंवृतभेदात् ।

यत्नानामाभ्यन्तरत्वं बाह्यत्वं च वर्णोत्पत्तेः प्रागूर्ध्वंभावित्वम्—इति पाणि-नीयशिक्षादिग्रन्थेषु स्पष्टम् । यत्नशब्दोऽत्र प्रयत्नपरः ।

यत्न—प्रयत्न दो प्रकार का होता है—आभ्यन्तर और बाह्य । पहला—आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का है—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत इस भेद से ।

प्रकृष्टो यत्नः प्रयत्नः अर्थात् वर्णोच्चारण के पूर्व कण्ठादि स्थानों में जो यत्न करना पड़ता है, इसी यत्न को 'आभ्यन्तर प्रयत्न' कहते हैं । इसका अनुभव उच्चारण करने वाले को ही होता है ।

दूसरा प्रयत्न मुख से वर्ण निकलते समय होता है । इसका अनुभव सुनने वाले को भी होता है, अतः वह 'बाह्य प्रयत्न' कहा जाता है । इसका उपयोग सवर्ण संज्ञा में नहीं होता, किन्तु आन्तरतम्य परीक्षा अर्थात् कई वर्णों में परस्पर अत्यन्त समानता का अन्वेषण करने के समय में इसकी आवश्यकता पड़ती है ।

तत्र स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम् ।

इन पाँचों में से स्पृष्ट प्रयत्न स्पर्शों का अर्थात् 'क' से 'म' पर्यन्त वर्णों का है ।

ईषत्स्पृष्टमन्तःस्थानाम् ।

ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न अन्तःस्थों का अर्थात् य, र, ल, व वर्णों का है ।

ईषद्विवृतमूष्मणाम् ।

ईषद्विवृत प्रयत्न ऊष्मों का अर्थात् श ष स ह वर्णों का है ।

विवृतं स्वराणाम् ।

विवृत प्रयत्न स्वरों का अर्थात् अच् का है।

ह्रस्वमवर्णं प्रयोगे संवृतम्, प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव।

शास्त्रीय प्रक्रियादिभिः परिनिष्ठितानां रामः कृष्णः इत्यादिशब्दानां प्रयोगे क्रियमाण एव ह्रस्वस्याऽवर्णस्य संवृतत्वमित्यर्थः। ननु दण्ड+आढकम् इत्यवस्थायां संवृतस्य अकारस्य विवृतेनाऽकारेण सह प्रयत्नभेदात् सावर्ण्यं न स्यादिति चेन्न, अष्टाध्याय्या अन्तिमेन 'अ अ इति' ( अष्टा० ८।४।६८ ) इत्यनेन सूत्रेण विवृतस्याऽकारस्य संवृतविधानेऽपि 'पूर्वत्रासिद्धम्' ( अष्टा० ८।२।१।। ) इत्यनेन शास्त्रेण संवृतस्यासिद्धत्वात् विवृतत्वेन सवर्णसंज्ञायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' ( अष्टा० ६।१।१०१ ) इत्यनेन दीर्घे सति दोषाभावात्, अत आह मूले—प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव।

संवृत प्रयत्न ह्रस्व अकार का प्रयोगावस्था में परिनिष्ठित सिद्ध रूप में, होता है, किन्तु प्रक्रियादशा में, विवृत ही रहता है।

**बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा। विवारः संवारः श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो महाप्राण उदात्तोऽनुदात्तः स्वरितश्चेति।**

बाह्य प्रयत्न तो ग्यारह प्रकार के होते हैं—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित—इस भेद से।

**खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च।**

खर्—ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स इन वर्णों का विवार, श्वास और अघोष प्रयत्न है।

**हशः संवाराः नादाः घोषाश्च।**

हश्—ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द इन वर्णों का संवार, नाद और घोष प्रयत्न है।

**वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः।**

वर्गों के प्रथम ( क च ट त प ), तृतीय ( ग, ज, ड, द, ब ), पञ्चम ( ङ, ञ, ण, न, म ) तथा यण् ( य, व, र, ल ) का 'अल्पप्राण' प्रयत्न है।

**वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः।**

वर्गों के द्वितीय ( ख, छ, ठ, थ, फ ), चतुर्थ ( घ, झ, ढ, ध, भ ) तथा शल्—श ष स ह वर्णों का 'महाप्राण' प्रयत्न है।

**कादयो मावसानाः स्पर्शाः।**

'क' से 'म' पर्यन्त ( कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग ) वर्ण 'स्पर्श' कह-

लाते हैं। जीभ के अग्र ( चोटी ), उपाग्र ( अग्र के समीपस्थ प्रदेश ), मध्य ( बीच ) और मूल ( आदि ) भाग द्वारा कंठ, तालु प्रभृति स्थानों को स्पर्श करके कवर्गादि वर्णों का उच्चारण होता है, अतः इनका नाम 'स्पर्श' वर्ण है।

यणोऽन्तःस्थाः ।

यण्—य, व, र, ल वर्ण 'अन्तःस्थ' कहलाते हैं। अन्तःस्थ का अर्थ है बीचवाला। 'य व र ल' वर्ण स्वर और व्यञ्जन के बीच के हैं, अतः ये 'अन्तःस्थ' कहलाते हैं।

शषसहा ऊष्माणः ।

श ष स ह 'ऊष्म' वर्ण कहलाते हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में गर्म वायु का प्राधान्य हो, उन्हें 'ऊष्म' वर्ण कहते हैं।

अचः स्वराः ।

अच्—अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं।

ᳵक ᳵख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः ।

ᳵक ᳵख—यहाँ पर ककार, खकार से पूर्व विसर्गार्ध ( ᳵ ) के समान जो ध्वनि है, वह 'जिह्वामूलीय' है।

ᳶप ᳶफ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उपध्मानीयः ।

ᳶप ᳶफ—यहाँ पर पकार, फकार से पूर्व विसर्गार्ध के समान जो ध्वनि है वह 'उपध्मानीय' है।

अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ ।

अं अः—यहाँ पर अकार से पर में जो ध्वनि है, वह क्रम से 'अनुस्वार', 'विसर्ग' कहलाती है।

## अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः ॥ १।१।६९ ॥

अत्र अण् उदित् सवर्णस्य च अप्रत्ययः इति पदच्छेदः। चकारः भिन्नक्रमः तत अप्रत्ययः अण् उदित् च सवर्णस्य इति क्रमो भवति। अत्र प्रत्ययपदेन न प्रत्ययमात्रस्य ग्रहणम्, किन्तु प्रतीयते विधीयते इति व्युत्पत्त्या आगमादेशानामपि ग्रहणम्। तेन अण् अविधीयमानः सवर्णबोधकः, उदित् च विधीयमानोऽपि सवर्णबोधको भवतीत्यर्थः। तेन 'ऋत उत्' इत्यादौ विधीयमाने उति न सवर्णग्रहणम्। 'कुहोश्चुः' 'चोः कुः' इत्यादौ विधीयमानेऽपि सवर्णग्रहणमिति भावः। अस्मिन् सूत्रे अण् परेण णकारेण गृह्यते।

'पूर्वेणैवाण्ग्रहाः सर्वे परेणैवेण्ग्रहा मताः।
ऋतेऽणुदित् सवर्णस्येत्येतदेकं परेण तु॥'

इति भाष्यकारोक्तेः । कु चु टु तु पु एते उदितः । तदेवम् 'अस्य च्वौ' इत्यत्र 'अ' इत्यष्टादशानां ग्रहणम्, 'त्यदादीनामः' इत्यत्र केवल ह्रस्वोऽकार एव गृह्यते । तथेकारोकारौ । ऋकारस्त्रिंशतः । एवं ऌकारोऽपि । एचो द्वादशानां बोधकाः । तदेवम् ए, ओ, ऐ, औ इति प्रत्येकं द्वादश इति भावः । ननु स्थानप्रयत्नयोस्तुल्यत्वात् सावर्ण्येन ए ऐकारस्य, ओ औकारस्य बोधकस्तेन चतुर्विंशतेः एकारः एवमोकारः स्यादिति चेद्, न । 'ऐ औ च्' इति पृथक्सूत्रत्वेन तयोः सावर्ण्याभावज्ञापकत्वात् । अनुनासिकाऽननुनासिकभेदेन यवला द्विधा । तेनाऽननुनासिकास्ते द्वयोर्द्वयोः संज्ञा ।

**परः सन्निकर्षः संहिता ।। १।४।१०९ ।।**

परः सन्निकर्षः—वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहिता संज्ञा स्यात् ।

**हलोऽनन्तराः संयोगः ।। १।१।७ ।।**

अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसंज्ञकाः भवन्ति ।

**सुप्तिङन्तं पदम् ।। १।४।१४ ।।**

'स्वौजसमौट्' इत्यादि सूत्रे सु इत्यारभ्य सुपः पकारेण प्रत्याहारः । न तु सप्तमी बहुवचनस्यैवात्र ग्रहणम्, व्याख्यानात् । 'तिप्तस्झि' इत्यादि सूत्रे ति इत्यारभ्य महिङो ङकारेण प्रत्याहारः । सुप् च तिङ् च सुप्तिङौ, तावन्ते यस्य तत् सुप्तिङन्तम् । सुबन्तं तिङन्तं च शब्दरूपं पदसंज्ञं भवति ।

---

## अथ अच्सन्धिप्रकरणम्

सुद्ध्युपास्यः—ध्यै चिन्तायाम् इति धातोः 'ध्यायतेः सम्प्रसारणञ्च' इति क्विपि यकारस्य सम्प्रसारणे इकारे पूर्वरूपे 'हलश्च' इति दीर्घे धीशब्दो निष्पन्नः । शोभना धीर्येषान्ते सुधियः । सुधीभिरुपास्यः सुद्ध्युपास्यः । अत्र सुधी + उपास्य इत्यवस्थायाम् 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' ( १।१।६६ ) इति सूत्रेण सप्तमीनिर्देशेन विधीयमानं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य पूर्वस्येति नियमविधानात् 'स्थानेऽन्तरतमः' इति सूत्रेण प्रसङ्गे सति सदृशतामाऽऽदेशविधाननियमात् 'इको यणचि' इति सूत्रेण ईकारस्य 'य्' यणादेशे सुध् + य् + उपास्य इति जाते 'अनचि च' इति सूत्रेण धकारस्य विकल्पेन द्वित्वे सुध् + ध् + य् + उपास्य इति

जाते 'झलां जश् झशि' इति सूत्रेण पूर्वधकारस्य दकारे सुद्+ध्+य्+उपास्य इति जाते 'अलोऽन्त्यस्य' इति सूत्रसहकारेण 'संयोगान्तस्य लोपः' इति सूत्रेण यकारस्य लोपे प्राप्ते 'यणः प्रतिषेधो वाच्यः' इति वार्तिकेन यलोपनिषेधे सति 'सुद्ध्युपास्यः' इति सिद्धम् ।

**तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ॥ १।१।६६ ॥**

तस्मिन्निति सूत्रगतसप्तम्यन्तस्यानुकरणम् । निर् इत्यस्य नैरन्तर्यमित्यर्थः । दिशिरत्रोच्चारणार्थकः । तेनाऽयमर्थः—सप्तमीनिर्देशेन विधीयमानं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य पूर्वस्य ज्ञेयम् । अर्थात् अचि यण् भवतीत्युक्ते व्यवहितेऽव्यवहितेऽप्यचि प्राप्तेऽव्यवहित एवेति नियम्यते ।

**स्थानेऽन्तरतमः ॥ १।१।५० ॥**

स्थाने प्रसङ्गे सति सदृशतम आदेशो भवति । अर्थात् एकस्य स्थानिनः स्थाने एकस्मिन्नेव समयेऽनेकेषामादेशानाम्प्राप्तौ सत्यां तेषु सर्वतोभावेन स्थानिना सदृशतमः स एवाऽऽदेशः स्यात् ।

**अलोऽन्त्यस्य ॥ १।१।५२ ॥**

षष्ठीनिर्दिष्टोऽन्त्यस्याल आदेशः स्यात् । षष्ठीनिर्देशेन विधीयमानं यत् कार्यं तदन्त्यस्याऽलः स्थाने भवति इत्यर्थः ।

मद्ध्वरिः—मधोः अरिः मद्ध्वरिः । मधुनामकदैत्यस्य अरिः शत्रुः श्रीकृष्ण इत्यर्थः । मधु+अरिः इत्यवस्थायाम् 'इको यणचि' इति सूत्रेण अजव्यवहितपूर्वत्वविशिष्ट इक् धकारोत्तरवर्ती 'उः' तस्य स्थाने 'स्थानेऽन्तरतमः' इति परिभाषया ( वकारस्य दन्त्यौष्ठ्यम्-उपूपध्मानीयानामोष्ठौ इत्युभयोः उकारवकारयोः स्थानसाम्यात् ) यण्—वकारादेशे मध्+व+अरिः इति जाते 'अनचि च' इत्यनेन द्वित्वे 'झलां जश् झशि' इत्यनेन पूर्वधकारस्य दकारे मद्+ध्+व्+अरिः 'संयोगान्तस्य लोपः' इति सूत्रेण वलोपे प्राप्ते 'यणः प्रतिषेधो वाच्यः' इति वार्तिकेन निषेधे 'मद्ध्वरिः' इति सिद्धम् ।

धात्रंशः—धातुः अंशः इति विग्रहे धातृ+अंशः इत्यवस्थायाम् 'इको यणचि' इति सूत्रेण यणि प्राप्ते 'स्थानेऽन्तरतमः' 'उरण्रपरः' इत्युभयसूत्रनियमात् ऋकारस्य 'र्' आदेशे 'संयोगान्तस्य लोपः' इति सूत्रेण रलोपे प्राप्ते 'यणः प्रतिषेधो वाच्यः' इति सूत्रेण निषेधे 'धात्रंशः' इति सिद्धम् ।

लाकृतिः—लुरिव आकृतिर्यस्य स इति विग्रहे लृ+आकृतिः इत्यवस्थायाम् 'इको यणचि' इति सूत्रेण यणि प्राप्ते 'स्थानेऽन्तरतमः' इति परिभाषया स्थानत

आन्तर्यात् 'ऌ' इत्यस्य स्थाने 'ल्' आदेशे 'संयोगान्तस्य ललोपः' इत्यनेन ललोपे प्राप्ते 'यणः प्रतिषेधो वाच्यः' इति वार्तिकेन निषेधे सति 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे 'लाकृतिः' इति सिद्धम् ।

हरये—हरि शब्दात् चतुर्थीविभक्तेरेकवचने 'ङे' प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'शेषो-घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इति गुणे हरे+ए इति जाते 'एचोऽय-वायावः' इत्यनेन एकारस्य अय् आदेशे—एच् प्रत्याहारघटको 'हरे' इत्यत्र रेफोत्तरवर्ती एकारः, तस्य स्थाने अय् आदेशे, अच् प्रत्याहारघटके एकारे परतः हरय्+ए 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे 'हरये' इति सिद्धम् ।

विष्णवे—विष्णु शब्दात् चतुर्थी विभक्तेरेकवचने 'ङे' प्रत्यये अनुबन्धलोपे, घित्वात् गुणे विष्णो+ए इत्यवस्थायाम् 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण अचि एकारे परतः 'विष्णो' अत्रस्थो य ओकारस्तस्य स्थाने अव् आदेशे विष्ण्+अव्+ए इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे 'विष्णवे' इति सिद्धम् ।

नायकः—णीञ् प्रापणे इत्यस्माद्धातोः ण्वुल् प्रत्यये, आदिवृद्धौ, अनुबन्ध-लोपे वोरक आदेशे नै+अकः इत्यवस्थायाम् 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण 'आय्' आदेशे न्+आय्+अकः इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे 'नायकः' इति सिद्धम् ।

पावकः—पूङ् पवने इत्यस्माद् धातोर्ण्वुल् प्रत्यये अनुबन्धलोपे आदिवृद्धौ, वोरक आदेशे पौ+अकः इत्यवस्थायाम् 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन सूत्रेण 'आव्' आदेशे प्+आव्+अकः इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे 'पावकः' इति सिद्धम् ।

गव्यम्—'उगवादिभ्यो यत्' इति सूत्रेण गो शब्दाद् यत् प्रत्यये गो+य इति जाते 'वान्तो यि प्रत्यये' इति सूत्रेण 'अव्' आदेशे स्वादिकार्ये 'गव्यम्' इति सिद्धम् ।

नाव्यम्—नावा तार्यमिति विग्रहे नौ शब्दाद् यत् प्रत्यये नौ+य इति जाते 'वान्तो यि प्रत्यये' इति सूत्रेण यकारादौ प्रत्यये परतः 'आव्' आदेशे स्वादि-कार्ये 'नाव्यम्' इति सिद्धम् ।

गव्यूतिः—गो+यूतिः इत्यवस्थायाम् 'अध्वपरिमाणे च' इति वार्तिकेन यूति शब्दे परे गो शब्दस्यस्य ओकारस्य 'अव्' आदेशे स्वादिकार्ये 'गव्यूतिः' इति सिद्धम् ।

लव्यम्—लूञ् छेदने इत्यस्माद् धातोः 'अचो यत्' इत्यनेन यत् प्रत्यये ऊकारस्य ओकारे गुणे लो+य इति जाते 'धातोस्तन्निमित्तस्यैव' इति सूत्र-नियमात् 'वान्तो यि प्रत्यये' इति सूत्रेण ओकारस्य धात्ववयवत्वात् यादिप्रत्यय-निमित्तकत्वाच्च वान्तादेशे ल्+अव्+य इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे, स्वादिकार्ये 'लव्यम्' इति सिद्धम् ।

अवश्यलाव्यम्—अवश्यपूर्वात् लूञ् धातोः 'ओरावश्यके' इति सूत्रेण ण्यति 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन सूत्रेण ऊकारस्य औकारवृद्धौ अवश्य+लौ+य इति जाते 'धातोस्तन्निमित्तस्यैव' इति सूत्र नियमात् 'वान्तो यि प्रत्यये' इति सूत्रेण औकारस्य धात्ववयवत्वात् यादिप्रत्ययनिमित्तकत्वाच्च वान्तादेशे अवश्य+ल्+आव्+य इति जाते, 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे, स्वादिकार्ये 'अवश्यलाव्यम्' इति सिद्धम् ।

क्षय्यम्—क्षेतुं योग्यं ( शक्यम् इति वा ) इत्यस्मिन् विग्रहे 'शकिलिङ् च' इत्यनेन शक्यार्थे यत् प्रत्यये क्षे+य इति जाते 'क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे इत्यनेन शक्यार्थे निपातनात् 'अय्' आदेशे, क्ष्+अय्+य इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे, स्वादिकार्ये 'क्षय्यम्' इति सिद्धम् ।

जय्यम्—जेतुं योग्यं ( शक्यम् इति वा ) इत्यस्मिन् विग्रहे 'शकिलिङ् च' इति सूत्रेण यत् प्रत्यये जे+य इति जाते 'क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे' इत्यनेन शक्यार्थे निपातनात् 'अय्' आदेशे, ज्—अय्+य इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे, स्वादिकार्ये 'जय्यम्' इति सिद्धम् ।

क्रय्यम्—क्रेतारः क्रीणीयुरिति बुद्ध्या आपणे प्रसारितमित्यर्थे क्रीञ् धातोः कर्मणि यत् प्रत्यये, गुणे, क्रे+य इति जाते एकारस्य अच्परकत्वाभावाद् अयादेशेऽप्राप्ते 'क्रय्यस्तदर्थे' इत्यनेन निपातनात्तस्य अय् आदेशे, स्वादिकार्ये 'क्रय्यम्' इति सिद्धम् । अन्यत्र तु 'क्रेयम्' इति क्रयणार्हमित्यर्थः ।

उपेन्द्रः—उप+इन्द्रः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इति सूत्रेण पूर्वपरयोः अकार-इकारयोः स्थाने गुणसंज्ञके कण्ठतालुस्थानीये एकारे 'उपेन्द्रः' इति सिद्धम् ।

रमेशः—रमा+ईशः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इति सूत्रेण पूर्वपरयोः आकार-ईकारयोः स्थाने गुणसंज्ञके कण्ठतालुस्थानीये एकारे 'रमेशः' इति सिद्धम् ।

गङ्गोदकम्—गङ्गा+उदकम् इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इति सूत्रेण पूर्व-

परयोः आकार-उकारयोः स्थाने कण्ठोष्ठस्थानीये ओकारे 'गङ्गोदकम्' इति सिद्धम् ।

'हकारादिष्वकार उच्चारणार्थः, लण्मध्ये त्वित्संज्ञकः' ऐसा कहा जा चुका है । अतः 'हयवरट्' सूत्र के 'र' तथा 'लण्' सूत्र के लकारोत्तर 'अ' को लेकर र्+अ='र' प्रत्याहार बनता है । यह भी अणादि प्रत्याहार के समान ही अपने मध्य वर्ण लकार का तथा अपना भी बोधक है । इसीलिए आगे के सूत्र ( उरण्रपरः ) में रपर से लपर भी लिया जायगा ।

कृष्णर्द्धि—कृष्ण+ऋद्धिः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इति सूत्रेण कृष्ण इत्यस्य णकारोत्तरवर्त्तिनोऽकाराद् अचि—ऋकारे परतः पूर्वपरयोः—अकार-ऋकारयोः स्थाने गुणे प्राप्ते 'उरण्रपरः' इति सूत्रनियमात् 'अर्' गुणे 'कृष्णर्द्धिः' इति सिद्धम् ।

तवल्कारः—तव+ऌकारः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इति सूत्रेण वकारोत्तरवर्त्तिनोऽकारस्य ऌकारस्य च स्थाने 'अ'रूपे गुणे 'उरण्रपरः' इत्यनेन लपरे च 'तवल्कारः' इति सिद्धम् ।

हर इह, हरयिह—हरे+इह इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण अयादेशे 'लोपः शाकल्यस्य' इत्यनेन विकल्पेन यलोपे हर+इह इति जाते 'आद्गुणः' इति गुणे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति सूत्रेण यलोपस्य त्रैपादिकत्वेनासिद्धत्वाद् गुणाभावे हर इह इति सिद्धम् । यकारलोपाभावे तु—'हरयिह' इति रूपम्भवति ।

विष्ण इह, विष्णविह—विष्णो+इह इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण अवादेशे 'लोपः शाकल्यस्य' इत्यनेन वकारलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्यनेन वलोपस्य त्रैपादिकत्वेनासिद्धत्वाद् गुणाभावे 'विष्ण इह' इति सिद्धम् । वकारलोपाभावे तु—'विष्णविह' इति सिद्धम् ।

त आगच्छन्ति—ते+आगच्छन्ति इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण अयादेशे 'लोपः शाकल्यस्य' इत्यनेन यलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति सूत्रेण लोपस्यासिद्धत्वाद् दीर्घाभावे 'त आगच्छन्ति' इति सिद्धम् । अन्याचार्याणाम्मते 'तयागच्छन्ति' ।

कृष्णैकत्वम्—कृष्णं+एकत्वम् इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण अवर्णात्—कृष्णघटकणकारोत्तरवर्त्तिनोऽवर्णात् एचि—एच् प्रत्याहारघटके

एकारे परतः पूर्वपरयोः अकार-एकारयोः स्थाने ऐकारे वृद्धौ 'कृष्णैकत्वम्' इति सिद्धम् ।

गङ्गौघः—गङ्गा+ओघः इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण पूर्वपरयोः आकार-ओकारयोः स्थाने औकारवृद्धौ 'गङ्गौघः' इति सिद्धम् ।

देवैश्वर्यम्—देव+ऐश्वर्यम् इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण अवर्णात्—देवघटकवकारोत्तरवर्त्तिनोऽवर्णात् एचि—एच् प्रत्याहारघटके ऐकारे परतः पूर्वपरयोः अकार-ऐकारयोः स्थाने ऐकारवृद्धौ 'देवैश्वर्यम्' इति सिद्धम् ।

कृष्णौत्कण्ठ्यम्—कृष्ण+औत्कण्ठ्यम् इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण कृष्णघटकणकारोत्तरवर्त्तिनोऽवर्णाद् एचि—एच् प्रत्याहारघटके औकारे परतः पूर्वपरयोः अकार-औकारयोः स्थाने औकारवृद्धौ 'कृष्णौत्कण्ठ्यम्' इति सिद्धम् ।

उपैति—उप+एति इत्यवस्थायां गुणं प्रबाध्य 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण वृद्धौ प्राप्तायां तामपि प्रबाध्य 'एङि पररूपम्' इत्यनेन पररूपे प्राप्ते तमपवाद्य 'एत्येधत्यूठ्सु' इत्यनेन वृद्धौ 'उपैति' इति सिद्धम् ।

उपैधते—उप+एधते इत्यवस्थायां गुणं वृद्धिं पररूपं च प्रबाध्य 'एत्येधत्यूठ्सु' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'उपैधते' इति सिद्धम् ।

प्रष्ठौहः—प्रष्ठ+ऊहः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'एत्येधत्यूठ्सु' इत्यनेन तं प्रबाध्य वृद्ध्येकादेशे 'प्रष्ठौहः' इति सिद्धम् ।

उपेतः—उप+इतः इत्यवस्थायां एजादिपरत्वाभावात् 'एत्येधत्यूठ्सु' इत्यनेन न वृद्ध्येकादेशः, किन्तु आद्गुणः इत्यनेन गुणे 'उपेतः' इति सिद्धम् ।

प्रेदिधत्—प्र+इदिधत् इत्यवस्थायां एजादिपरत्वाभावात् 'एत्येधत्यूठ्सु' इत्यनेन न वृद्ध्येकादेशः, किन्तु 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'प्रेदिधत्' इति सिद्धम् ।

स्वैरम्—स्वैरम्=यथेच्छम्, क्रियाविशेषणमेतत् । स्व+इरम् इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'स्वादीरेरिणोः' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'स्वैरम्' इति सिद्धम् ।

स्वैरी—स्व+ईरी इत्यवस्थायायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'स्वादीरेरिणोः' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'स्वैरी' इति सिद्धम् ।

स्वैरिणी—स्व+ईरिणी इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'स्वादीरेरिणोः' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'स्वैरिणी' इति सिद्धम् ।

अक्षौहिणी—अक्ष+ऊहिनी इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'अक्षौहिणी' इति सिद्धम् ।

**प्रौहः**—प्र + ऊहः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'प्रौहः' इति सिद्धम् ।

**प्रौढिः**—प्र + ऊढिः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'प्रौढिः' इति सिद्धम् ।

**प्रैषः**—प्र + एषः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः इत्यनेन गुणे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः ऐकारे वृद्धौ 'प्रैषः' इति सिद्धम् ।

**प्रैष्यः**—प्र + एष्यः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः ऐकारे वृद्धौ 'प्रैष्यः' इति सिद्धम् ।

**सुखार्तः**—सुखेन ऋतः इति विग्रहे तृतीयासमासे सुपो लुकि सुख + ऋत इत्यवस्थायां गुणं प्रबाध्य 'ऋते च तृतीयासमासे' इति वार्तिकेन वृद्धौ 'सुखार्तः' इति सिद्धम् ।

**परमर्तः**—परमश्चासौ ऋतश्च इति कर्मधारयसमासे 'ऋते च तृतीयासमासे' इति वार्तिकेनात्र तृतीयासामासाभावाद् वृद्धेरप्राप्तौ परम + ऋत इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'परमर्तः' इति सिद्धम् ।

**प्रार्णम्**—प्र + ऋणम् इत्यवस्थायां 'प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः अकार-ऋकारयोः स्थाने वृद्ध्येकादेशे रपरे च 'प्रार्णम्' इति सिद्धम् ।

एवम् वत्सतर + ऋणम्, कम्बल + ऋणम्, वसन + ऋणम्, ऋण + ऋणम् दश + ऋणम् इत्यवस्थायां वृद्धौ रपरे च कृते वत्सतरार्णम्, कम्बलार्णम्, वसनार्णम्, दशार्णम् इत्येते योगा सिद्ध्यन्ति ।

**प्रार्च्छति**—प्र + ऋच्छति इत्यवस्थायां 'उपसर्गादृति धातौ' इति सूत्रेण अवर्णाद् ऋति धातौ परतः पूर्वपरयोः स्थाने वृद्ध्येकादेशे रपरे च 'प्रार्च्छति' इति सिद्धम् ।

**प्रार्षभीयति**—ऋषभमात्मन इच्छति=ऋषभीयति । प्र + ऋषभीयति इत्यवस्थायां गुणं प्रबाध्य 'वा सुप्यापिशलेः' इति सूत्रेण विकल्पेन वृद्धौ रपरत्वे च 'प्रार्षभीयति' इति सिद्धम् । वृद्धौ 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन द्वित्वं न भवति 'शरोऽचि' इति सूत्रेण निषेधात् वृद्ध्यभावे गुणे रपरत्वे च 'प्रर्षभीयति' इति रूपं भवति ।

**प्रेजते**—प्र + एजते इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ प्राप्तायां तां

प्रबाध्य 'एङि पररूपम्' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने पररूपैकादेशे एकारे कृते 'प्रेजते' इति सिद्धम् ।

उपोषति—उप+ओषति इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ प्राप्तायां तां प्रबाध्य 'एङि पररूपम्' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने पररूपैकादेशे ओकारे कृते 'उपोषति' इति सिद्धम् ।

शकन्धुः—शक+अन्धुः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते तं बाधित्वा 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति वार्तिकेन पररूपे प्राप्ते तच्च पररूपं टिसंज्ञकस्य भवति, टि संज्ञा च 'अचोऽन्त्यादि टि' इति सूत्रेण ककारोत्तरवर्त्तिनोऽकारस्य भवति । एवञ्च शक+अन्धुः इत्यवस्थायां पूर्वपरयोः स्थाने पररूपे 'शकन्धुः' इति सिद्धम् ।

कर्कन्धुः—कर्क+अन्धु इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते, तं बाधित्वा 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः स्थाने पररूपे 'कर्कन्धुः' इति सिद्धम् ।

मनीषा—मनस्+ईषा इत्यवस्थायां 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन 'अस्' भागस्य टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः स्थाने पररूपे 'मनीषा' इति सिद्धम् ।

हलीषा—हलस्येषेति विग्रहे हल+ईषा इत्यवस्थायां 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन अस् भागस्य टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः स्थाने पररूपे 'हलीषा' इति सिद्धम् ।

कुलटा—कुलानाम् अटेति विग्रहे कुल+अटा इत्यवस्थायां 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन अस् भागस्य टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः स्थाने पररूपे 'कुलटा' इति सिद्धम् ।

सीमन्तः—केशवेशार्थे गम्ये सीमन्+अन्त इत्यवस्थायां 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन अस्भागस्य टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति वार्तिकेन अनः पररूपे 'सीमन्तः' इति सिद्धम् । अन्यथा तु सीमान्त इति रूपं भवति ।

लाङ्गलीषा—लाङ्गलस्येषेति विग्रहे लाङ्गल+ईषा इत्यवस्थायां 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इत्यनेन पररूपे 'लाङ्गलीषा' इति सिद्धम् ।

पतञ्जलिः—पतत+अञ्जलिः इत्यवस्थायां 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन

टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इत्यनेन 'अत्' इति टेः अञ्जलि-पदाद्यवयवस्य अकारस्य च स्थाने पररूपे अकारे जाते 'पतञ्जलिः' इति सिद्धम् ।

सारङ्गः—सार+अङ्गः इत्यवस्थायां पूर्वपरयोः सवर्णदीर्घे प्राप्ते पशुपक्षिणोरर्थे गम्ये 'अचोऽन्त्यादि टि' इत्यनेन टिसंज्ञायां 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इत्यनेन पररूपे 'सारङ्गः' इति सिद्धम् । अन्यथा तु सवर्णदीर्घे 'साराङ्गः' इति रूपं भवति ।

क्वेव—क्व+एव इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण वृद्धौ प्राप्तायां 'एवे चानियोगे' इति वार्तिकेन तां बाधित्वा पूर्वपरयोः स्थाने पररूप एकादेशे 'क्वेव' इति सिद्धम् ।

स्थूलोतुः—स्थूलश्चासौ ओतुश्चेति विग्रहे स्थूल+ओतुः इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण पूर्वपरयोः स्थाने वृद्ध्येकादेशे प्राप्ते 'ओत्वोष्ठयोः समासे वा' इति वार्तिकेन विकल्पेन पूर्वपरयोः पररूपे 'स्थूलोतुः' इति सिद्धम् । पररूपाभावपक्षे तु—वृद्धौ 'स्थूलौतुः' इति रूपं भवति ।

बिम्बोष्ठः—बिम्बमिव ओष्ठो यस्येति विग्रहे बिम्ब+ओष्ठ इत्यवस्थायां 'वृद्धिरेचि' इति सूत्रेण पूर्वपरयोः स्थाने वृद्ध्येकादेशे प्राप्ते 'ओत्वोष्ठयोः समासे वा' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः विकल्पेन पररूपे 'बिम्बोष्ठः' इति सिद्धम् । पररूपाभावपक्षे तु—वृद्धौ 'बिम्बौष्ठः' इति रूपं भवति ।

शिवायों नमः—शिवाय+ओं+नमः इत्यवस्थायां 'ओमाङोश्च' इति सूत्रेण अवर्णाद् ओमि परतः पूर्वपरयोः स्थाने पररूपे 'शिवायों नमः' इति सिद्धम् ।

शिवेहि—शिव+आ+इहि इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इति सूत्रेण दीर्घे प्राप्ते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे च प्राप्ते 'धातूपसर्गयोः कार्यमन्तरङ्गम्' इति परिभाषया 'असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे' इति परिभाषया च दीर्घस्य बहिरङ्गत्वान्निषेधे, अन्तरङ्गत्वाद् गुणे शिव+एहि इति जाते 'अन्तादिवच्च' इत्यनेन पूर्वान्तवद्भावेन 'ओमाङोश्च' इत्यनेन पररूपे 'शिवेहि' इति सिद्धम् ।

दैत्यारिः—दैत्य+अरिः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन पूर्वपरयोः सवर्णदीर्घ एकादेशे 'दैत्यारिः' इति सिद्धम् ।

श्रीशः—श्री+ईशः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने सवर्णदीर्घ एकादेशे 'श्रीशः' इति सिद्धम् ।

विष्णूदयः—विष्णु+उदयः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने सवर्णदीर्घ एकादेशे 'विष्णूदयः' इति सिद्धम् ।

**होतॄकारः**—होतृ+ऋकारः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे प्राप्ते 'ऋति सवर्णे ऋ वा' इति वार्तिकेन पूर्वपरयोः स्थाने विकल्पेन 'ऋ' इत्येकादेशे 'होतृकारः' इति सिद्धम्। पक्षे तु—'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'होतॄकारः' इति रूपं भवति।

**हरेऽव**—हरे+अव इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे प्राप्ते 'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपमेकादेशः, ततः 'हरेऽव' इति रूपं सिद्धम्।

**विष्णोऽव**—विष्णो+अव इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अवादेशे प्राप्ते 'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपादेशे 'विष्णोऽव' इति सिद्धम्।

**गो अग्रम्**—गो+अग्रम् इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अवादेशे प्राप्ते 'सर्वत्र विभाषा गोः' इति सूत्रेण पदान्ते विद्यमानस्य एङन्तस्य गोशब्दस्य अति परतः विकल्पेन प्रकृतिभावे सति 'गो अग्रम्' इति सिद्धम्। विभाषाग्रहणात्पक्षे—'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे सति 'गोऽग्रम्' इति रूपं भवति। पक्षे—'अवङ् स्फोटायनस्य' इति सूत्रेण अवङादेशे गव+अग्रम् इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'गवाग्रम्' इति सिद्धम्।

**चित्रग्वग्रम्**—चित्रगु+अग्रम् इत्यवस्थायां 'इको यणचि' इत्यनेन यणि 'चित्रग्वग्रम्' इति सिद्धम्। अत्र एङन्तत्वाभाव न पूर्वरूपम्, नापि 'सर्वत्र विभाषा गोः' इत्यनेन प्रकृतिभावः।

**गोः**—गो शब्दात् ङसि प्रत्यये ङकारेकारयोर्लोपे गो+अस् इत्यवस्थायां पदान्तत्वाभावात् 'सर्वत्र विभाषा गोः' इति सूत्रेण न प्रकृतिभावः। सूत्रे पदान्तत्वानाश्रयणे तु प्रकृते प्रकृतिभाव आपद्येतेति भावः। गो+अस् इत्यवस्थायां 'ङसिङसोश्च' इति सूत्रेण पूर्वरूपादेशे सति 'गोः' इति रूपं सिद्धम्।

**गवेन्द्रः**—गो+इन्द्रः इत्यवस्थायां 'इन्द्रे च' इत्यनेन अवङ् आदेशे अनुबन्धलोपे गव+इन्द्रः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'गवेन्द्रः' इति सिद्धम्।

**आगच्छ कृष्ण ३ अत्र गौश्चरति**—अत्र 'दूराद्धूते च' इत्यनेन प्लुते कृते 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'आगच्छ कृष्ण ३ अत्र गौश्चरति' इति सिद्धम्

**हरी एतौ**—हरी+एतौ इत्यवस्थायां 'एको यणचि' इति सूत्रेण यणादेशे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'हरी एतौ' इति सिद्धम्।

**विष्णू इमौ**—विष्णू + इमौ इत्यवस्थायां 'इको यणचि' इति सूत्रेण यणादेशे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'विष्णू इमौ' इति सिद्धम् ।

**गङ्गे अमू**—गङ्गे + अमू इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'गङ्गे अमू' इति सिद्धम् ।

**पचेते इमौ**—पचेते + इमौ इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'पचेते इमौ' इति सिद्धम् ।

**कवी अमू**—कवी + अमू इत्यवस्थायाम् 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'कवी अमू' इति सिद्धम् ।

**अमी ईशाः**—अमी + ईशाः इत्यवस्थायां 'एत ईद्बहुवचने' इति सूत्रं 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति शास्त्रेण असिद्धमिति मत्वा अदे + ईशाः इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण अयादेशे प्राप्ते 'अदसो मात्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'अमी ईशाः' इति सिद्धम् ।

**रामकृष्णावमू आसाते**—रामकृष्णौ अमू + आसाते इत्यवस्थायां 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति शास्त्रबलेन मुत्वस्यासिद्धत्वाद् अदौ + आसाते इत्यवस्थां मत्वा 'एचोऽयवायावः' इति सूत्रेण आवादेशे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'अदसो मात्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'रामकृष्णावमू आसाते' इति सिद्धम् ।

**अमुकेऽत्र**—अमुके + अत्र इत्यवस्थायां अयादेशे प्राप्ते 'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपे 'अमुकेऽत्र' इति सिद्धम् । यदि 'अदसो मात्' इति सूत्रे माद्ग्रहणं न क्रियेत तर्हि 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' इत्यत एत् पदस्यानुवृत्तौ अदस् शब्दात् परस्य एकारस्यापि प्रगृह्यविधानात् 'अमुके अत्र' इत्यत्र प्रगृह्यसंज्ञात्वेन प्रकृतिभावापत्तिः स्यात् । माद् ग्रहणादत्र न प्रगृह्यसंज्ञा न च प्रकृतिभावः ।

**इ इन्द्रः**—इ + इन्द्रः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'निपात एकाजनाङ्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'इ इन्द्रः' इति सिद्धम् ।

**उ उमेशः**—उ+उमेशः इत्यवस्थायां 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'निपात एकाजनाङ्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'उ उमेशः' इति सिद्धम् ।

**आ एवं नु मन्यसे**—आ+एवं नु मन्यसे इत्यवस्थायां वृद्धौ प्राप्तायां आतः अङित्वेन 'निपात एकाजनाङ्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'आ एवं मु मन्यसे' इति सिद्धम् । एवम् आ+एवं किल तत्=आ एवं किल तत्, आ+एवं सर्ववेदार्थः=आ एवं सर्ववेदार्थः, आ+एवं सद्वचो हरेः=आ एवं सद्वचो हरेः इत्येतानि रूपाणि सिध्यन्ति ।

**ओष्णम्**—आ+उष्णम् इत्यवस्थायां आतः ङित्वात्, अत्र ईषदर्थे च प्रयुक्तत्वात् प्रगृह्यसंज्ञायां अप्राप्तौ 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणैकादेशे 'ओष्णम्' इति सिद्धम् ।

**अहो ईशाः**—अहो+ईशाः इत्यवस्थायां 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अवादेशे प्राप्ते 'ओत्' इत्यनेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इति सूत्रेण प्रकृतिभावे 'अहो ईशाः' इति सिद्धम् ।

**विष्णो इति**—विष्णो+इति इत्यवस्थायाम् अवादेशे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे' इत्यनेन सम्बुद्धिनिमित्तकस्य ओकारस्य अवैदिके इतौ परतः विकल्पेन प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'विष्णो इति', इति सिद्धम् । प्रगृह्यत्वाभावपक्षे—'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अवादेशे 'लोपः शाकल्यस्य' इत्यनेन विकल्पेन वकारस्य लोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्यनेन लोपस्य त्रैपादिकत्वेनासिद्धत्वाद् गुणाभावे 'विष्ण इति'; वलोपाभावपक्षे—'विष्णविति' इत्येवं प्रयोगत्रयं सिध्यति ।

## निपात एकाजनाङ् ॥ १।१।१४ ॥

एकोऽज् निपात आङ्वर्जितः प्रगृह्यसंज्ञको भवति । उक्तञ्च—

'इषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः ।
एतमातं ङितं विद्याद् वाक्यस्मरणयोरङित् ॥'

'आङ् वर्जित एकाच् निपात की प्रगृह्यसंज्ञा होती है । कहा भी गया है—ईषदर्थे इत्यादि । ईषत् ( थोड़ा ) अर्थ में, क्रिया के योग में मर्यादा में और अभिविधि अर्थ में जो 'आ' उसे ङित् ( आङ् घटक—'आ' ) और वाक्य तथा स्मरण अर्थ में जो 'आ' उसे अङित् ( केवल आ ) जानना चाहिए ।

## ओत् ॥ १।१।१५ ॥

ओदन्तो निपातः प्रगृह्यसंज्ञको भवति ।

## सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ॥ १।१।१६ ॥

सम्बुद्धौ शाकल्यस्य इतौ अनार्षे इति पदच्छेदः । अनार्षे=अवैदिके इतौ परतः सम्बुद्धिनिमित्तक ओकारः प्रगृह्यसंज्ञको भवति, शाकल्याचार्यस्य मतेन। अन्यमते प्रगृह्यसंज्ञा न भवति ।

**दे३वदत्त३**—अत्र 'गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्' इति सूत्रेण विकल्पेन प्लुते 'दे३वदत्त३' इति सिद्धम् । पक्षे—'देवदत्त ३' इति रूपम् भवति ।

**किम्वुक्तम्**—किम्+उ+उक्तम् इत्यवस्थायां 'मय उञो वो वा' इत्यनेन मयः परस्य उञः—'उ' इत्यस्य 'व' इत्यादेशे किम्+व्+उक्तम् इति जाते 'अज्झीनं परेण संयोज्यम्' इति नियमात् संयोगे 'किम्वुक्तम्' इति सिद्धम् । 'व' आदेशाभावे—'निपात एकाजनाङ्' इति सूत्रेण प्रगृह्यसंज्ञायां 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' इत्यनेन प्रकृतिभावे 'किमु उक्तम्' इति रूपं सिध्यति ।

**चक्रि अत्र**—चक्रि+अत्र इत्यवस्थायां 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते 'इको सवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च' इत्यनेन विकल्पेन ह्रस्वे प्रकृतिभावे च 'चक्रि अत्र' इति सिद्धम् । पक्षे तु—यणादेशे 'चक्र्यत्र' इति सिध्यति ।

**गौर्य्यौ**—गौरी+औ इत्यवस्थायां 'इको यणचि' इति सूत्रेण यणादेशे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन यकारस्य विकल्पेन द्वित्वे 'गौर्य्यौ', गौर्यौ इति रूपद्वयं सिध्यति । पदान्तग्रहणादत्र 'इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च' इति सूत्रेण गौरी+औ इत्यवस्थायां ह्रस्वः प्रकृतिभावश्च न भवतः ।

**वाप्यश्वः**—वाप्यामश्वः इति विग्रहे वापी+अश्व इत्यवस्थायां यणादेशे प्राप्ते, तं प्रबाध्य 'इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च' इति सूत्रेण प्रकृतिभावे च प्राप्ते 'न समासे' इति वार्तिकेन निषेधे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'वाप्यश्वः' इति सिद्धम् ।

**ब्रह्म ऋषिः**—ब्रह्मा+ऋषिः इत्यवस्थायां 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'ऋत्यकः' इत्यनेन पदान्तस्य अक्प्रत्याहारान्तर्गतमकारोत्तरवर्त्तिन आकारस्य ह्रस्वे प्रकृतिभावे च 'ब्रह्म ऋषिः इति सिद्धम् ।

**ब्रह्मर्षिः**—ब्रह्मा+ऋषिः इत्यवस्थायां यदा ह्रस्वस्तथा प्रकृतिभावो न भवति तदा 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे रपरे च कृते 'ब्रह्मर्षिः इति सिध्यति ।

आर्च्छंत्—'ऋत्यकः' इति सूत्रस्य प्रत्युदाहरणमेतत्। अत्र 'पदान्ताः' इत्यस्याग्रहणे तु आ+ऋच्छत् इत्यवस्थायां ह्रस्वत्वमापद्येत। तन्मा भूदेतदर्थं पदान्तग्रहणम्। तेनाऽत्र 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'आर्च्छंत्' इति सिद्धम्।

इत्यच्सन्धिप्रकरणम् ॥

---

# अथ हल्सन्धिप्रकरणम्

**हरिश्शेते**—हरिः+शेते इत्यवस्थायां 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सकारे हरिस्+शेते इत्यवस्थायां 'स्तोः श्चुना श्चुः' इति सूत्रेण सकारस्य शकारेण सहाऽत्र योगे सति सकारस्य शकारादेशे 'हरिश्शेते' इति सिद्धम्। एवम् रामस्+शेते=रामश्शेते इत्यपि सिध्यति।

**रामश्चिनोति**—रामः+चिनोति इत्यवस्थायां 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सकारे रामस्+चिनोति इत्यवस्थायां 'स्तोः श्चुना श्चुः' इति सूत्रेण चयोगे सकारस्य शकारादेशे 'रामश्चिनोति' इति सिद्धम्।

**सच्चित्**—सत्+चित् इत्यवस्थायां 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन चयोगे तकारस्य चकारे 'सच्चित्' इति सिद्धम्।

**शार्ङ्गिञ्जयः**—शार्ङ्गिन्+जयः इत्यवस्थायां 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन जकारस्य योगे नकारस्य श्चुत्वेन ञकारे 'शार्ङ्गिञ्जयः इति सिद्धम्।

**विश्नः**—विश्+न इत्यवस्थायां 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन श्चुत्वे प्राप्ते 'शात्' इति सूत्रेण शकारात् परस्य नकारस्य श्चुत्वनिषेधे 'विश्नः' इति सिद्धम्।

**प्रश्नः**—प्रश्+न इत्यवस्थायां 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन श्चुत्वे प्राप्ते 'शात्' इति सूत्रेण शकारात् परस्य नकारस्य श्चुत्वनिषेधः। तेनात्र 'न' इत्यस्य न ञकारादेशः। अत्र प्रच्छ ज्ञीप्सायां इत्यस्माद्धातोः 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' इति सूत्रेण नङि 'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' इत्यनेन छकारस्य शादेशे प्रश्+न इति जाते 'प्रश्नः' इति सिद्धम्।

**रामष्षष्ठः**—रामः+षष्ठः इत्यवस्थायां 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सकार रामस्+षष्ठः इति जाते 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन सकारस्य षकारयोगेन सकारस्य षकारे 'रामष्षष्ठः' इति सिद्धम्।

**रामष्टीकते**—रामः+टीकते इत्यवस्थायां 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सकारे रामस्+टीकते इति जाते 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन सकारस्य षकारयोगेन सकारस्य षकारे 'रामष्टीकते' इति सिद्धम् ।

**पेष्टा**—पेष्+ता इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन तकारस्य ष्टुत्वे 'पेष्टा' इति सिद्धम् ।

**तट्टीका**—तस्य टीकेति विग्रहे तत्+टीका इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन 'त्' इत्यस्य 'ट्' इत्यादेशे 'तट्टीका' इति सिद्धम् ।

**चक्रिण्ढौकसे**—चक्रिन्+ढौकसे इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इति सूत्रेण 'न्' इत्यस्य 'ण्' इत्यादेशे 'चक्रिण्ढौकसे' इति सिद्धम् ।

**षट् सन्तः**—षट्+सन्तः इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन ष्टुत्वे प्राप्ते 'न पदान्ताट्टोरनाम्' इत्यनेन ष्टुत्वनिषेधे 'षट् सन्तः' इति सिद्धम् ।

**षट् ते**—षट्+ते इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन ष्टुत्वे प्राप्ते 'न पदान्ताट्टोरनाम्' इत्यनेन ष्टुत्व निषेधे 'षट् ते' इति सिद्धम् ।

**ईट्टे**—ईट्+ते इत्यवस्थायां 'न पदान्ताट्टोरनाम्' इति सूत्रे पदान्तग्रहणाऽस्वीकारे ष्टुत्वनिषेधप्राप्तिः, परन्तु पदान्तग्रहणान्न ष्टुत्वनिषेधः । तेन ष्टुत्वे—टकारात् परस्य तकारस्य टकारे 'ईट्टे' इति सिद्धम् ।

**सर्पिष्टमम्**—सर्पिष्+तमम् इत्यवस्थायां 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इति सूत्रेणाऽत्र जश्त्वं न भवति, 'ह्रस्वात्तादौ तद्धिते' इत्यनेन कृतस्य षत्वस्य जश्त्वदृष्ट्याऽसिद्धत्वात् । 'टो' ग्रहणं न क्रियेत चेदत्र षकारानुवृत्त्या ष्टुत्वनिषेधः प्राप्येत्, परन्तु 'टो' ग्रहणादत्र न ष्टुत्वनिषेधः । तेन 'ष्टुना ष्टुः' इति सूत्रेण षकारात् परस्य तकारस्य टकारे 'सर्पिष्टमम्' इति सिद्धम् ।

**षण्णाम्**—षष् शब्दात् षष्ठीविभक्तेर्बहुवचने आम् प्रत्यये नुमि अनुबन्धलोपे षष्+नाम् इत्यवस्थायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वे षड्+नाम् इति जाते 'अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्' इत्यनेन पर्युदासात् ( निषेधस्य निषेधात् ) ष्टुत्वे षड्+णाम् इति जाते 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' इत्यनेन वार्तिकेन 'ड्' इत्यस्य नित्यामनुनासिके सति 'षण्णाम्' इति सिद्धम् ।

**षण्णवतिः**—षड्+नवतिः इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इति सूत्रेण ष्टुत्वे प्राप्ते 'न पदान्ताट्टोरनाम्' इत्यनेन ष्टुत्वनिषेधे प्राप्ते 'अनाम्नवतिनगरीणामिति

वाच्यम्' इति वार्तिकेन पर्युदासात् ष्टुत्वे जाते 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यनेन पूर्वस्य 'ड्' इत्यस्यानुनासिके 'षण्णवतिः' इति सिद्धम् ।

**षण्णगर्यः**—षड्+नगर्यः इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन ष्टुत्वे प्राप्ते 'न पदान्ताट्टोरनाम्' इत्यनेन ष्टुत्वनिषेधे प्राप्ते 'अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्' इति वार्तिकेन पर्युदासात् ष्टुत्वे जाते 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यनेन पूर्वडकारस्यानुनासिकत्वे 'षण्णगर्यः' इति सिद्धम् ।

**सन् षष्ठः**—सन्+षष्ठः इत्यवस्थायां 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन नकारस्य ष्टुत्वेन णकारे प्राप्ते 'तोः षि' इत्यनेन ष्टुत्वनिषेधे 'सन् षष्ठः' इति सिद्धम् ।

**वागीशः**—वाक्+ईशः इत्यवस्थायां 'स्थानेऽन्तरतमः' इति सूत्रसहकारेण 'झलां जशोऽन्ते' इति सूत्रेण 'क्' इत्यस्य स्थाने कण्ठस्थानीये गकारादेशे 'वागीशः' इति सिद्धम् ।

**चिद्रूपम्**—चित्+रूपम् इति स्थिते 'झलां जशोऽन्ते' इति सूत्रेण जश्त्वे आन्तर्तम्यात् दकारे 'चिद्रूपम्' इति सिद्धम् ।

**एतन्मुरारिः**—एषश्चासौ मुरारिः इति विग्रहे एतद्+मुरारिः इति स्थिते 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यनेन अनुनासिके आन्तर्तम्यात् नकारे 'एतन्मुरारिः' इति सिद्धम् ।

**चतुर्मुखः**—चतुर्+मुखः इत्यत्र स्थानप्रयत्नानामन्ततमे स्पर्शे चरितार्थोऽनुनासिकविधिरयं रेफे न प्रवर्तते ।

**चिन्मयम्**—चित्+मयम् इति स्थिते 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यनेन वैकल्पिकेऽनुनासिके प्राप्ते 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' इति वार्तिकेन नित्येऽनुनासिके चिन्मयम् ।

**तन्मात्रम्**—तत्+मात्रम् इति स्थिते 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यनेन वैकल्पिकेऽनुनासिके प्राप्ते 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' इत्यनेन अनुनासिके चिन्मयम् इति सिद्धम् ।

**तल्लयः**—तस्य लयः इति विग्रहे 'तद्+लयः' इति स्थिते 'तोर्लि:' इत्यनेन अत्र दस्य परसवर्णः परनिमित्तभूतलकार सवर्णो 'ल्' एव भवति ।

**विद्वाँल्लिखति**—विद्वान्+लिखति इत्यवस्थायां 'तोर्लि:' नकारस्य स्थानिनोऽनुनासिकस्य परसवर्णो लकारो भवन् आन्तर्तम्यादनुनासिक एव लकारो जातस्तेन 'विद्वाँल्लिखति' इतिं सिद्धम् ।

**उत्थानम्**—उद्+स्थानम् इति स्थिते 'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य' इत्यनेन

'तस्मादित्युत्तरस्य' तथा 'आदेः परस्य' इति सूत्रसहकारेण सकारस्य स्थाने पूर्वसवर्णे थकारे उद्+थ्+थानम् इति दशायाम् 'झरो झरि सवर्णे' इत्यनेन मध्यथकारस्य वैकल्पिकलोपे 'खरि च' इत्यनेन दकारस्य चर्त्वे तकारे 'उत्थानम्', इति सिद्धम्। पक्षे 'उत्त्थानम्' इति, अत्र पुनः न थकारस्य चर्त्वम्। चर्त्वंम्प्रति थकारस्यासिद्धत्वात्।

**उत्तम्भनम्**—उद्+स्तम्भनम् इत्यवस्थायाम् 'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य' ८।४।११ इत्यनेन 'तस्मादित्युत्तरस्य' 'आदेः परस्य' इति सहकारेण सकारस्य थकारे पूर्वसवर्णे कृते उद्+थ+तम्भनम्' 'झरो झरि सवर्णे' इत्यनेन थकारस्य वैकल्पिक लोपे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे 'उत्तम्भनम्' इति सिद्धम्। पक्षे उत्थ्तम्भनम्।

**वाग्घरिः**—वाक्+हरिः इत्यवस्थायां 'झयो होऽन्यतरस्याम्' इत्यनेन वैकल्पिक पूर्वसवर्णे आन्तर्तम्यात् घोषवतो नादवतो महाप्राणस्य संवृतकण्ठचस्य हस्य स्थाने घकारे 'वाग्घरि' इति सिद्धम्। पक्षे वाग्हरिः इति।

**तच्छिवः**—तद्+शिवः इति स्थिते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन श्चुत्वेन यथासंख्येन दकारस्य जकारे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे चकारे तच्+शिवः इत्यवस्थायां 'शश्छोऽटि' इत्यनेन वैकल्पिके शकारस्य छकारादेशे 'तच्छिवः' इति सिद्धम्। पक्षे 'तच्शिवः' इति जातम्।

**विरप्शम्**—'शश्छोऽटि' सूत्रे पदान्तादित्यनुवृत्तेरत्र पदान्तत्वाऽभावात् शकारस्य न छत्वम् तेन 'विरप्शम्' इत्येव भवति।

**तच्छ्लोकेन**—तद्+श्लोकेन इति स्थिते स्तोः श्चुना श्चुः इति श्चुत्वेन दकारस्य यथासंख्येन जकारे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे तच्+श्लोकेन इति जाते 'शश्छोऽटि' इत्यनेन शकारस्य छकारादेशेऽप्राप्ते 'छत्वममीति वाच्यम्' इति वार्तिकेन छकारादेशे 'तच्छ्लोकेन' इति सिद्धम्।

**तच्छास्त्रम्**—तद्+शास्त्रम् इति स्थिते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन श्चुत्वे यथासंख्येन दकारस्य जकारे 'खरि च' इति चर्त्वेन चकारे 'शश्छोऽटि' इत्यनेन शकारस्य विकल्पेन छत्वे 'तच्छास्त्रम्' इति सिद्धम। पक्षे 'तच्शास्त्रम्' इति सिद्धम्।

**हरिं वन्दे**—हरिम्+वन्दे इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन अनुस्वारे 'हरिं वन्दे' इति सिद्धम्।

**गम्यते**—अत्र पदान्तमकारस्याऽभावात् मस्याऽनुस्वारो न भवति ।

**यशांसि**—यशा+न्+सि इत्यवस्थायां 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन अनुस्वारे 'यशांसि' इति सिद्धम् ।

**आक्रंस्यते**—आक्रम्+स्यते इति स्थिते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन मकारस्यानुस्वारे 'आक्रंस्यते' इति सिद्धम् ।

**मन्यते**—अत्र झल्परत्वाऽभावात् नकारस्यानुस्वारो न भवति ।

**अङ्कितः**—अंक्+इ+तः इति स्थिते 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन अनुस्वारस्य परसवर्णे ङकारे कृते संयोगे 'अङ्कितः' इति सिद्धम् ।

**अञ्चितः**—अन्च+इ+तः इत्यवस्थायां 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन अनुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे आन्तर्तम्यात् ञकारे संयोगे 'अञ्चितः' इति सिद्धम् ।

**शान्तः**—शाम्+तः इति स्थिते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन अनुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे आन्तर्तम्यात् नकारे 'शान्तः' इति सिद्धम् ।

**गुम्फितः**—गुन्फ्+इ+तः इति स्थिते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नकारस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे आन्तर्तम्यात् मकारे गुम्फितः इति सिद्धम् ।

**त्वङ्करोषि**—त्वम्+करोषि इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन अनुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन नित्ये परसवर्णे प्राप्ते "वा पदान्तस्य' इत्यनेन वैकल्पिके परसवर्णे आन्तर्तम्यात् ङकारे 'त्वङ्करोषि' इति सिद्धम् । परसवर्णाऽभावे 'त्वं करोषि' इत्येव सिद्धम् ।

**त्वन्तनोषि**—त्वम्+तनोषि इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन अनुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्येन नित्ये परसवर्णे प्राप्ते 'वा पदान्तस्य' इत्यनेन वैकल्पिके परसवर्णे आन्तर्तम्यात् नकारे 'त्वन्तनोषि' इति सिद्धम् । परसवर्णाऽभावे 'त्वं तनोषि' इति सिद्धम् ।

**संव्वत्सरः**—सम्+वत्सरः इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'वा पदान्तस्य' इत्यनेन वैकल्पिकेऽनुस्वारे 'यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम्' इत्यनेन वार्तिकेन वैकल्पिके सानुस्वारे वकारे 'संव्वत्सरः' इति सिद्धम् । वकाराभावे 'संवत्सरः' इति सिद्धम् ।

**यंल्लोकम्**—यम् + लोकम् इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'वा पदान्तस्य' इत्यनेन वैकल्पिकेऽनुस्वारे 'यवल परे यवला वेति वक्तव्यम्' इत्यनेन वैकल्पिके सानुस्वारे लकारे कृते 'यंल्लोकम्' इति सिद्धम्। लकाराभावे 'यं लोकम्' इति सिद्धम्।

**सम्राट्**—सम् + राट् इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'मो राजि समः क्वौ' इत्यनेन निषेधे संयोगे 'सम्राट्' इति सिद्धम्।

**किम् ह्मलयति**—इत्यत्र 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'हे मपरे वा' इत्यनेन वैकल्पिके मकारे 'किम् ह्मलयति' पक्षे 'किं ह्मलयति' इति सिद्धम्।

**कियँ ह्यः**—किम् + ह्यः इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम्' इति वार्तिकेन वैकल्पिके सानुस्वारे यकारे कृते 'कियँ ह्यः' पक्षे 'किं ह्यः' इति सिद्धम्।

**किवँ ह्वलयति**—किम् + ह्वलयति इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्ये अनुस्वारे प्राप्ते 'यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम्' इति वार्तिकेन सानुस्वारे वकारे कृते 'किवँ ह्वलयति', पक्षे 'किं ह्वलयति' इति सिद्धम्।

**किलँ ह्लादयति**—किम् + ह्लादयति इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम्' इति वार्तिकेन वैकल्पिके सानुस्वारे लकारे कृते 'किलँ ह्लादयति', पक्षे 'किं ह्लादयति' इति सिद्धम्।

**किन् ह्नुते**—किम् + ह्नुते इति स्थिते 'मोऽनुस्वारः' इत्यनेन नित्येऽनुस्वारे प्राप्ते 'नपरे नः' इत्यनेन वैकल्पिके नकारे कृते 'किन्ह्नुते', पक्षे 'किं ह्नुते' इति सिद्धम्।

**षट्त्सन्तः**—षड् + सन्तः इति स्थिते 'डः सि धुट्' इत्यनेन 'आद्यन्तौ टकितौ' इति सहकारात् वैकल्पिके धुडागमे अनुबन्धलोपे षड् + ध् + सन्तः इति जाते 'खरि च' इत्यनेन उभयोः डकारधकारयोः चर्त्वे षट् + त् + सन्तः इति जाते संयोगे 'षटत्सन्तः' धुडागमाभावे 'षट्सन्तः' इति सिद्धम्।

**प्राङ्ख्षष्ठः**—प्राङ् + षष्ठः इति स्थिते 'ङ्णोः कुक् टुक् शरि' इत्यनेन कुक् आगमे अनुबन्धलोपे प्राङ् + क् + षष्ठः इति जाते 'चयोः द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्' इति वार्तिकेन ककारस्य वैकल्पिके द्वितीयाक्षरे खकारे 'प्राङ्ख्षष्ठः' द्वितीयाक्षराभावे क् + ष् संयोगे 'प्राङ्क्षष्ठः' कुकागमाभावे 'प्राङ्षष्ठः' इति त्रीणि रूपाणि सिद्धानि।

सुगण्ठ्षष्ठः—सुगण्+षष्ठः इति स्थिते 'ङ्णोः कुक् टुक् शरि' इत्यनेन टुक् आगमे अनुबन्धलोपे सुगण्+ट्+षष्ठः इति जाते 'चयोः द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्' इत्यनेन वार्तिकेन वैकल्पिके द्वितीयाक्षरे ठकारे सुगण्+ठ्+षष्ठः इति जाते संयोगे 'सुगण्ठ्षष्ठः' द्वितीयाक्षराभावे टुगागमे च 'सुगण्ट्षष्ठः' टुगागमाभावे 'सुगण्षष्ठः' इति त्रीणि रूपाणि सिद्धानि।

सन्त्सः—सन्+स इत्यवस्थायां 'नश्च' इति सूत्रेण धुटि विहिते क्व भवेदिति शङ्कायां 'आद्यन्तौ टकितौ' इत्यनेन सस्याद्यावयवे सन्+धुट्+स इति जाते, उकारस्येत्संज्ञायां लोपे, टकारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेनेत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे सन्+ध्+स इति जाते 'खरि च' इत्यनेन धकारस्य चर्त्वेन तकारे कृते सति 'सन्त्सः' इति सिद्धम्। धुडागमाभावे 'सन्सः' इति सिद्धयति।

## शि तुक् ॥८।३।३१॥

शकारे परतः पदान्तस्य नकारस्य तुगागमो भवति विकल्पेन।

शकार के परे रहते पदान्त नकार को तुक् आगम होता है, विकल्प से।

ञ्छौ ञ्चछा ञ्चशा ञशाविति चतुष्टयम्।
रूपाणामिह तुक्छत्वचलोपानां विकल्पनात्॥

सन्+शम्भुः इस स्थिति में नकार को तुक् का आगम (नकार से आगे) होने पर सन्+त्+शम्भुः ऐसी स्थिति में तकार को श्चुत्व 'च्' और नकार को श्चुत्व 'ञ' होता है। तदुपरान्त शकार को विकल्प से छत्व होने पर 'झरो-झरि' से चकार का विकल्प से लोप हो जाता है।

सञ्छम्भुः—सन्+शम्भुः इत्यवस्थायां 'शि तुक्' इत्यनेन 'आद्यन्तौ टकितौ' इति सूत्रसहकारात् सकारे परतः पदान्तस्य नकारस्यान्तावयवे तुकि अनुबन्धलोपे सन्+त्+शम्भुः इति जाते 'शश्छोऽटि' इत्यनेन शस्य छत्वे 'स्तोः श्चुनाश्चुः' इत्यनेन तकारस्य श्चुत्वेन चकारे सन्+च्+छम्भुः इति जाते पुनः 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नकारस्य श्चुत्वेन ञत्वे 'झरो झरि सवर्णे' इति वैकल्पिके च लोपे 'सञ्छम्भुः' इति सिद्धम्। चलोपाभावपक्षे 'सञ्च्छम्भुः' इति सिध्यति। छत्वाभावपक्षे 'सञ्च्शम्भुः' इति, तुगभावपक्षे च सन्+शम्भुः इति जाते नकारस्य श्चुत्वेन ञकारे ,सञ्शम्भुः' इति सिध्यति। एवं रूपचतुष्टयम्भवति।

## ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् ॥८।३।३२॥

अत्र पदस्येत्यधिक्रियते । तस्य ङमः इति पञ्चम्यन्तानुरोधात् पञ्चम्यन्तत्वेन विपरिणामः । अचि इत्यस्य च षष्ठी प्रकल्पनम् । ह्रस्वात् परो यो ङम्, तदन्तं यत्पदं तस्मात्परस्याचो नित्यं ङमुडागमो भवति । अत्र ङमुट्' पदेन ङम् प्रत्याहारो गृह्यते । संज्ञायां च कृतं टित्वं सामर्थ्यात् संज्ञिभिः सम्बध्यते । तेन ङुट् णुट् नुट् स्यादित्यर्थो लभ्यते ।

**प्रत्यङ्ङात्मा**—प्रत्यङ्+आत्मा इत्यवस्थायां 'ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्' इत्यनेन ङमुडागमे अनुबन्धलोपे, संयोगे 'प्रत्यङ्ङात्मा' इति सिद्धम् ।

**सुगण्णीशः**—सुगण्+ईशः इत्यवस्थायां 'ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्' इत्यनेन 'ई' इत्यस्य ङमुडागमे अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'सुगण्णीशः' इति सिद्धम् ।

**सन्नच्युतः**—सन्+अच्युतः इत्यवस्थायां 'ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्' इत्यनेन 'ई' इत्यस्य ङमुडागमे अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'सन्नच्युतः' इति सिद्धम् ।

**संस्कर्ता**—सम्+कर्ता इत्यवस्थायां 'सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे सम्+स्+कर्ता इति जाते 'समः सुटि' इत्यनेन सुट्सम्बन्धिनि सकारे परतः सवंस्य समो रुत्वे प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इति सूत्रसहकारेणान्त्यस्य मकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे स+र्+स्+कर्ता इति जाते 'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' इत्यनेन रोः पूर्वमनुनासिके जाते सँ+र्+स्+कर्ता इति स्थिते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे विहिते 'सँःस्कर्ता, संःस्कर्ता' इति जाते 'विसर्जनीयस्य सः' इति विसर्जनीयस्य सत्वे प्राप्ते 'वा शरि' इत्यनेन विसर्जनीयस्य विसर्जनीये प्राप्ते इहोभयमपि प्रबाध्य 'सम्पुंकानां सो वक्तव्यः' इति वार्तिकेन विसर्गस्य सत्वे कृते 'सँस्कर्ता, संस्कर्ता' इति रूपद्वयं सिद्धयति ।

**पुंस्कोकिलः**—पुमांश्चासौ कोकिलश्चेति विग्रहे पुम्+कोकिलः इत्यवस्थायां 'पुमः खय्यम्परे' इत्यनेन पुमो मस्य रुत्वे रेफोत्तरवर्त्युकारलोपे पुर्+कोकिलः इति जाते 'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' इत्यनुनासिके पुँर्+कोकिलः इति जाते अनुनासिकाभावपक्षे 'अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः' इत्यनेनानुस्वारे पुंर्+कोकिलः इति जाते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'कुप्वोः ᳲक ᳳपौ च' इत्यनेन जिह्वामूलीये प्राप्ते तं बाधित्वा 'सम्पुंकानां सो वक्तव्यः' इत्यनेन विसर्गस्य सत्वे कृते 'पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः' इति सिध्यति ।

**पुंस्पुत्रः**—पुम्+पुत्रः इत्यवस्थायां 'पुमः खय्यम्परे' इत्यनेन पुमो मस्य रुत्वे रेफोत्तरवर्त्युकारलोपे पुर्+पुत्रः इति जाते 'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' इत्यनुनासिके पुँर्+पुत्रः इति जाते अनुनासिकाभावपक्षे 'अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः' इत्यनेनानुसारे पुंर्+पुत्रः इति जाते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेन जिह्वामूलीये प्राप्ते तं बाधित्वा 'सम्पुंकानां सो वक्तव्यः' इत्येनेन विसर्गस्य सत्वे कृते 'पुँस्पुत्रः पुंस्पुत्र' इति सिध्यति।

**विशेषः**—अम्परे इति ग्रहणात् पुंक्षीरम् इत्यत्र न पुमो मस्य रुत्वम्। तथा च खयि इति ग्रहणात् 'पुँ दासः' इत्यत्र न पुमो मस्य रुत्वम्। 'ख्यात्रादेशे न' इति वार्तिकेन 'पुंख्यानम्' इत्यत्र न पुमो मस्य रुत्वम्।

**नश्छव्यप्रशान् ॥८।३।७॥**

अम्परे छवि नान्तस्य प्रशान्भिन्नस्य रुर्भवति।

**विसर्जनीयस्य सः ॥८।३।३४॥**

खरि परतो विसर्जनीयस्य स् आदेशो भवति।

**चक्रिंस्त्रायस्व**—चक्रिन्+त्रायस्व इत्यवस्थायां 'नश्छव्यप्रशान्' इत्यनेन नान्तस्य 'चक्रिन्' इति पदस्य रुत्वे प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इति सूत्रनियमात् 'न्' इत्यस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे चक्रिर्+त्रायस्व इति जाते 'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' इत्यनेनाऽनुनासिके, पक्षे—'अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः' इत्यनुस्वारे च 'चँक्रिर्+त्रायस्व, चक्रिंर्+त्रायस्व' इति जाते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सत्वे 'चक्रिँस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व' इति सिध्यति।

**विशेषः**—'अप्रशान्' ग्रहणात् 'प्रशान्तनोति' इत्यत्र न नकारस्य रुत्वम्। 'पदस्य' इति ग्रहणात् 'हन्ति' इत्यत्र न नकारस्य रुत्वम्। अम्परे इति ग्रहणात् सन्त्सरुः खड्गमुष्टिः इत्यत्र न नकारस्य रुत्वम्।

**नॄँᳲपाहि**—नॄन्+पाहि इत्यवस्थायां 'नॄन् पे' इत्यनेन नस्य रुत्वे, उकारलोपे 'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' इत्यनेनाऽनुनासिकत्वे, पक्षे—अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः' इत्यनुस्वारे नॄँ+र्+पाहि, नॄं+र्+पाहि इति जाते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः इत्यनेन विसर्गे 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च इत्यनेन उपध्मानीये 'नॄँᳲपाहि, नॄंᳲपाहि' इति सिद्ध्यति। उपध्मानीयाभावपक्षे रुत्वानुनासिक-

विसर्गेषु कृतेषु 'नॄँः पाहि', अनुस्वारागमपक्षे—'नॄंः पाहि', रुत्वाभावपक्षे 'नॄन्पाहि' इति रूपाणि सिद्ध्यन्ति ।

**पयस्पाशम्**—पयस्+पाशम् इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे उकारलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे पयः+पाशम् इति जा 'कुप्वोः ᳵक ᳶपौ च' इत्युपध्मानीये प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'सोऽपदादौ' इति विसर्ग सत्वे 'पयस्पाशम्' इति सिद्धम् ।

**पयस्कल्पम्**—पयस्+कल्पम् इत्वस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे उकारलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे पयः+कल्पम् इति जा 'कुप्वोः ᳵक ᳶपौ च' इत्युपध्मानीये प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'सोऽपदादौ' इति विसर्ग सत्वे 'पयस्कल्पम्' इति सिद्धम् ।

**यशस्कल्पम्**—यशस् शब्दात् 'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः' इत्यने कल्पप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे यशस्+कल्पम् इति जाते रुत्वे विसर्गे च यशः+ कल्पम् इति जाते 'कुप्वोः ᳵक ᳶपौ च' इत्यनेन प्राप्तं जिह्वामूलीयं प्रबा 'सोऽपदादौ' इत्यनेन नित्यं विसर्गस्य सकारे 'यशस्कल्पम्' इति सिद्धम् ।

**यशस्काम्यति**—यशस् शब्दात् यश आत्मन इच्छतीत्यर्थे 'काम्यच्च' इ काम्यच् प्रत्यये अनुबन्धलोपादिकार्ये यशस्+काम्यति इति जाते रुत्वे विसर्गे यशः+काम्यति इति जाते, 'कुप्वोः ᳵक ᳶपौ च' इत्यनेन जिह्वामूलीये प्रा 'सोऽपदादौ' इति नित्यं विसर्गस्य सत्वे 'यशस्काम्यति' इति सिद्धम् ।

**प्रातःकल्पम्**—प्रातः+कल्पम् इत्यवस्थायां 'सोऽपदादौ' इत्यनेन नित्य विसर्गस्य सत्वे प्राप्ते तं प्रबाध्य 'अनव्ययस्येति वाच्यम्' इति वार्तिकेन वि सकाराभावे च 'प्रातःकल्पम्' इति सिद्धम् ।

**गीः काम्यति**—गीर्=काम्यति इत्यवस्थायां रेफस्य विसर्गे 'सोऽपदा इत्यनेन नित्यं सत्वे प्राप्ते 'काम्ये रोरेवेति वाच्यम्' इति वार्तिकेन वि सकाराभावे च 'गीः काम्यति' इति सिद्धम् ।

**सर्पिष्कल्पम्**—'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः' इत्यनेन सर्पिस् शब्द कल्पप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे, रुत्वे विसर्गे च सर्पिः+कल्पम् इति जाते, स प्रबाध्य 'इणः षः' इत्यनेन विसर्गस्य षत्वे 'सर्पिष्कल्पम्' इति सिद्धम् ।

**सर्पिष्पाशम्**—कुत्सितं सर्पिरिति विग्रहे 'याप्ये पाशप्' इत्यनेन पा प्रत्यये अनुबन्धलोपे सर्पिस्+पाशम् इति जाते, रुत्वे विसर्गे च सर्पिः+पा

इति जाते 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेन प्राप्तमुपध्मानीयं वैकल्पिकं विसर्गं सत्वं च प्रबाध्य 'इणः षः' इत्यनेन षत्वे 'सर्पिष्पाशम्' इति सिद्धम् ।

**सर्पिष्कम्**—सर्पिस् शब्दात् 'अज्ञाते' 'कुत्सिते' इति विकल्पेन क प्रत्यये सस्य रुत्वे विसर्गे सर्पिः+कम् इति जाते 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेन प्राप्तं जिह्वामूलीयं प्रबाध्य सत्वे प्राप्ते तमपि प्रबाध्य 'इणः षः' इत्यनेन षत्वे 'सर्पिष्कम्' इति सिद्धम् ।

**सर्पिष्काम्यति**—सर्पिस्+काम्यति इत्यवस्थायां रुत्वे विसर्गे च सर्पिः+ काम्यति इति जाते 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेन प्राप्तं जिह्वामूलीयं प्रबाध्य 'सोऽपदादौ' इत्यनेन सत्वे प्राप्ते तमपि प्रबाध्य 'इणः षः' इत्यनेन षत्वे 'सर्पिष्काम्यति' इति सिद्धम् ।

**कस्कः**—कः+कः इत्यवस्थायां पूर्वखण्डेऽकारात् परस्य विसर्जनीयस्य 'कष्कादिषु च' इत्यनेन सत्वे 'कस्कः' इति सिद्धम् ।

**कौतस्कुतः**—वीप्सायां द्विर्वचने कुतः कुत आगम्यते इत्यर्थे 'तत आगतः' इत्यनेन अण् प्रत्यये 'तद्धितेष्वचामादेः' इत्यादिवृद्धौ टिलोपे कौतः+कुतः इति जाते 'कस्कादिषु च' इत्यनेन पूर्वाकारवर्तिनो विसर्गस्य सत्वे 'कौतस्कुतः' इति सिद्धम् ।

**सर्पिष्कुण्डिका**—सर्पिस्+कुण्डिका इत्यवस्थायां सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'कस्कादिषु च' इत्यनेन इण उत्तरस्य विसर्गस्य षत्वे 'सर्पिष्कुण्डिका' इति सिद्धम् ।

**धनुष्कपालम्**—धनुस्+कपालम् इत्यवस्थायां सकारस्य रुत्वे विसर्गे च धनुः+कपालम् इति जाते 'कस्कादिषु च' इत्यनेन इण उत्तरस्य विसर्गस्य षत्वे 'धनुष्कपालम्' इति सिद्धम् ।

**निष्प्रत्यूहम्**—निस्+प्रत्यूहम् इत्यवस्थायां सकारस्य रुत्वे विसर्गे च निः+प्रत्यूहम् इति जाते 'इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य' इत्यनेन विसर्गस्य षत्वे 'निष्प्रत्यूहम्' इति सिद्धम् ।

**आविष्कृतम्**—आविस्+कृतम् इत्यवस्थायां सकारस्य रुत्वे विसर्गे च आविः+प्रत्यूहम् इति जाते 'इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य' इत्यनेन विसर्गस्य षत्वे 'आविष्कृतम्' इति सिद्धम् ।

**दुष्कृतम्**—दुर्+कृतम् इत्यवस्थायां रेफस्य विसर्गे दुः+कृतम् इति जाते 'इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य' इत्यनेन विसर्गस्य षत्वे 'दुष्कृतम्' इति सिद्धम् ।

**कांस्कान्**—कान्+कान् इत्यवस्थायां 'तस्य परमाम्रेडितम्' इत्यनेन द्वितीय 'कान्'शब्दस्य आम्रेडितसंज्ञायां 'कानाम्रेडिते इत्यनेनं प्रथम नकारस्य रुत्वे उकारलोपे 'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' इत्यनेनानुनासिकत्वे काँर्+कान् इति जाते, रेफस्य 'खरवासनयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेन प्राप्तं जिह्वामूलीयं प्रबाध्य 'सम्पुंकानां सो वक्तव्यः' इत्यनेन वार्तिकेन सत्वे 'काँस्कान्' इति सिद्धम्। अनुनासिकाभावपक्षे—'अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः' इत्यनुस्वारे 'कांस्कान्' इति सिध्यति।

**स्वच्छाया**—स्वस्य छायेति विग्रहे सुब्लुकि स्व+छाया इति जाते 'छे च' इत्यनेन तुगागमे अनुबन्धलोपे स्वत्+छाया इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन तकारस्य दकारे 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन दकारस्य श्चुत्वेन जकारे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वेन चकारे च कृते 'स्वच्छाया' इति सिद्धम्।

**शिवच्छाया**—शिव+छाया इति स्थिते 'छे च' इत्यनेन तुगागमे अनुबन्धलोपे शिवत्+छाया इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन तकारस्य दकारे 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन चकारयोगात् दकारस्य श्चुत्वेन जकारे 'खरि च' इति सूत्रेण चर्त्वेन चकारे 'शिवच्छाया' इति सिद्धम्।

**आच्छादयति**—आ(ङ्)+छादयति इत्यवस्थायां 'आङ्माङोश्च' इत्यनेन तुगागमे अनुबन्धलोपे आत्+छादयति इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन तकारस्य दकारे 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन चकारयोगात् दकारस्य श्चुत्वेन जकारे 'खरि च' इति सूत्रेण चर्त्वेन चकारे 'आच्छादयति' इति सिद्धम्।

**माच्छिदत्**—मा+छिदत् इत्यवस्थायां 'आङ्माङोश्च' इत्यनेन तुगागमे अनुबन्धलोपे आ+त्+छिदत् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन तकारस्य दकारे 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन चकारयोगात् दकारस्य श्चुत्वेन जकारे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वेन चकारे 'माच्छिदत्' इति सिद्धम्।

**म्लेच्छति**—म्ले+छ+ति इत्यवस्थायां 'दीर्घात्' इति सूत्रेण 'म्ले इति दीर्घात् परस्य छकारस्य सत्त्वात् तुगागमे जश्त्वे, श्चुत्वे चर्त्वे च 'म्लेच्छति' इति सिद्धम्।

**लक्ष्मीच्छाया**—लक्ष्मी+छाया इत्यवस्थायां 'पदान्ताद्वा' इत्यनेन विकल्पेन तुगागमे अनुबन्धलोपे लक्ष्मी+त्+छाया इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन

तकारस्य चकारे 'लक्ष्मीच्छाया' इति सिद्धम् । तुगागमाभावपक्षे–'लक्ष्मीछाया' इति रूपं सिध्यति ।

।। इति हल्सन्धिः ।।

---

## अथ विसर्गसन्धिप्रकरणम्

### विसर्जनीयस्य सः ।।८।०।०४।।

विसर्जनीयस्य स्थाने सकारादेशो भवति खरि परतः ।

**विष्णुस्त्राता**—विष्णुः + त्राता इत्यवस्थायां 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सकारे संयोगे 'विष्णुस्त्राता' इति सिद्धम् ।

### शर्परे विसर्जनीयः ।।८।३।३५।।

शर्परे खरि विसर्गस्य विसर्जनीय एव भवति न त्वन्यत् ।

**कःत्सरुः**—अत्र 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'शर्परे विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गस्य विसर्गादेशे 'कःत्सरुः' इति सिद्धम् ।

**घनाघनः क्षोभणः**—अत्र 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्जनीयस्य सत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'शर्परे विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्जनीयस्य विसर्गादेशे 'घनाघनः क्षोभणः' इति सिद्धम् ।

### वा शरि ।।८।३।३६।।

शरि परतो विसर्जनीयस्य विकल्पेन विसर्गो भवति ।

**वा०—खर्परे शरि वा विसर्गलोपो वक्तव्यः ।।**

खर्परे शरि विकल्पेन विसर्गस्य लोपः स्यादिति वाच्यम् ।

**हरिः शेते**—हरिः + शेते इत्यवस्थायां 'वा शरि' इति सूत्रेण शकारे परतः विसर्गस्य विसर्गादेशे 'हरिः शेते' इति सिद्धम् । विसर्गाभावपक्षे 'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सत्वे विहिते हरिस् + शेते इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन सकारस्य शकारे च कृते 'हरिश्शेते' इति सिद्धम् ।

**हरि स्फुरति**—हरिः + स्फुरति इत्यवस्थायां 'खर्परे शरि वा विसर्गलोपो वक्तव्यः' इति वार्तिकेन विकल्पेन विसर्गलोपे 'हरि स्फुरति' इति सिद्धम् ।

लोपाभावपक्षे—'वा शरि' इत्यनेन विकल्पेन विसर्गादेशे 'हरिः स्फुरति' इति सिध्यति। विसर्गाभावपक्षे—'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सत्त्वे कृते 'हरिस्स्फुरति' इति तृतीयं रूपञ्च सिध्यति।

॥ इति विसर्गसन्धिः ॥

---

## अथ स्वादिसन्धिप्रकरणम्

### ससजुषो रुः ॥८।२।६६॥

पदान्तस्य सकारस्य सजुष् शब्दस्य च षकारस्य स्थाने 'रु' इत्ययमादेशो भवति।

### अतो रोरप्लुतादप्लुते ॥६।१।११०॥

'अप्लुतादतः परस्य रोरुर्भवति अप्लुतेऽति परतः। 'अतः' इति ग्रहणात् 'देवा अत्र' इत्यत्र देवा+रु+अ इत्यवस्थायां 'रोः' इति ह्रस्वाकार परत्वाभावेन नोकारस्य प्राप्तिः, किन्तु रोर्यत्वे यलोपे च 'देवा अत्र' इति रूपसिद्धिः। 'अति' इति ग्रहणात् 'श्व आगन्ता' इत्यत्र श्व+रु+आगन्ता इत्यवस्थायां रोः परमाकारस्य सत्त्वान्नोत्वप्राप्ति।

अतो रोरिति सूत्रे अप्लुतात् इति अतः इत्यस्य विशेषणीभूतस्य पदाभावे प्लुतत्वयुक्तादप्यतः परस्य रोः स्थाने उत्वं स्यात् तत्परेऽकारे सति। तथा सति एहि सुस्रोत३ अत्र स्नाहीत्यत्र 'सुस्रोतस्+अत्र' इत्यवस्थायां सस्य रुत्वे सति तत्पूर्वं परे च ह्रस्वाकारस्य सत्त्वेनोत्वप्राप्तिः स्पष्टैव, तद्बाधनार्थं अप्लुतादित्यस्याऽऽवश्यकता। तेन प्लुतसंज्ञाभाजः परस्य रोर्नोत्वम्।

सूत्रेऽप्लुते इति पदाभावे प्लुतसंज्ञकेऽकारे परतोऽपि उत्वापत्तिः स्यात् उत्वदृष्टचा प्लुतस्यासिद्धत्वात्। न च कृतेऽपि अप्लुते इति ग्रहणे उत्वस्यापेक्षया प्लुतस्यासिद्धत्वेनोत्वस्य दुर्वारत्वमेवेति शंक्यम् अप्लुत इति ग्रहणसामर्थ्याद् उत्वप्राप्तिदृष्ट्या प्लुतस्याऽसिद्धत्वाभावात्। तेन च 'तिष्ठतु पय अ३ग्निदत्त' इत्यत्र रोः परस्याऽकारस्य 'गुरोरनृत' इत्यादिना प्लुतत्वेन नोत्वमिति भावः।

शिवोऽर्च्यः—शिवस्+अर्च्यः इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इति सस्य रुत्वे

'अतो रोरप्लुतादप्लुते' इति सूत्रेण रोरुत्वे 'शिव+उ+अर्च्यः' इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने गुणैकादेशे 'शिवो+अर्च्यः' इति जाते 'एङः पदान्तादति' इत्यनेनाऽर्च्य इत्यस्याऽकारस्य पूर्वरूपादेशे 'शिवोऽर्च्यः' इति सिद्धम् ।

## हशि च ॥६।१।११४॥

अप्लुतादतः परस्य रोरुर्भवति हशि परतः ।

**शिवो वन्द्यः**—शिवस्+वन्द्यः इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे 'हशि च' इत्यनेन 'रु' इत्यस्य स्थाने 'उत्वे' 'आद्गुणः' इत्यनेन पूर्वपरयोर्गुणैकादेशे 'शिवो वन्द्यः' इति सिद्धम् ।

## भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥८।३।१७

भो-भगो-अघो इत्येवं पूर्वस्य, अवर्णपूर्वस्य च रुसम्बन्धिनो रेफस्य यत्वम्भवत्यशि परतः । भोस् भगोस् अघोस् इति सान्ताः निपाताः ।

**देवा इह**—देवास्+इह इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वें 'भोभगोअघोऽपूर्वस्य योऽशि' इत्यनेन रोर्यादेशे देवाय्+इह इति जाते 'लोपः शाकल्यस्य' इत्यनेन यलोपे 'देवा इह' इति सिद्धम् । यलोपाभावपक्षे—'देवायिह' इति रूपं सिध्यति ।

## व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य ॥८।३।१८॥

पदान्तयोर्यकारवकारयोर्लघूच्चारणौ त्रयौ वास्तोऽशि परतः शाकटायनस्याऽऽचार्यस्य मतेन । यस्योच्चारणे जिह्वाग्रोपाग्रमध्यमूलानां शैथिल्यं जायते स लघूच्चारणः ।

## ओतो गार्ग्यस्य ॥८।३।२०॥

ओकारात् परस्य पदान्तस्याऽलघुप्रयत्नस्य यकारस्य नित्यं लोपो भवति । गार्ग्यग्रहणम्पूजार्थम् ।

**भो अच्युत**—भोस् इति सान्तनिपातसम्बोधनम्, अव्ययपदम् । तत्र भोस्+अच्युत इत्यवस्थायां 'ससजुषोरुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे 'भोभगोअघोऽपूर्वस्य योऽशि' इत्यनेन रोर्यत्वे 'ओतो गार्ग्यस्य' इत्यनेन नित्यं यकारलोपे 'भो अच्युत' इति सिद्धम् । लघुप्रयत्नपक्षे—'व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य' इत्यनेन यकारस्य लघूच्चारणयादेशे 'भोयच्युत' इति रूपं सिध्यति ।

## हलि सर्वेषाम् ॥८।०।२२॥

भोभगोअघोऽपूर्वस्य लघ्वलघूच्चारणस्य यकारस्य लोपो भवति हलि परतः सर्वेषामाचार्याणां मतेन ।

**भो देवाः**—भोस् + देवाः इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे 'भोभगोअघोऽपूर्वस्य योऽशि' इत्यनेन रोर्यत्वे 'हलि सर्वेषाम्' इत्यनेन नित्यं यकारलोपे 'भो देवाः' इति सिद्धम् ।

**भगो नमस्ते**—भगोस् + नमस्ते इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे 'भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि' इत्यनेन रोर्यत्वे 'हलि सर्वेषाम्' इत्यनेन यकारस्य लोपे 'भगो नमस्ते' इति सिद्धम् ।

**अघो याहि**—अघोस् + याहि इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि' इत्यनेन रोः स्थाने यकारे कृते 'हलि सर्वेषाम्' इत्यनेन यकारस्य लोपे 'अघो याहि' इति सिद्धम् ।

**देवा यान्ति**—देवास् + यान्ति इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि' इत्यनेन रोः स्थाने यकारे कृते 'हलि सर्वेषाम्' इत्यनेन यकारस्य लोपे 'देवा यान्ति' इति सिद्धम् ।

**अहरहः**—अहन् शब्दस्य 'नित्यवीप्सयोः' इत्यनेन द्वित्वे अहन् + अहन् इति जाते 'रोऽसुपि' इत्यनेन अहन् शब्दस्थनकारस्य रेफादेशे अहर् + अहर् इति जाते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेनान्त्यस्य विसर्गे कृते च संयोगे 'अहरहः' इति सिद्धम् ।

**अहर्गणः**—अहन् + गणः इत्यवस्थायां 'रोऽसुपि' इत्यनेन रेफादेशे प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इति परिभाषयाऽन्त्यस्य विहिते संयोगे च कृते 'अहर्गणः' इति सिद्धम् ।

**अहो रूपम्**—अहन् + रूपम् इत्यवस्थायां 'रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्' इत्यनेन रुत्वे 'हशि च' इत्युत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'अहोरूपम्' इति सिद्धम् ।

**गतमहो रात्रिरेषा**—अत्र 'रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्' इत्यनेन रुत्वे 'हशि च' इत्युत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'गतमहो रात्रिरेषा' इति सिद्धम् ।

**अहोरात्रः**—अहश्च रात्रिश्चेति द्वन्द्वसमासान्ते अचि 'यस्येति च' इत्यनेन इकारलोपे अहन् + रात्र इति जाते 'रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्' इति वार्तिकेन एकदेशविकृतन्यायेन नस्य रुत्वे 'हशि च' इत्युत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'रात्राह्नाहाः पुंसि' इत्यनेन पुंस्त्वे 'अहोरात्रः' इति सिद्धम् ।

अहो रथन्तरम्—अहन्+रथन्तरम् इत्यवस्थायां 'रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्' इति वार्तिकेन नस्य रुत्वे 'हशि च' इत्युत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'अहो रथन्तरम्' इति सिद्धम् ।

अहर्पतिः—अहर्+पतिः इत्यवस्थायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे प्राप्ते 'अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः' इत्यनेन विसर्गं प्रबाध्य रेफस्य रेफादेशे 'अहर्पतिः' इति सिद्धम् । पक्षे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'अहः पतिः' इति रूपम्, 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेनोपध्मानीये 'अहᳲपतिः' इति रूपञ्च सिद्धयति ।

गीर्पतिः—गीर्+पतिः इत्यवस्थायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे प्राप्ते 'अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः' इत्यनेन विसर्गं प्रबाध्य रेफस्य रेफादेशे 'गीर्पतिः' इति सिद्धम् । पक्षे–'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'गीः पतिः' इति रूपम्, 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्यनेन उपध्मानीये 'गीᳲपतिः' इति रूपञ्च सिद्धयति ।

धूर्पतिः—धूर्+पतिः इत्यवस्थायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे प्राप्ते 'अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः' इत्यनेन विसर्गं प्रबाध्य रेफस्य रेफादेशे 'धूर्पतिः' इति सिद्धम् । पक्षे—'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'धूः पतिः' इति रूपम्, 'कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च' इत्युपध्मानीये 'धूᳲपतिः' इति रूपञ्च सिद्धयति ।

## रो रि ॥८।३।१४॥

रेफस्य रेफे परतः लोपो भवति ।

## ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥६।३।१११॥

ढरेफयोर्लोपनिमित्तयोः पूर्वस्याऽणो दीर्घो भवति ।

पुना रमते—पुनर्+रमते इत्यवस्थायां 'रो रि' इत्यनेन रेफस्य लोपे पुन+रमते इति जाते 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इत्यनेन नकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य दीर्घे 'पुना रमते' इति सिद्धम् ।

हरी रम्यः—हरिस्+रम्यः इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे हरिर्+रम्यः इति जाते 'रो रि' इत्यनेन रेफस्य लोपे हरि+रम्यः इति जाते 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इत्यनेन सूत्रेणात्र लोपनिमित्ते रेफे परतः पूर्वाण्रूपस्य नकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य दीर्घे च विहिते 'हरी रम्यः' इति सिद्धम् ।

शम्भू राजते—शम्भुस्+राजते इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे शम्भुर्+राजते इति जाते 'रो रि' इति रेफस्य लोपे शम्भु+राजते इति जाते 'ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इति सूत्रेणात्र लोप-निमित्ते रेफे परतः पूर्वाणूरूपस्य नकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य दीर्घे च विहिते 'शम्भू राजते' इति सिद्धम् ।

लीढः—लिह् आस्वादने इत्यस्माद्धातोर्निष्ठायां क्त प्रत्यये अनुबन्धलोपे लिह्+त इति जाते 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे 'झषस्तथोर्धोऽधः' इत्यनेन तकारस्य धकारे 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन ष्टुत्वे लिढ+ढ इति जाते 'ढो ढे लोपः' इत्यनेन ढलोपे सति 'ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इत्यनेन दीर्घे 'लीढः' इति सिद्धम् ।

तृढः—तृहू हिंसायाम् इत्यस्माद्धातोर्निष्ठायां क्त प्रत्यये अनुबन्धलोपे तृह+त इति जाते 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे 'झषस्तथोर्धोऽधः' इत्यनेन तकारस्य धकारे 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन ष्टुत्वे 'ढो ढे लोपः' इत्यनेन ढलोपे 'ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इत्यनेन पूर्वस्य ऋकारस्य दीर्घापत्तिः स्यादिति सूत्रे अण्ग्रहण मावश्यकम् । अण् ग्रहणादत्र दीर्घो न भवति । ततः दीर्घाप्रवृत्तौ कृदन्तत्वात् स्वादिकार्ये 'तृढः' इति सिद्धम् ।

मनोरथः—मनस्+रथः इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे 'हशि च' इत्यनेन रोः उत्वे प्राप्ते 'रो रि' इत्यनेन रेफस्य लोपे च प्राप्ते 'विप्रतिषेधे परं कार्यम्' इति नियमात् परत्वात् 'रो रि' इत्यनेन रेफस्य लोपे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति नियमात् 'रो रि' इति रेफलोपस्यासिद्धत्वात् 'हशि च' इत्यनेन रोरुत्वे मन+उ+रथः इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन पूर्वपरयो-र्गुणैकादेशे स्वादिकार्ये 'मनोरथः' इति सिद्धम् ।

एष विष्णुः—एषस्+विष्णुः इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इति रुत्वे प्राप्ते 'एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि' इत्यनेन सुलोपे 'एष विष्णुः' इति सिद्धम् ।

स शम्भुः—तद्+सु+शम्भुः इत्यवस्थायां 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारा-देशे 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन सकारादेशे स+सु+शम्भुः इति जाते उकारलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'एतत्तदोः सुलोपोऽकोर-नञ्समासे हलि' इत्यनेन सुलोपे 'स शम्भुः' इति सिद्धम् ।

एषको रुद्रः—एषकस्+रुद्रः इत्यवस्थायां एतच्छब्दस्य सककारत्वात् 'एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि' इत्यनेन न सुलोपः, किन्तु 'ससजुषो रुः'

इत्यनेन रुत्वे 'हशि च' इत्युत्वे 'आद्गुणः' इति गुणे स्वादिकार्ये 'एषको रुद्रः' इति सिद्धम् ।

**असः शिवः**—अस् + सु + शिव इत्यवस्थायां नञ्समासत्वात् 'एतत्तदोः' इत्यादिना सुलोपस्याप्राप्तौ 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'असः शिवः' इति सिद्धम् ।

**एषोऽत्र**—एष + सु + अत्र इत्यवस्थायां हल्परत्वाभावाद् 'एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि' इत्यस्याप्राप्तौ सस्य 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' इत्यनेन उत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपे च 'एषोऽत्र' इति सिद्धम् ।

**सेमामविड्ढिप्रभृतिम्**—सस् + इमामविड्ढिप्रभृतिम् इत्यवस्थायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम्' इति सूत्रेण सकारलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'सेमामविड्ढिप्रभृतिम्' इति सिद्धम् ।

**सैष दाशरथी रामः**—सस् + एस दाशरथी रामः इत्यवस्थायां 'सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम्' इत्यनेन पादपूरणार्थं सलोपे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'सैष दाशरथी रामः' इति सिद्धम् ।

॥ इति स्वादिसन्धिः ॥

॥ इति पञ्चसन्धिः ॥

---

## अथाऽजन्तपुंल्लिङ्गप्रकरणम्

**रामः**—राम शब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां 'स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्' इत्यनेन स्वादिप्रत्यये प्राप्ते 'द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने' इति नियमादेकत्वविवक्षायां प्रथमाविभक्तेरेकवचने सु प्रत्यये राम + सु इति जाते 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्युकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे राम + स् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे राम + र् इति जाते 'विरामोऽवसानम्' इत्यनेन अवसानसंज्ञायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'रामः' इति सिद्धम् । इदम् अव्युत्पत्तिपक्षे रूपम् । व्युत्पत्तिपक्षे तु—रमन्ते योगिनोऽस्मिन्निति

विग्रहे रमु क्रीडायाम् धातोः 'हलश्च' इत्यधिकरणे घञ् प्रत्यये अनुबन्धलो 'अत उपधायाः' इत्यनेन वृद्धौ कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्राति पदिकसंज्ञायां विभक्तिकार्ये—'रामः' इति सिद्धम् ।

**रामौ**—रामशब्दात् 'द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने' इति नियमात् द्विवच विवक्षायां प्रथमाविभक्तेर्द्विवचने औ प्रत्यये राम+राम+औ इति जा 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' इत्यनेनैकशेषे राम+औ इति जाते 'वृद्धिरे इत्यनेन प्राप्तां वृद्धिम्प्रबाध्य 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्रा 'नादिचि' इत्यनेन निषेधे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धयेकादेशे 'रामौ' इति सिद्धम्

**रामाः**—रामशब्दात् 'बहुषु बहुवचनम्' इति नियमात् बहुत्वविवक्षा प्रथमाविभक्तेर्बहुवचने जस् प्रत्ययें राम+राम+राम+जस् इति जा 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' इत्येकशेषे राम+जस् इति जाते 'चुटू' इत्यने जकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे राम+अस् इति जाते 'हलन्त्य इत्यनेन सकारस्येत्संज्ञायां प्राप्तायां विभक्तिश्च' इत्यनेन विभक्तिसंज्ञायां विभक्तौ तुस्माः' इत्यनेन निषेधे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसव दीर्घादेशे रामास् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, अवसा संज्ञायां 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'रामाः' इति सिद्धम् ।

**हे राम**—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनार्थकप्रथमैकवचनवि क्षायां सु प्रत्यये राम+सु इति जाते 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञा 'यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' इत्यनेन अङ्गसंज्ञायां 'एङ्ह्रस्वा सम्बुद्धेः' इत्यनेन सुलोपे सम्बोधनार्थकस्य 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे 'हे रा इति सिद्धम् । एवं हे रामौ, हे रामाः इति रूपद्वयमपि सिद्ध्यति ।

**रामम्**—राम शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तेरेकवचने अ प्रत्यये राम+अम् इति जाते 'हलन्त्यम्' इत्यनेन मकारस्येत्संज्ञायां प्राप्त 'विभक्तिश्च' इत्यनेन विभक्तिसंज्ञायां 'न विभक्तौ तुस्माः' इत्यनेन मकारस्ये त्संज्ञानिषेधे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अतो गु इत्यनेन पररूपे प्राप्ते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे च प्रा तमुभयमपि प्रबाध्य 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'रामम्' इति सिद्धम् ।

**रामौ**—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तेर्द्विवचनविवक्षा औट् प्रत्यये राम+राम+औट् इति जाते अनुबन्धलोपे 'सरूपाणामेकशेष ए विभक्तौ' इत्येकशेषे राम+औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ प्राप्त

ताम्प्रबाध्य 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'नादिचि' इत्यनेन निषेधे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'रामौ' इति सिद्धम् ।

रामान्—रामशब्दात् प्रातिपादिकसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तेर्बहुवचनविवक्षायां शस् प्रत्यये राम + राम + राम + शस् इति जाते 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' इत्येकशेषे राम + शस् इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन शकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे राम + अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे रामास् इति जाते 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन सस्य नत्वे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे प्राप्ते 'पदान्तस्य' इत्यनेन निषेधे 'रामान्' इति सिद्धम् ।

रामेण—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाविभक्तेरेकवचनविवक्षायां टा प्रत्यये राम + टा इति जाते 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन टास्थाने इनादेशे राम + इन इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणैकादेशे रामेन इति जाते 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'रामेण' इति सिद्धम् ।

रामाभ्याम्—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचनविवक्षायां भ्याम् प्रत्यये एकशेषे राम + भ्याम् इति जाते 'अलोऽन्त्यस्य' इति सूत्रसहकारेण 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे 'रामाभ्याम्' इति सिद्धम् ।

विशेषः—चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि—'भ्याम्'प्रत्यये 'रामाभ्याम्' इति रूपं जायते ।

रामैः—रामव्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचनविवक्षायां भिस् प्रत्यये, एकशेषे राम + भिस् इति जाते 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' इति परिभाषया 'अतो भिस ऐस्' इत्यनेन भिस ऐसादेशे राम + ऐस् इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ रामैस् इति जाते, सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, विसर्गे च 'रामैः' इति सिद्धम् ।

### अतो भिस ऐस् ॥७।१।९॥

अदन्तादङ्गात् परस्य भिसः स्थाने ऐसादेशो भवति ।

### स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ॥१।१।५६॥

आदेशः स्थानिवत् स्यान्न तु स्थान्यलाश्रयविधौ । वर्णमाश्रितो विधिरल्विधिः । आदेशोऽनलाश्रयविधौ तु स्थानिवत् स्यादेव । स्थानं च प्रसङ्गः । यस्य स्थानेऽन्यद् विधीयते तत् स्थानि । येन विधीयमानेन अन्यतः प्रसक्तं निव-

स्तंते स आदेशः । स्थानिना तुल्यः स्थानिवत् । आदेशः स्थानिना तुल्यो भवति स्थानिधर्मको भवति—इति तात्पर्यम् । अलिति वर्णपर्यायः । विधीयते इति विधिः कार्यम् । आलाश्रयो विधिः अल्विधिः । न अल्विधिः अनल्विधिः । अलाश्रयभिन्ने कार्ये कर्तव्ये स्थानिवद् भवतीति फलितम् । उदाहरणन्तु रामायेति । अत्र ङेर्यादेशे कृते स्थानिवद्भावेन सुप्त्वमादाय 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घो भवति ।

रामाय—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीविभक्तेरेकवचनकविवक्षायां ङे प्रत्यये राम+ङे इति जाते 'ङेर्यः' इत्यनेन यादेशे राम+य इति जाते 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' इत्यनेन स्थानिवद्भावेन यादेशस्य सुप्त्वात् 'सुपि च' इत्यनेनादन्तस्याङ्गस्य दीर्घे प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इति नियमादन्त्यस्यालो दीर्घे 'रामाय' इति सिद्ध्यति ।

रामेभ्यः—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीविभक्तेर्बहुवचनविवक्षायां भ्यस् प्रत्यये राम+राम+राम+भ्यस् इति जाते 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' इत्येकशेषे राम+भ्यस् इति जाते यञादित्वात्सुप्त्वाच्च 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे, अनुबन्धलोपे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'रामेभ्यः' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं पञ्चमीविभक्तेर्बहुवचनेऽपि राम+भ्यस्=रामेभ्यः इति सिद्ध्यति ।

रामात्—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचनविवक्षायां ङसि प्रत्यये राम+ङसि इत्यवस्थायां 'टाङसिङसामिनात्स्याः इत्यनेन ङसेरादादेशे राम+आत् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन तकारस्य दकारे रामाद्, इति जाते 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे दकारस्य तकारे 'रामाद्, रामात्' इति रूपद्वयं सिद्ध्यति ।

रामस्य—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठ्येकवचनविवक्षायां ङस् प्रत्यये राम+ङस् इति जाते 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन ङसः स्यादेशे 'रामस्य' इति सिद्धम् ।

रामयोः—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीविभक्तेर्द्विवचनविवक्षायां ओस् प्रत्यये राम+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्यनेन अदन्ताङ्गस्यैकारे प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इति नियमाद् अकारस्य एकारे रामे+ओस् इति जाते 'एचो-

ऽयवायावः' इत्यनेन अय् आदेशे रामयोस् इति जाते सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च—'रामयोः' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं सप्तमीविभक्तेर्द्विवचनेऽपि राम+ओस्=रामयोस् इति सिद्धयति ।

रामाणाम्—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीविभक्तेर्बहुवचनविवक्षायां आम् प्रत्यये राम+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे; अनुबन्धलोपे राम+नाम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन अजन्ताङ्गस्य दीर्घे प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इति नियमात् मकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य दीर्घे रामानाम् इति जाते 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'रामाणाम्' इति सिद्धम् ।

रामे—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीविभक्तेरेकवचने ङि प्रत्यये राम+ङि इति जाते अनुबन्धलोपे राम+इ इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'रामे' इति सिद्धम् ।

रामेषु—रामशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीविभक्तेर्बहुवचने सुप् प्रत्यये 'हलन्त्यम्' इत्यनेन पकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे रामेसु इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षत्वे 'रामेषु' इति सिद्धम् ।

### आदेशप्रत्यययोः ॥८।३।५९॥

इण्कुभ्यां परस्याऽपदान्तस्याऽऽदेशः प्रत्ययावयवश्च यः सकारस्तस्य मूर्धन्यादेशो भवति ।

### सर्वादीनि सर्वनामानि ॥१।१।२७॥

### पूर्वपराऽवरदक्षिणोत्तरापराऽधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ॥१।१।३४॥

### स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥१।१।३५॥

### अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ॥१।१।३६॥

सर्वनाम शब्दाः—सर्वादयश्च पञ्चत्रिंशत्—सर्व, विश्व, उभ, उभय, डतर (प्रत्ययान्त) डतम (प्रत्ययान्त); अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम, पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युस्मद्, अस्मद्, भवतु, किम् इत्येते शब्दाः सर्वनाम संज्ञकाः भवन्ति ।

सर्वे—सर्व-शब्दात् प्रथमाबहुवचनविवक्षायां जस्-प्रत्यये सर्व+जस् इति जाते 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इत्यनेन सर्वशब्दस्य सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी'

इत्यनेन जसः स्थाने शी आदेशे प्राप्ते 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' इत्यनेन सर्वादेशे सर्व+शी इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन शकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे सर्व+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'सर्वे' इति सिद्धम्।

**सर्वस्मै**—सर्वशब्दात् चतुर्थ्येकवचनविवक्षायां ङे प्रत्यये सर्व+ङे इति जाते 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इत्यनेन सर्वशब्दस्य सर्वनामसंज्ञायां 'ङेर्यः' इत्यनेन यादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'सर्वनाम्नः स्मै' इत्यनेन 'ङे' इत्यस्य 'स्मै' आदेशे 'सर्वस्मै' इति सिद्धम्।

**सर्वस्मात्**—सर्वशब्दात् पञ्चम्येकवचनविवक्षायां ङसि प्रत्यये सर्व+ङसि इति जाते सर्वनामसंज्ञायां 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङसेः स्मादादेशे सर्वस्मात् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे—'सर्वस्माद्, सर्वस्मात्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

**सर्वेषाम्**—सर्वशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इत्यनेन सर्वनामसंज्ञायां षष्ठीबहुवचनविवक्षायां आम् प्रत्यये सर्व+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन प्राप्तं नुटं प्रबाध्य 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे सर्व+स्+आम् इति जाते 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षकारे संयोगे 'सर्वेषाम्' इति सिद्धम्।

**सर्वस्मिन्**—सर्वशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां, सर्वनामसंज्ञायां सप्तम्येकवचनविवक्षायां ङि प्रत्यये 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङेः स्मिन् आदेशे 'सर्वस्मिन्' इति सिद्धम्।

**पूर्वे**—पूर्वशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इत्यनेन नित्या सर्वनामसंज्ञा प्राप्ता, ताम्प्रबाध्य 'पूर्वपरावरदक्षिणोत्तराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्' इत्यनेन जसि विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन जसः स्थाने 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे पूर्व+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'पूर्वे' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—पूर्व+जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे, 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे, रुत्वे अनुबन्धलोपे, विसर्गे च—पूर्वाः इति रूपं सिद्ध्यति।

**स्वे**—स्व शब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इत्यनेन प्राप्तां नित्यां सर्वनामसंज्ञां प्रबाध्य 'स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्' इत्यनेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन जसः 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे

स्व + ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'स्वे' इति सिद्धम् । सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—स्व + जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे, रुत्वे अनुबन्धलोपे, विसर्गे च—'स्वः' इति रूपं सिद्धयति ।

अन्तरे—अन्तरशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'सर्वादीनि सर्वनामानि' इत्यनेन प्राप्तां नित्यां सर्वनामसंज्ञाम्प्रबाध्य 'अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः' इत्यनेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन जसः 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे अन्तर + ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'अन्तरे' इति सिद्धम् । सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—अन्तर + जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे, 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च—'अन्तराः' इति रूपं सिध्यति ।

पूर्वस्मात्—पूर्वशब्दात् पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये सर्वनामसंज्ञायां 'पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा' इत्यनेन विकल्पेन स्मादादेशे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'पूर्वस्माद्, पूर्वस्मात्' इति रूपद्वयं सिद्धम् । पक्षे—'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन आदादेशे, स्वर्णदीर्घे जश्त्वे, विकल्पेन च र्त्वेच—'पूर्वाद्, पूर्वात्' इति रूपञ्च सिद्धयति ।

पूर्वस्मिन्—पूर्वशब्दात् सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये सर्वनामसंज्ञायां 'पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा' इत्यनेन 'ङि' इत्यस्य विकल्पेन 'स्मिन्' इत्यादेशे 'पूर्वस्मिन्' इति सिद्धम् । पक्षे—पूर्व + ङि इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे पूर्व + इ इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'पूर्वे' इति रूपं सिद्धयति ।

अतिसर्वाय—अतिक्रान्तः सर्वमतिसर्वः तस्मै 'अतिसर्वाय' इति अत्र अन्यविशेषणत्वेन स्वार्थोपस्थापकत्वमुपसर्जनत्वमित्युपसर्जनलक्षणसत्त्वेन सर्वशब्दस्य समासे उपसर्जनीभूतत्वात् 'संज्ञोपर्सनीभूतास्तु न सर्वादयः' इति निषेधात् सर्वनामसंज्ञाऽभावेन 'स्मै' इत्यादेशाप्राप्त्या 'ङेर्यः' इति ङेर्यादेशे 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे 'अतिसर्वाय' इति सिद्धम् ।

संज्ञायां च सर्वो नाम कश्चित् तस्मै सर्वाय इत्येव भवति

मासपूर्वाय—मासेन पूर्वस्तस्मै मासपूर्वाय इति विग्रहे 'तृतीयासमासे' इत्यनेन सर्वनामसंज्ञानिषेधात् 'स्मै' इत्यादेशाप्राप्त्या 'ङेर्यः' इत्यनेन ङेर्यादेशे 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे 'मासपूर्वाय' इति सिद्धम् ।

वर्णाश्रमेतराणाम्—वर्णाश्च आश्रमाश्च इतरे चेति वर्णाश्रमेतराः तेषां वर्णाश्रमेतराणाम् इति विग्रहे 'द्वन्द्वे च' इत्यनेन द्वन्द्वसमासाङ्गत्वात् इतरशब्दस्य

सर्वनाम संज्ञा निषेधात् 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमो न जातः। तेन वर्णाश्रमेतर+आम् इत्यवस्थायां नुडागमे अनुबन्धलोपे, दीर्घे णत्वे च—'वर्णाश्रमेतराणाम्' इति सिद्धम्।

**वर्णाश्रमेतरे**—वर्णाश्रमेतरशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये वर्णाश्रमेतर+जस् इति जाते 'विभाषा जसि' इत्यनेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे गुणे 'वर्णाश्रमेतरे' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—वर्णाश्रमेतर+जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे दीर्घे रुत्वे विसर्गे च—'वर्णाश्रमेतराः' इति सिद्ध्यति।

**प्रथमे**—प्रथमशब्दात् प्रथमाविभक्तेर्बहुवचने जस् प्रत्यये 'प्रथमचरम' इत्यादिना विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन जसः 'शी' इत्यादेशे अनुबन्ध लोपे प्रथम+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'प्रथमे' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाऽभावपक्षे—प्रथम+जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे पूर्वसवर्णदीर्घे रुत्वे विसर्गे च 'प्रथमाः' इति रूपं सिद्ध्यति।

**चरमे**—चरमशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये चरम+जस् इति जाते 'प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च' इत्यनेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे चरम+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'चरमे' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—चरम+जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे रुत्वे विसर्गे च 'चरमाः' इति रूपं सिद्ध्यति।

**द्वितये**—द्वि शब्दात् 'संख्याया अवयवे तयप्' इत्यनेन तयप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे, प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये द्वितय+जस् इति जाते 'प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च' इत्यनेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'जसः शी' इत्यनेन जसः 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे द्वितय+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'द्वितये' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—द्वितय+जस् इत्यवस्थायां अनुबन्धलोपे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे रुत्वे विसर्गे च—'द्वितयाः' इति रूपं सिद्ध्यति।

**विशेषः**—एवं, अल्पे, अल्पाः, अर्धे, अर्धाः, कतिपये, कतिपयाः, नेमे, नेमाः इत्येते प्रयोगा अपि सिद्ध्यन्ति।

**द्वितीयस्मै**—द्विशब्दात् 'द्वेस्तीयः' इत्यनेन तीयप्रत्यये प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये द्वितीय+ङे इति जाते 'तीयस्य ङित्सु वा वाच्या

इति वार्तिकेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'सर्वनाम्नः स्मै' इत्यनेन ङेः 'स्मै' आदेशे 'द्वितीयस्मै' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाऽभावपक्षे—द्वितीय+ङे इत्यवस्थायां 'ङेर्यः' इत्यनेन ङेर्यादेशे, 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे 'द्वितीयाय' इति रूपं सिद्धयति।

द्वितीयस्मात्—द्विशब्दात् 'द्वेस्तीयः' इत्यनेन तीयप्रत्यये प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये द्वितीय+ङसि इति जाते 'तीयस्य ङित्सु वा वाच्या' इति वार्तिकेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङसेः स्मादादेशे 'द्वितीयस्मात्' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाऽभावपक्षे—द्वितीय+ङसि इत्यवस्थायां 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन ङसेरादादेशे, सवर्णदीर्घे 'द्वितीयात्' इति रूपं सिध्यति।

द्वितीयस्मिन्—द्विशब्दात् 'द्वेस्तीयः' इत्यनेन तीयप्रत्यये प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये द्वितीय+ङि इति जाते 'तीयस्य ङित्सु वा वाच्या' इति वार्तिकेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन 'ङि' इत्यस्य 'स्मिन्' आदेशे 'द्वितीयस्मिन्' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—द्वितीय+ङि इति जाते अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे—'द्वितीये' इति रूपं सिध्यति।

विशेषः—एवम् तृतीयस्मै—तृतीयाय, तृतीयस्मात्–तृतीयात्, तृतीयस्मिन्–तृतीये इत्येते प्रयोगाः सिध्यन्ति।

निर्जरसौ—निर्जर शब्दात् प्रथमाद्विचने औप्रत्यये 'जराया जरसन्यतरस्याम्' इत्यनेन जरसादेशे लब्धे सूत्रे जराशब्दस्य जरसादेशः प्रोक्तो न तु निर्जरशब्दस्य इति कथमत्र जरसादेश इति शङ्कायां 'पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदन्तस्य च' इति; अत्राङ्गाधिकारात् तदन्तस्यापि स्यादिति प्राप्ते 'निर्दिश्यमानस्यादेशा भवन्ति' इत्यनया परिभाषया जराशब्दस्यैव जरसादेशः स्यात् इति कथमत्र जरशब्दस्य 'जरस्' इति शङ्कायां 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इति जरसादेशे परेण चायुक्ते 'निर्जरसौ' इति सिद्धम्। जरसादेशाभावपक्षे—निर्जर+औ='निर्जरौ' इति रूपं सिध्यति।

पदः—पाद शब्दाच्छसि प्रत्यये 'पद्दन्नोमासहृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु' इत्यनेन पादशब्दस्य विकल्पेन पदादेशे पद+शस् इति जाते; अनुबन्धलोपे रुत्वे विसर्गे च—'पदः' इति सिद्धम्। पदादेशाभावपक्षे—पाद+

शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन नत्वे 'पादान्' इति सिद्धम् ।

**पदा**—पादशब्दात् तृतीयैकवचने टा प्रत्यये पाद+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'पदन्नोमास्' इत्यादिना पादशब्दस्य विकल्पेन पदादेशे पद्+आ इति जाते संयोगे 'पदा' इति सिद्धम् । पदादेशाभावपक्षे—पाद+टा इति जाते 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन इनादेशे पाद+इन इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे, 'पादेन' इति रूपं सिध्यति ।

**विश्वपाः**—विश्वं पाति इति विग्रहे कृदन्त विश्वपा शब्दात् कृदन्तत्वात्प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचनविवक्षायां सुप्रत्यये अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च—'विश्वपाः' इति सिद्धम् ।

**विश्वपौ**—विश्वपा शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचनविवक्षायां औ प्रत्यये विश्वपा+औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'नादिचि' इत्यनेन निषेधे वृद्धिरेचि इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे—'विश्वपौ' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—एवं द्वितीयाविभक्तेर्द्विवचनेऽपि 'विश्वपौ' इति रूपस्य सिद्धिः बोध्या ।

**विश्वपाः**—विश्वपाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचनविवक्षायां जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे विश्वपा+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घनिषेधे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे, विसर्गे च—'विश्वपाः' इति सिद्धम् ।

### सुडनपुंसकस्य ॥ १।१।४३ ॥

स्वादिपञ्चवचनानि ( सु-औ-जस्-अम्-औट्-प्रभृतीनि ) सर्वनामस्थानसंज्ञकानि भवन्ति, नपुंसकलिङ्गं वर्जयित्वा ।

### स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥ १।४।१७ ॥

कप्प्रत्ययावधिषु स्वादिषु सर्वनामस्थानभिन्नेषु प्रत्ययेषु परतः पूर्वं पदसंज्ञं भवति ।

## यचि भम् ।। १।४।१८ ।।

यादिष्वजादिषु च कप्प्रत्ययावधिषु स्वादिष्वसर्वनामस्थानेषु परतः पूर्वं भसंज्ञं भवति ।

## आकडारादेका संज्ञा ।। १।४।१ ।।

इत ऊर्ध्वं 'कडाराः कर्मधारये' इत्यतः प्रागेकस्यैकैव संज्ञा भवतीत्यधिकारो वेदितव्यः । या पराऽनवकाशा च । तेन शसादावचि भसंज्ञैव, न पदसंज्ञा ।

## आतो धातोः ।। ६।४।१४० ।।

आकारान्तो यो धातुस्तदन्तस्य भस्याङ्गस्य लोपो भवति ।

**विश्वपः**—विश्वपाशब्दात् शस् प्रत्यये 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन शकारस्येत्-संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे विश्वपा+अस् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इति सु-औ-जस्-अम्-औट् इत्येतेषां सर्वनामस्थानसंज्ञाविधानत्वात् शसो न सर्व-नामस्थानसंज्ञा, तेन 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन सर्वनामस्थानभिन्नस्वादिषु परेषु पूर्वस्य विश्वपाशब्दस्य पदसंज्ञायां प्राप्तायां 'यचि भम्' इत्यनेन च सर्व-नामस्थानयजादिषु स्वादिषु परेषु भसंज्ञायां प्राप्तायां किमत्र विधेयम्? इति शङ्कायाम् 'आकडारादेका संज्ञा' इत्यनेन एकैव संज्ञा भवतीति नियमात् पर-त्वादनवकाशत्वाच्च भसंज्ञायां सत्याम् 'आतो धातोः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घं प्रबाध्य 'अलोऽन्त्यस्य' इति परिभाषया पकारोत्तरवर्तिन आकारस्य लोपे विश्वप्+अस् इति जाते सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोप विसर्गे च 'विश्वपः' इति सिद्धम् ।

**विश्वपा**—विश्वपाशब्दात् तृतीयैकवचने टा प्रत्यये विश्वपा+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन विश्वपाशब्दस्य पदसंज्ञायां प्राप्तायां 'यचि भम्' इत्यनेन च भसंज्ञायां प्राप्तायां 'आकडारादेका संज्ञा' इत्य-नेन एकैव संज्ञा भवतीति नियमात् भसंज्ञायां सत्याम् 'आतोः धातोः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घं प्रबाध्य पकारस्थाऽऽकारलोपे विश्वप्+आ इति जाते संयोगे 'विश्वपा' इति सिद्धम् ।

**हरिः**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्राति-पदिकसंज्ञायां प्रथमाविभक्तेरेकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे—'हरिः' इति सिद्धम् ।

**हरी**—हरि शब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्राति-

पदिकसंज्ञायां प्रथमाविभक्तेर्द्विवचने औ प्रत्यये हरि+औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वपरयोः' स्थाने पूर्वसवर्णदीर्घादेशे 'हरी' इति सिद्धम्।

**विशेषः**—एवं द्वितीयाविभक्तेर्द्विवचने औट् प्रत्यये हरि+औट्='हरी' इति रूपं सिध्यति।

**हरयः**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाविभक्तेर्बहुवचने जस् प्रत्यये हरि+जस् इति जाते 'जसि च' इत्यनेन गुणे, अनुबन्धलोपे हरे+अस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे हरयस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'हरयः' इति सिद्धम्।

**हे हरे !**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनकारके एकवचने सु प्रत्यये 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन गुणे अनुबन्धलोपे हरे+स् इति जाते 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन स्लोपे 'हे' इत्यस्य पूर्वं प्रयोगे 'हे हरे' इति सिद्धम्।

**हरिम्**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये हरि+अम् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते तत्प्रबाध्य 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे च प्राप्ते तमुभयमपि प्रबाध्य 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'हरिम्' इति सिद्धम्।

**हरीन्**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तेर्बहुवचने शस् प्रत्यये हरि+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे हरि+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन सकारस्य नत्वे 'हरीन्' इति सिद्धम्।

**हरिणा**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाविभक्तेरेकवचने टा प्रत्यये 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'आङो नाऽस्त्रियाम्' इत्यनेन 'टा' इत्यस्य 'ना' इत्यादेशे हरिना इति जाते 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'हरिणा' इति सिद्धम्।

**हरिभ्याम्**—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाविभक्तेर्द्विवचने भ्याम् प्रत्यये हरि+भ्याम् इति जाते संयोगे 'हरिभ्याम्' इति सिद्धम्।

**विशेषः**—एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचने हरिभ्याम् इति रूपं सिध्यति।

हरिभिः—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचनविवक्षायां भिस् प्रत्यये रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'हरिभिः' इति सिद्धम् ।

हरये—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये हरि+ङे इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ङकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे 'हरये' इति सिद्धम् ।

हरिभ्यः—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थी बहुवचने भ्यस् प्रत्यये हरि+भ्यस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'हरिभ्यः' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं पञ्चमीबहुवचनेऽपि हरिभ्यः इति रूपं सिध्यति ।

हरेः—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये हरि+ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे हरि+अस् इति जाते 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे 'ङसिङसोश्च' इत्यनेन पूर्वरूपे रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'हरेः' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं षष्ठ्येकवचने हरि+ङस् इत्यवस्थायां घिसंज्ञायां गुणे पूर्वरूपे रुत्वे विसर्गे च 'हरेः' इति रूपं सिध्यति ।

हर्योः—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये हरि+ओस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे हर्+य्+ओस् इति जाते 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन विकल्पेन यकारस्य द्वित्वे हर्+य्+य्+ओस्, हर्+य्+ओस् इति जाते सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, विसर्गे च 'हर्य्योः, हर्योः' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

विशेषः—एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि 'हर्य्योः, हर्योः' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

हरीणाम्—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीविभक्तेर्बहुवचने आम् प्रत्यये हरि+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे हरि+न्+आम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन दीर्घादेशे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'हरीणाम्' इति सिद्धम् ।

हरौ—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिक संज्ञायां सप्तम्येकवचने ङिप्रत्यये अनुबन्धलोपे हरि+इ इति जाते 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'अच्च घेः' इत्यनेन ङे स्थाने औकारे 'हरि' इत्यस्य रेफोत्तरवर्तिन इकारस्य अकारे हर+औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन पूर्वपरयोर्वृद्धयेकादेशे 'हरौ' इति सिद्धम् ।

हरिषु—हरिशब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे हरि+सु इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्ययेन सकारस्य मूर्द्धन्यादेशे 'हरिषु' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं 'कवि'प्रभृतीनां शब्दानां रूपाण्यपि सिध्यन्ति ।

सखा—सखि शब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे सखि+स् इति जाते 'अनङ् सौ' इत्यनेन अनङादेशे प्राप्ते 'अनेकाल्शित् सर्वस्य' इति परिभाषया सर्वस्य स्थाने प्राप्ते 'ङिच्च' इत्यनेन तम्प्रबाध्य अन्त्यस्य खकारोत्तरवर्तिनं इकारस्य स्थाने ऽनङादेशे अनुबन्धलोपे सखन्+स् इति जाते 'अलोऽन्त्यात् पूर्वं उपधा' इत्यनेन उपधासंज्ञायां 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन 'सु' इत्यस्य सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' इत्यनेन नान्तस्य पदस्योपधायाः दीर्घे सखान्+स् इति जाते 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इत्यनेन सस्याऽपृक्तसंज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इति सलोपे सखान् इति जाते 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नकारलोपे 'सखा' इति सिद्धम् ।

सखायौ—सखि शब्दात् 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः' इत्यादिना प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सखि+औ इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सख्युरसम्बुद्धौ' इत्यनेन णिद्वद्भावे 'अचोञ्णिति' इत्यनेन वृद्धौ सखै+औ इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन आयादेशे संयोगे 'सखायौ' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवम् द्वितीयाद्विवचने औट् प्रत्यये 'सखायौ' इति रूपं सिध्यति ।

सखायः—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमा बहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे सखि+अस् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सख्युरसम्बुद्धौ' इत्यनेन णिद्वद्भावे 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन वृद्धौ सखै+अस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन आयादेशे संयोगे सखायस् इति

जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'सखायः' इति सिद्धम् ।

**हे सखे !**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बुद्धिबोधकप्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां, अनुबन्धलोपे सखि+स् इति जाते 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन गुणे सखे+स् इति जाते 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सकारस्य लोपे 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे च 'हे सखे' इति सिद्धम् ।

**सखायम्**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तेरेकवचने अम्-प्रत्यये सखि+अम् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन 'अम्' प्रत्ययस्य सर्वनाम-स्थानसंज्ञायां 'अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा' इत्यनेन उपधासंज्ञायां 'सख्युरसम्बुद्धौ' इत्यनेन णिद्वद्भावे 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन वृद्धौ सखै+अम् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन आयादेशे, संयोगे च 'सखायम्' इति सिद्धम् ।

**सखीन्**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तेर्बहुवचने शस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन शसः सकारस्य नकारादेशे 'सखीन्' इति सिद्धम् ।

**सख्या**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाविभक्तेरेकवचने टाप्रत्यये 'शेषो घ्यसखि' इत्यत्र 'असखि' इति पर्युदासात् घिसंज्ञा न, किन्तु 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे अनुबन्धलोपे 'सख्या' इति सिद्धम् ।

**सख्ये**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये, सखि+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे, संयोगे 'सख्ये' इति सिद्धम् ।

**सख्युः**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसिप्रत्यये सखि+ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे सखि+अस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे सख्+य्+अस् इति जाते 'ख्यत्यात् परस्य' इत्यनेन असोऽकारस्य उकारे सख्युस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'सख्युः' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—एवं षष्ठ्येकवचनेऽपि ङस् प्रत्यये 'सख्युः' इति रूपं सिध्यति ।

**सख्यौ**—सखिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अनु-बन्धलोपे सखि+इ इति जाते 'औत्' इत्यनेन ङेरिकारस्य स्थाने 'औ' आदेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'सख्यौ' इति सिद्धम् ।

**पत्या**—पतिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये 'चुटू'

इत्यनेन टकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे पति+आ इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'पत्या' इति सिद्धम् ।

**पत्ये**—पतिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अनुबन्धलोपे पति+ए इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'पत्ये' इति सिद्धम् ।

**पत्युः**—पतिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे पति+अस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'ख्यत्यात् परस्य' इत्यनेन ङसेरकारस्य उकारे, सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'पत्युः' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—समासे तु भूपतये इत्यादीनि रूपाणि हरिवद् बोध्यानि एवं षष्ठ्येकवचनेऽपि पति+ङस्=पत्युः इति रूपं सिध्यति ।

**पत्यौ**—पतिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अनुबन्धलोपे पति+इ इति जाते 'पतिः समास एव' इति सूत्रनिर्देशेन घिसंज्ञाभावात् 'औत्' इत्यनेन ङेरौत्वे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे सति 'पत्यौ' इति सिद्धम् ।

**कति**—कतिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । कति शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां बहुत्वविशिष्टवाचकत्वात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये कति+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'बहुगणवतुडति संख्या' इति सूत्रेण सख्यासंज्ञायां 'डति च' इत्यनेन षट्संज्ञायां ततः 'प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः' इत्यनेन लुक् संज्ञायां 'षड्भ्यो लुक्' इत्यनेन जसो लुकि 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्' इत्यनेन प्रत्ययलक्षणत्वात् 'जसि च' इत्यनेन गुणे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'न लुमताङ्गस्य' इति सूत्रेण प्रत्ययलक्षणनिषेधाद् गुणाभावे 'कति' इति सिद्धम् ।

**कतीनाम्**—कति शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये कति+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इति सूत्रसहकारेण 'षट्चतुर्भ्यश्च' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'कतीनाम्' इति सिद्धम् ।

**त्रयः**—त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । त्रिशब्दात् प्रातिपदिकत्वात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'जसि च' इत्यनेन गुणे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे, रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'त्रयः' इति सिद्धम् ।

**त्रीन्**—त्रिशब्दात् प्रातिपदिकत्वात् द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे त्रि+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन शसः सकारस्य नकारादेशे—'त्रीन्' इति सिद्धम् ।

**त्रयाणाम्**—त्रिशब्दात् प्रातिपदिकत्वात् षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये त्रि+

आम् इति जाते 'त्रेस्त्रयः' इत्यनेन त्रयादेशे त्रय+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नडागमे अनुबन्धलोपे 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णकारे 'त्रयाणाम्' इति सिद्धम् ।

प्रियत्रयाणाम्—प्रियत्रिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम्प्रत्यये प्रियत्रि+आम् इति जाते 'त्रेस्त्रयः' इति सूत्रेण त्रयादेशः प्राप्तः । अत्र प्रियास्त्रयो यस्येति विग्रहे 'इतरपदार्थनिष्ठविशेष्यतानिरूपितप्रकारताश्रयत्वं गौणत्वम्' अथवा 'स्वान्तसमुदायपर्याप्तशक्तिनिरूपकार्थनिष्ठविशेष्यतानिरूपितप्रकारतावच्छेदकताप्रयोजकत्वम्' इति लक्षणेन प्रियत्रिघटकस्य 'त्रि' शब्दस्य गौणत्वेऽपि 'गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसम्प्रत्ययः' इति न्यायेन 'न त्रयादेशनिषेधः' न्यायस्याऽस्य पदकार्य एव प्रवृत्तेः । ततः 'प्रियत्रि' शब्दघटकस्य 'त्रि' शब्दस्य त्रयादेशे 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन णत्वे 'प्रियत्रयाणाम्' इति सिद्धम् ।

**त्यदादीनामः ॥६।२।१०२॥**

**वा० द्विपर्यन्तानामेवेष्टिः ॥**

त्यदादीनां शब्दानामकारान्त आदेशो भवति, विभक्तौ परतः । अत्र 'त्यदादि'पदेन 'त्यद्' शब्दादारभ्य 'द्वि' शब्दपर्यन्तमेवेष्टम् भाष्यकारस्येत्यर्थः ।

द्वौ—द्वि शब्दस्य नित्यं द्विवचनान्तत्वात् द्विशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये द्वि+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारान्तादेशे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'नादिचि' इत्यनेन निषेधे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'द्वौ' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि 'द्वौ' इति रूपं सिध्यति ।

द्वाभ्याम्—द्विशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम्-प्रत्यये द्वि+भ्याम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारान्तादेशे द्व+भ्याम् इति जाते 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे 'द्वाभ्याम्' इति सिद्धम् ।

विशेषः—एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि 'द्वाभ्याम्' इति रूपं सिध्यति ।

द्वयोः—द्वि शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये द्वि+ओस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारान्तादेशे द्व+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्यनेन एत्वे द्वे+ओस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे, विसर्गे च 'द्वयोः' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि 'द्वयोः' इति रूपं सिध्यति ।

**पपीः**—कृदन्तपपीशब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये पपी+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, रेफस्य 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'पपीः' इति सिद्धम् ।

**पपी**—कृदन्तपपी शब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङिप्रत्यये अनुबन्धलोपे पपी+इ इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'पपी' इति सिद्धम् ।

**बहुश्रेयसी**—बह्व्यः श्रेयस्यो यस्य सः इति विग्रहे बहुश्रेयसी शब्दात् समासान्तत्वात् प्रातिपादिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये बहुश्रेयसी+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन ङ्यन्तत्वाद्दीर्घत्वाच्च स् लोपे 'बहुश्रेयसी' इति सिद्धम् ।

**हे बहुश्रेयसि**—बहुश्रेयसीशब्दात् सम्बोधनप्रथमैकवचनविवक्षायां सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां बहुश्रेयसी+स् इति जाते 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः' इत्यनेन सलोपे सति 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे 'हे बहुश्रेयसि' इति सिद्धम् ।

**बहुश्रेयस्यै**—बहुश्रेयसीशब्दात् चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये बहुश्रेयसी+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन बहुश्रेयसीशब्दस्य नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन ङेराडागमे अनुबन्धलोपे 'आद्यन्तौ टकितौ' इत्याद्यावयवे भूते ङकारस्येत्संज्ञायां लोपे च बहुश्रेयसी+आ+ए इति जाते 'आटश्च' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने वृद्धौ कृतायां 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'बहुश्रेयस्यै' इति सिद्धम् ।

**बहुश्रेयस्याः**—बहुश्रेयसीशब्दात् पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये बहुश्रेयसी+ङसि इति जाते, अनुबन्धलोपे 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्याडागमे 'आटश्च' इति वृद्धौ यणि रुत्वे विसर्गे च 'बहुश्रेयस्याः' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—एवं षष्ठ्येकवचनेऽपि 'बहुश्रेयस्याः' इति रूपं सिध्यति ।

**बहुश्रेयसीनाम्**—बहुश्रेयसीशब्दात् षष्ठी बहुवचने आम् प्रत्यये बहुश्रेयसी+आम् इति जाते 'प्रथमलिङ्गग्रहणं च' इति वार्तिकसहकारेण 'यूस्त्र्याख्यौ

नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'बहुश्रेयसीनाम्' इति सिद्धम् ।

**बहुश्रेयस्याम्**—बहुश्रेयसीशब्दात् सप्तम्येकवचने ङिप्रत्यये बहुश्रेयसी + ङि इति जाते 'प्रथमलिङ्गग्रहणं च' इति वार्तिकसहकारेण 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेरामादेशे 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन प्राप्तं नुटं प्रबाध्य 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे बहुश्रेयसी + आ + आम् इति जाते 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'बहुश्रेयस्याम्' इति सिद्धम् ।

**अतिलक्ष्मीः**—अङ्यन्तत्वान्न सुलोपः । लक्ष्मीमतिक्रान्तः इति विग्रहे अतिलक्ष्मी शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अतिलक्ष्मी + सु इति जाते अनुबन्धलोपे, सस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'अतिलक्ष्मीः' इति सिद्धम् ।

**प्रधीः**—प्रध्यायतीति विग्रहे प्रधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये प्रधी + सु इति जाते अनुबन्धलोपे, सस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'प्रधीः' इति सिद्धम् ।

**प्रध्यौ**—प्रधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये प्रधी + औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन निषिद्धे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन उवङादेशे प्राप्ते तमपि प्रबाध्य 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे प्रध्य् + औ इति जाते संयोगे 'प्रध्यौ' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि 'प्रध्यौ' इति रूपं सिध्यति ।

**प्रध्यः**—प्रधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये प्रधी + जस् इति जाते अनुबन्धलोपे प्रधी + अस् इति जाते पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन निषिद्धे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचिश्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना इयङि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे प्रध् + य् + अस् इति जाते, संयोगे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'प्रध्यः' इति सिद्धम् ।

---

**प्रध्यम्**—प्रधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये प्रधी + अम् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते, तम्प्रबाध्य 'अचि

श्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना इयङादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे प्रध्+य्+अम् इति जाते संयोगे 'प्रध्यम्' इति सिद्धम् ।

**प्रध्यि**—प्रधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङिप्रत्यये प्रधी+ङि इति जाते अनुबन्धलोपे प्रधी+इ इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणि प्राप्ते, तम्प्रबाध्य 'अचि श्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना इयङि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे प्रध्+य्+इ इति जाते, संयोगे 'प्रध्यि' इति सिद्धम् ।

**ग्रामण्याम्**—ग्रामं नयसि—नियच्छतीति विग्रहे ग्रामणीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये ग्रामणी+ङि इति जाते 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन नीशब्दात् परस्य ङेरामादेशे 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणि ग्रामण्+य्+आम् इति जाते, संयोगे, 'ग्रामण्याम्' इति सिद्धम् ।

**शुद्धधियौ**—शुद्धा धीर्यस्येति विग्रहे शुद्धधीशब्दात् प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये शुद्धधी+औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते 'गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण् नेष्यते' इति वार्तिकेन निषेधे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'शुद्धधियौ' इति सिद्धम् ।

**सुधियौ**—सुधीशब्दात् प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सुधी+औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'गतिश्च' इति गतिसंज्ञायां 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते 'न भूसुधियोः' यणादेशनिषेधे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च कृते 'सुधियौ' इति सिद्धम् ।

**सुख्युः**—सुखीशब्दात् पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे अनुबन्धलोपे सुखी+अस् इति जाते 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे 'ख्यत्यात् परस्य' इत्यनेन ङसोरकारस्य उकारे, सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'सुख्युः' इति सिद्धम् ।

**सुत्युः**—सुतीशब्दात् पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे सुती+अस् इति जाते 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इत्यनेन यणादेशे 'ख्यत्यात् परस्य' इत्यनेन ङसेरकारस्य उकारे, सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'सुत्युः' इति सिद्धम् ।

**क्रोष्टा**—क्रोष्टुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाविभक्तेरेकवचने सु प्रत्यये 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सुप्रत्ययस्य सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'तृज्वत् क्रोष्टुः'

इत्यनेन तृज्वद्भावे विहिते 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन सर्वनामस्थानपरत्वाद् गुणे प्राप्ते, तम्प्रबाध्य, 'ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे क्रोष्टन् + स् इति जाते 'अप्तृन्तृच्' इत्यादिना उपधाया दीर्घत्वे क्रोष्टान् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नकारस्य लोपे–'क्रोष्टा' इति सिद्धम् ।

**क्रोष्टारौ**—क्रोष्टुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये क्रोष्टु + औ इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'तृज्वत् क्रोष्टुः' इत्यनेन तृज्वद्भावे 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन अकारे गुणे 'उरण्रपरः' इत्यनेन रपरत्वे च क्रोष्टर् + औ इति जाते 'अप्तृन्तृच्' इत्यादिना दीर्घे क्रोष्टार् + औ इति जाते संयोगे च 'क्रोष्टारौ' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—एवम् प्रथमाबहुवचने क्रोष्टु + जस्—क्रोटार् + अस्=क्रोष्टारः तथा द्वितीयैकवचने क्रोष्टु + अम्–क्रोष्टार् + अम्=क्रोष्टारम्, द्वितीया द्विवचने च क्रोष्टु + औट्—क्रोष्टार् + औ=क्रोष्टारौ इति रूपं सिध्यति ।

**क्रोष्टून्**—क्रोष्टुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये क्रोष्टु + शस् इति जाते शसोऽसर्वनामस्थानत्वात् क्रोष्टुशब्दस्य तृज्वद्भावाऽभावे अनुबन्धलोपे क्रोष्टु + अस् इति 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन नत्वे 'क्रोष्टून्' इति सिद्धम् ।

**क्रोष्ट्रा-क्रोष्टुना**—क्रोष्टुशब्दात् प्रातिपदिकत्वात् तृतीयैकवचने टा प्रत्यये क्रोष्टु + टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'विभाषा तृतीयादिष्वचि' इत्यनेन विकल्पेन तृज्वद्भावे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'क्रोष्ट्रा' इति सिद्धम् । तृज्वद्भावाऽभावपक्षे—क्रोष्टु + टा इत्यवस्थायां 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'आङो नाऽस्त्रियाम्' इत्यनेन 'टा' इत्यस्य 'ना' इत्यादेशे–'क्रोष्टुना' इति रूपं सिध्यति ।

**क्रोष्ट्रे-क्रोष्टवे**—कोष्टुशब्दात्-प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये क्रोष्टु + ङे इति जाते, अनुबन्धलोपे कोष्टृ + ए इति जाते 'विभाषा तृतीयादिष्वचि' इत्यनेन विकल्पेन तृज्वद्भावे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे–'क्रोष्ट्रे' इति सिद्धम् । तृज्वद्भावाऽभावपक्षे–क्रोष्टु + ङे इत्यवस्थायाम्, अनुबन्धलोपे 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अवादेशे 'क्रोष्टवे' इति रूपं सिध्यति ।

**क्रोष्टुः**—क्रोष्टुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये क्रोष्टु + ङसि इति जाते, अनुबन्धलोपे 'विभाषा तृतीयादिष्वचि' इत्यनेन

विकल्पेन तृज्वद्भावे क्रोष्टृ + अस् इति जाते 'ऋत उत्' इत्यनेन पूर्वपरयोरुत्वे रपरत्वे च क्रोष्टुर् + स् इति जाते 'रात्सस्य' इत्यनेन सकारस्य लोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'क्रोष्टुः' इति सिद्धम् । तृज्वद्भावाऽभावपक्षे—'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे क्रोष्टो + अस् इति जाते 'ङसिङसोश्च' इत्यनेन पूर्वरूपे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'क्रोष्टोः' इति रूपं सिद्धयति ।

**विशेषः**—एवम् षष्ठ्येकवचनेऽपि ङस् प्रत्यये क्रोष्टुः, क्रोष्टोः इति रूपद्वयं सिद्धयति ।

**क्रोष्ट्रोः**—क्रोष्टुशब्दाद् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये 'विभाषा तृतीयादिष्वचि' इत्यनेन तृज्वद्भावे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि रुत्वे विसर्गे च 'क्रोष्ट्रोः' इति सिद्धम् । तृज्वद्भावाऽभावपक्षे—क्रोष्टु + ओस् इत्यवस्थायां 'इको यणचि' इत्यनेन यणि, सस्य रुत्वे विसर्गे च 'क्रोष्ट्वोः' इति रूपं सिध्यति ।

**क्रोष्टूनाम्**—क्रोष्टुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये क्रोष्टु + आम् इति जाते 'विभाषा तृतीयादिष्वचि' इत्यनेन तृज्वद्भावे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे प्राप्ते 'नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन' इति वार्तिकबलात् नुडागमे अनुबन्धलोपे क्रोष्टु + न् + आम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'क्रोष्टूनाम्' इति सिद्धम् ।

**क्रोष्टरि**—क्रोष्टु शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये क्रोष्टु + ङि इति जाते अनुबन्धलोपे 'विभाषा तृतीयादिष्वचि' इत्यनेन तृज्वद्भावे 'ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन अकाररूपे गुणे विहिते 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे च कृते सर्वस्मिन् संयुक्ते सति 'क्रोष्टरि' इति सिद्धम् । तृज्वद्भावाऽभावपक्षे—क्रोष्टु + ङि इत्यवस्थायां 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'अच्च घेः' इत्यनेन ङेः स्थाने औकारे 'क्रोष्टौ' इति रूपं सिध्यति ।

**हे अतिचमु**—चमूमतिक्रान्तः इति विग्रहे अतिचमू शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये अतिचमू + सु इति जाते उकारस्येत्संज्ञायां, लोपे च 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन नदीसंज्ञायां 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वत्वे अतिचमु + स् इति जाते 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सकारस्य लोपे 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे 'हे अतिचमु' इति सिद्धम् ।

**अतिचम्वै**—अतिचमूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अतिचमू + ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे अतिचमू + आ + ए इति जाते 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'इको यणचि' इत्यनेन यणि कृते 'अतिचम्वै' इति सिद्धम् ।

**अतिचम्वाः**—अतिचमूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अतिचमू + ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'इको यणचि' इत्यनेन यणि, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अतिचम्वाः' इति सिद्धम् ।

**अतिचमूनाम्**—अतिचमूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये अतिचमू + आम् इति जाते 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन नदीसंज्ञायां 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'अतिचमूनाम्' इति सिद्धम् ।

**अतिचम्वाम्**—अतिचमूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अतिचमू + ङि इति जाते, 'प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च' इति वार्तिकेन नदीसंज्ञायां 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेः 'आम्' इत्यादेशे अतिचमू + आम् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'अतिचम्वाम्' इति सिद्धम् ।

**खलपूः**—खलं पुनातीति विग्रहे खलपूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये खलपू + सु इति जाते 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्यनेन उकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'खलपूः' इति सिद्धम् ।

**खलप्वौ**—खलपूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये खलपू + औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ओः सुपि' इत्यनेन यणादेशे 'खलप्वौ' इति सिद्धम् ।

**खलप्वः**—खलपूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये खलपू + जस् इति जाते, अनुबन्धलोपे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचिश्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना उवङादेशे प्राप्ते तमपि प्रबाध्य 'ओः सुपि' इत्यनेन यणादेशे खलप्वस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन

रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'खलप्वः' इति सिद्धम् ।

स्वयम्भूः—स्वयम्भवतीति विग्रहे स्वयम्भूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'स्वयम्भूः' इति सिद्धम् ।

स्वभूः—स्वस्माद् भवतीति विग्रहे स्वभूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये स्वभू + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'स्वभूः' इति सिद्धम् ।

स्वभुवौ—स्वभूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये स्वभू + औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि श्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना उवङादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ओः सुपि' इत्यनेन यणि प्राप्ते 'न भूसुधियोः' इत्यनेन निषेधे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना अवङादेशे अनुबन्धलोपे 'स्वभुवौ' इति सिद्धम् ।

वर्षाभ्वौ—वर्षाभूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां औ प्रत्यये वर्षाभू + औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि श्नुधातुभ्रुवां' इत्यादिना उवङि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ओः सुपि' इत्यनेन यणि प्राप्ते 'न भूसुधियोः' इत्यनेन निषेधे 'वर्षाभ्वश्च' इत्यनेन यणि कृते 'वर्षाभ्वौ' इति सिद्धम् ।

दृन्भूः—दृन्भूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये दृन्भू + सु इति जाते, उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'दृन्भूः' इति सिद्धम् ।

दृन्भ्वौ—दृन्भूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये दृन्भू + औ इति जाते 'ओः सुपि' इत्यनेन यणि प्राप्ते 'न भूसुधियोः' इत्यनेन निषेधे 'दृन्करपुनःपूर्वस्य भुवो यण् वक्तव्यः' इत्यनेन यणि कृते 'दृन्भ्वौ' इति सिद्धम् ।

धाता—धातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये धातृ + सु इति जाते 'ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नकारलोपे 'धाता' इति सिद्धम् ।

हे धातः—धातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनस्यैकवचने सु प्रत्यये,

अनुबन्धलोपे धातृ+स् इति जाते 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन ऋकारस्य गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे च धातर्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे च 'हे धातः' इति सिद्धम् ।

**धातारौ**—धातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये धातृ+औ इति जाते सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे धातर्+औ इति जाते 'अप्तृन्तृच्' इत्यादिना उपधादीर्घे धातार्+औ इति जाते संयोगे च कृते 'धातारौ' इति सिद्धम् ।

**धातॄणाम्**—धातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये धातृ+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे धातृ+न्+आम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इति वार्तिकेन नस्य णत्वे 'धातॄणाम्' इति सिद्धम् ।

**नप्त्रादिग्रहणं नियमार्थम्**—'अप्तृन्तृच्' इति सूत्रे नप्त्रादिग्रहणं व्युत्पत्तिपक्षे नियमार्थम् । अत्र सूत्रे तृन्नन्तत्वात् तृजन्तत्वाच्च सर्वत्र दीर्घे सिद्धे नप्त्रादिग्रहणं किमर्थम् ? इत्यत्र नप्त्रादिग्रहणं व्यर्थं सज्ज्ञापयति यत् शास्त्रे पक्षद्वयम्—व्युत्पत्तिपक्षोऽव्युत्पत्तिपक्षश्च । तत्र व्युत्पत्तिपक्षे नप्त्रादिग्रहणं व्यर्थं सज्ज्ञापयति यद् व्युत्पत्तिपक्षे एव नियमोऽवगन्तव्यो यद् दीर्घं उणादिप्रत्ययनिष्पन्नानां तृन्तृजन्तानां भवति चेद् नप्त्रादीनामेवेति । तेन पितृभ्रातृप्रभृतीनां दीर्घो न भवति ।

**पिता**—पितृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये पितृ+सु इति जाते 'ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे पितन्+सु इति जाते सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'पिता' इति सिद्धम् ।

**पितरौ**—पितृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये पितृ+औ इति जाते सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे पितर्+औ इति जाते संयोगे 'पितरौ' इति सिद्धम् । अत्र व्युत्पत्तिपक्षे—नप्त्रादिग्रहणस्य नियमार्थत्वान्न दीर्घः । अव्युत्पत्तिपक्षे तु अप्तृन्तृजादिष्वनन्तर्भावाद् दीर्घत्वस्य प्राप्तिरेव नास्ति ।

**पितरः**—पितृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये पितृ+जस् इति जाते, सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन

गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे पितर्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, उकारस्येत्संज्ञायां, लोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'पितरः' इति सिद्धम् ।

**पितरम्**—पितृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये पितृ+अम् इति जाते, सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे पितर्+अम् इति जाते संयोगे च कृते 'पितरम्' इति सिद्धम् ।

**पितॄणाम्**—पितृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये पितृ+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इति वार्तिकेन नस्य णत्वे 'पितॄणाम्' इति सिद्धम् ।

**ना**—नृशब्दो मनुष्यवाची । नृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये नृ+सु इति जाते, सर्वनामस्थानसंज्ञायां, 'ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनेन अनङादेशे, अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे नान्+सु इति जाते उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे च 'ना' इति सिद्धम् ।

**नरौ**—नृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये नृ+औ इति जाते, सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे च कृते नर्+औ इति जाते संयोगे च कृते 'नरौ' इति सिद्धम् ।

**नरः**—नृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये नृ+जस् इति जाते, सर्वनामस्थानसंज्ञायां, 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे 'उरण् रपरः' इत्यनेन रपरे नर्+अस् इति जाते, संयोगे सकारस्य 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च कृते 'नरः' इति सिद्धम् ।

**नृणाम्**—नृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नृ+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे नृ+नाम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन नित्यं दीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'नृ च' इत्यनेन विकल्पेन दीर्घे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं

वाच्यम्' इति वार्तिकेन नस्य णत्वे 'नृणाम्' इति सिद्धम् । पक्षे—'नृणाम्' इति रूपं सिध्यति ।

## (वा०) ओतो णिदिति वाच्यम् ॥

ओकाराद् विहितं सर्वनामस्थानं णिद्वद् भवति—इति वक्तव्यम् । गोतः इत्यत्र तपरकरणनिर्देशात् चित्रगुरित्यादौ णिद्वद्भावो न भवति ।

ओकार से विहित सर्वनामस्थानणिद्वद् हो—ऐसा कहना चाहिए । तपरकरण से चित्रगुः आदि में णिद्वद्भाव नहीं होता ।

गौः—गो शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'गोतो णित्' इत्यनेन णिद्वद्भावे 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन औकारे वृद्धौ गौ+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'गौः' इति सिद्धम् ।

गावौ—गोशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये 'गोतो णित्' इत्यनेन णिद्वद्भावे 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन औकारे वृद्धौ गौ+औ इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन आव् आदेशे गाव्+औ इति जाते, संयोगे 'गावौ' इति सिद्धम् । एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि औटि 'गावौ' इति रूपं सिध्यति ।

गावः—गोशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये गो+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे गो+अस् इति जाते 'गोतो णित्' इत्यनेन णिद्वद्भावे 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन औकारे वृद्धौ गौ+अस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन आव् आदेशे गावस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च कृते 'गावः' इति सिद्धम् ।

गाम्—गो शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये गो+अम् इति जाते 'औतोऽम्शसोः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने आकारादेशे कृते 'गाम्' इति सिद्धम् ।

गाः—गो शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये गो+शस् इति जाते, अनुबन्धलोपे, 'औतोऽम्शसोः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने आकारादेशे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'गाः' इति सिद्धम् ।

राः—रै शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'रायो हलि' इत्यनेन 'अलोऽन्त्यस्य' इति नियमात् 'रै' शब्दस्य अन्त्यस्यैकारस्याकारादेशे रा+स् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च कृते 'राः' इति सिद्धम् ।

रायौ—रै शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये रै+औ इति जाते 'एचोऽयवायाव:' इत्यनेन आयादेशे संयोगे 'रायौ' इति सिद्धम् ।

राय:—रै शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्ध-लोपे, रै+अस् इति जाते 'एचोऽयवायाव:' इत्यनेन आयादेशे रायस् इति जाते 'ससजुषो रु:' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीय:' इत्यनेन विसर्गे च 'राय:' इति सिद्धम् ।

राभ्याम्—रै शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये 'रायो हलि' इत्यनेन आत्वे 'राभ्याम् इति सिद्धम् ।

ग्लौ:—ग्लौ शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्ध-लोपे 'ससजुषो रु:' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीय:' इत्यनेन विसर्गे च 'ग्लौ:' इति सिद्धम् ।

ग्लावौ—ग्लौ शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये ग्लौ+औ इति जाते 'एचोऽयवायाव:' इत्यनेन आवादेशे 'ग्लावौ' इति सिद्धम् ।

ग्लाव:—ग्लौ शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमा बहुवचने जस् प्रत्यये ग्लौ +जस् इति जाते अनुबन्धलोपे ग्लौ+अस् इति जाते 'एचोऽयवायाव:' इत्यनेन आवादेशे ग्लावस् इति जाते 'ससजुषो रु:' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरव-सानयोर्विसर्जनीय:' इत्यनेन विसर्गे च 'ग्लाव:' इति सिद्धम् ।

॥ इत्यजन्ता: पुंल्लिङ्गा: ॥

---

## अथ अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

रमे—रमा शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये रमा+औ इति जाते 'औङ आप:' इत्यनेन औकारस्य स्थाने 'शी' आदेशे अनुबन्ध-लोपे रमा+ई इति जाते 'आद्गुण:' इत्यनेन पूर्वपरयो: स्थाने गुणादेशे च विहिते 'रमे' इति सिद्धम् ।

विशेष:—एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि औट् प्रत्यये 'रमे' इति रूपं सिध्यति।

रमा:—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये रमा+जस् इति जाते 'चुटू' इत्यनेन जकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोप:' इत्यनेन लोपे

रमा+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'रमाः' इति सिद्धम् ।

हे रमे—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये प्रत्यये रमा+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'सम्बुद्धौ च' इत्यनेन, एत्वे, रमे+स् इति जाते 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सकारलोपे, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे च 'हे रमे' इति सिद्धम् ।

रमया—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये, रमा+टा इति जाते, अनुबन्धलोपे 'आङि चापः' इत्यनेन आकारस्य एकारे रमे+आ इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे 'रमया' इति सिद्धम् ।

रमायै—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अनुबन्धलोपे रमा+ए इति जाते 'याडापः' याडागमे अनुबन्धलोपे रमा+या+ए इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'रमायै' इति सिद्धम् ।

रमायाः—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे रमा+अस् इति जाते 'याडापः' इत्यनेन याडागमे, अनुबन्धलोपे, रमाया+अस् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे रमायास् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'रमायाः' इति सिद्धम् । एवं षष्ठ्येकवचनेऽपि 'रमायाः' इति रूपं सिध्यति ।

रमयोः—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये रमा+ओस् इति जाते 'आङि चापः' इत्यनेन आकारस्य एत्वे रमे+ओस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे रमयोस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'रमयोः' इति सिद्धम् । एवम् सप्तमीद्विवचनेऽपि 'रमयोः' इति रूपं सिध्यति ।

रमायाम्—रमाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये रमा+ङि इति जाते 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेरामादेशे 'याडापः' इत्यनेन याडागमे अनुबन्धलोपे रमा+या+आम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घैकादेशे सति 'रमायाम्' इति रूपं सिद्धम् ।

सर्वस्यै—स्त्रीलिङ्गसर्वाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये सर्वा+ङे इति स्थिते अनुबन्धलोपे 'याडापः' इत्यनेन याडागमे प्राप्ते तम्प्रबाध्य

'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमे आवन्तस्य च ह्रस्वे अनुबन्धलोपे सर्व+स्या+ए इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ 'सर्वस्यै'।

**सर्वस्याः**—स्त्रीलिङ्गसर्वाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये सर्वा+ङसि इति जाते 'याडापः' इत्यनेन याडागमे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमे आवन्तस्य च ह्रस्वे अनुबन्धलोपे सर्व+स्या+अस् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे सर्वस्यास् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'सर्वस्याः' इति सिद्धम्। एवम् षष्ठ्येकवचनेऽपि ङस् प्रत्यये 'सर्वस्याः' इति रूपं सिध्यति।

**सर्वासाम्**—स्त्रीलिङ्गसर्वाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां, षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये सर्वा+आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'सर्वासाम्' इति सिद्धम्।

**सर्वस्याम्**—स्त्रीलिङ्गसर्वाशब्दात् प्रातिपदिक संज्ञायां, सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेरामादेशे 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमेऽनुबन्धलोपे आपो ह्रस्वे च सर्वस्या+आम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे च कृते 'सर्वस्याम्' इति सिद्धम्।

**उत्तरपूर्वस्यै**—उत्तरस्याश्च पूर्वस्याश्च दिशोर्यदन्तरालमिति विग्रहे 'दिङ्नामान्यन्तराले' इति सूत्रेण समासनिष्पन्नात् उत्तरपूर्वाशब्दात् चतुर्थ्येकवचने 'ङे' प्रत्यये उत्तरपूर्वा+ङे इति जाते 'विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ' इत्यनेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमे आपो ह्रस्वत्वे अनुबन्धलोपे उत्तरपूर्वस्या+ए इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ 'उत्तरपूर्वस्यै' इति सिद्धम्। सर्वनामसंज्ञाभावपक्षे—'याडापः' इत्यनेन याडागमे अनुबन्धलोपे वृद्धौ च 'उत्तरपूर्वायै' इति सिद्ध्यति।

**उत्तरपूर्वायै**—लक्षणप्रतिपदोक्तपरिभाषया 'विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ' इति सूत्रेण 'दिङ्नामान्यन्तराले' इति दिक् शब्दमुच्चार्य निष्पन्नप्रतिपदोक्तदिक्समासे एव सर्वनामसंज्ञाविधानात् योत्तरा सा पूर्वा यस्या उन्मुग्धायास्तस्यै 'उत्तरपूर्वायै' इति विग्रहे 'अनेकमन्यपदार्थे' इति सूत्रेण निष्पन्नबहुव्रीहिसमासः अतोऽत्र न सर्वनामसंज्ञा। तादृशाद् उत्तरपूर्वाशब्दाद् ङे विभक्तौ 'याडापः' इत्यनेन याडागमे अनुबन्धलोपे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'उत्तरपूर्वायै' इति सिद्धम्।

**अन्तरस्यै**—अन्तराशब्दात् चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये 'अन्तरं बहिर्योगोप-

संव्यानयोः' इत्यनेन सर्वनामसंज्ञायां 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमे आपो ह्रस्वे अनुबन्धलोपे अन्तरस्या+ए इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धयेकादेशे 'अन्तरस्यै' इति सिद्धम् ।

द्वितीयस्यै—द्वितीयाशब्दात् चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये द्वितीया+ङे इति जाते 'तीयस्थ ङित्सु वा' इति वार्तिकेन विकल्पेन सर्वनामसंज्ञायां 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमे आपो ह्रस्वत्वे च, अनुबन्धलोपे द्वितीयस्या+ए इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धयेकादेशे 'द्वितीयस्यै' इति सिद्धम् । सर्वनामत्वाभावे तु 'याडापः' इत्यनेन याडागमेऽनुबन्धलोपे वृद्धौ कृतायां 'द्वितीयायै' इति सिध्यति ।

हे अम्ब—सम्बोधने अम्बा शब्दात् सु प्रत्यये अम्बा+सु इति जाते 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वादेशे, 'हे' इत्यस्य प्रयोगे हे अम्ब+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन 'स्' लोपे 'हे अम्ब' इति सिद्धम् ।

हे अम्बाडे—अम्बाडाशब्दात् सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये अम्बाडा+सु इति जाते 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वादेशे प्राप्ते 'असंयुक्ता ये डलकास्तद्वतां ह्रस्वो न' इति वार्तिकेन ह्रस्वनिषेधे 'सम्बुद्धौ च' इत्यनेन आप एत्वे, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'हे अम्बाडे' इति सिद्धम् ।

जरसौ, जरे—'जरा' शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये 'जराया जरसन्यतरस्याम्' इत्यनेन विकल्पेन जराशब्दस्य जरसादेशे 'जरसौ' इति सिद्धम् । जरसादेशाभावपक्षे—'औङ आपः' इत्यनेन शी आदेशे अनुबन्धलोपे जरा+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'जरे' इति सिध्यति ।

मत्यै, मतये—स्त्रीलिङ्गमतिशब्दात् चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे मति+आ+ए इति जाते 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ मति+ऐ इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'मत्यै' इति सिद्धम् । नदीसंज्ञाभावे—'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे मते+ए इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे 'मतये' इति रूपं सिध्यति ।

मत्याः, मतेः—स्त्रीलिङ्गमतिशब्दात् पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे

अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मत्याः' इति सिद्धम्। नदीसंज्ञाभावपक्षे—मति + ङसि इति स्थिते अनुबन्धलोपे 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे 'ङसि-ङसोश्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मतेः' इति रूपं सिध्यति।

**मत्याम्, मतौ**—स्त्रीलिङ्गमतिशब्दात् सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये मति + ङि इति जाते 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन नदी संज्ञायां 'औत्' इत्यनेन ङेरौत्वे प्राप्ते 'इदुद्भ्याम्' इत्यनेन ङेरामादेशे तत्र स्थानिवद्भावेन ङित्वमानीय 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'मत्याम्' इति सिद्धम्। नदीसंज्ञाभावपक्षे—'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घि-संज्ञायां 'अच्च घेः' इत्यनेन ङेरौत्वे घेरकारादेशे च 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धौ 'मतौ' इति रूपं सिध्यति।

**तिस्रः**—त्रिशब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन तिसृ आदेशे अनुबन्धलोपे तिसृ + अस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि र ऋतः' इत्यनेन ऋकारस्य रेफादेशे सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'तिस्रः' इति सिद्धम्।

**तिस्रः**—त्रिशब्दात् स्त्रीलिङ्गे द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये त्रि + शस् इति जाते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन त्रिशब्दस्य 'तिसृ' आदेशे तिसृ + शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तमपि प्रबाध्य 'अचि र ऋतः' इत्यनेन रेफादेशे संयोगे सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे विसर्गे च 'तिस्रः' इति सिद्धम्।

**तिसृणाम्**—त्रिशब्दात् स्त्रीलिङ्गे षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन त्रिशब्दस्य तिसृ' आदेशे तिसृ + आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि र ऋतः' इत्यनेन रत्वे प्राप्ते 'नुमचिरतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन' इति वार्तिकेन रेफादेशम्प्रबाध्य नुडागमे अनुबन्धलोपे तिसृ + नाम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'न तिसृचतसृ' इत्यनेन दीर्घनिषेधे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'तिसृणाम्' इति सिद्धम्।

**तिसृषु**—त्रिशब्दात् स्त्रीलिङ्गे सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन त्रिशब्दस्य 'तिसृ' आदेशे तिसृ+सुप् इति जाते, अनुबन्धलोपे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षकारादेशे 'तिसृषु' इति सिद्धम् ।

**द्वे**—द्विशब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये द्वि+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप्यनुबन्धलोपे द्वा+औ इति जाते 'औङ आपः' इत्यनेन 'औ' इत्यस्य 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'द्वे' इति सिद्धम् ।

**द्वाभ्याम्**—द्विशब्दात् तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये द्वि+भ्याम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे टाप्यनुबन्धलोपे द्वा+भ्याम् इति जाते संयोगे 'द्वाभ्याम्' इति सिद्धम् ।

### द्विशब्दस्य रूपाणि

( द्वि-शब्दो नित्यं द्विवचनान्तः )

| पुंसि | स्त्रियाम् | नपुंसके | कारकाणि |
|---|---|---|---|
| द्वौ | द्वे | द्वे | प्रथमा |
| द्वौ | द्वे | द्वे | द्वितीया |
| द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | तृतीया |
| द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | चतुर्थी |
| द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | पञ्चमी |
| द्वयोः, | द्वयोः | द्वयोः | षष्ठी |
| द्वयोः | द्वयोः | द्वयोः | सप्तमी |

### त्रिशब्दस्य रूपाणि

( त्रि-शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः )

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्रयः | तिस्रः | त्रीणि | प्रथमा |
| त्रीन् | तिस्रः | त्रीणि | द्वितीया |
| त्रिभिः | तिसृभिः | त्रिभिः | तृतीया |
| त्रिभ्यः | तिसृभ्यः | त्रिभ्यः | चतुर्थी |
| त्रिभ्यः | तिसृभ्यः | त्रिभ्यः | पञ्चमी |
| त्रयाणाम् | तिसृणाम् | त्रयाणाम् | षष्ठी |
| त्रिषु | तिसृषु | त्रिषु | सप्तमी |

### चतुर् शब्दस्य रूपाणि

( चतुर्-शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः )

| | | | |
|---|---|---|---|
| चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि | प्रथमा |
| चतुरः | चतस्रः | चत्वारि | द्वितीया |
| चतुर्भिः | चतसृभिः | चतुर्भिः | तृतीया |
| चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः | चतुर्थी |
| चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः | पञ्चमी |
| चतुर्णाम् | चतसृणाम् | चतुर्णाम् | षष्ठी |
| चतुर्षु | चतसृषु | चतुर्षु | सप्तमी |

गौरी—ङीषन्तात् स्त्रीलिङ्गात् गौरीशब्दात् प्रथमैकवचने सु प्रत्यये गौरी+सु इति जाते, 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्यनेन उकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे गौरी+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'गौरी' इति सिद्धम् ।

गौर्य्यौ—ङीषन्तात् स्त्रीलिङ्गात् गौरीशब्दात् प्रथमा द्विवचने औ प्रत्यये गौरी+औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घनिषेधे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन द्वित्वे संयोगे च कृते 'गौर्य्यौ' इति सिद्धम् ।

गौर्य्यः—ङीषन्तात् स्त्रीलिङ्गात् गौरीशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे गौरी+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घनिषेधे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन द्वित्वे संयोगे सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, विसर्गे च 'गौर्य्यः' इति सिद्धम् ।

हे गौरि—गौरीशब्दात् सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां गौरी+सु इति जाते 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वत्वे 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सुलोपे 'हे गौरि' इति सिद्धम् ।

गौर्य्यै—स्त्रीलिङ्गात् गौरीशब्दात् चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये गौरी+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमेऽनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ गौरी+ऐ इति जाते 'इको यणचि'

इत्यनेन यणादेशे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन यकारस्य द्वित्वे 'गौर्य्यौ' इति सिद्धम् ।

लक्ष्मीः—स्त्रीलिङ्गात् लक्ष्मीशब्दात् प्रथमैकवचने सु प्रत्यये लक्ष्मी+सु इति जाते, 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्यनेन उकारस्येत्सञ्ज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'लक्ष्मीः'. इति सिद्धम् ।

स्त्री—स्त्रीशब्दात् प्रथमैकवचने सु प्रत्यये स्त्री+सु इति जाते अनुबन्धलोपे, सकारस्य 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन लोपे 'स्त्री' इति सिद्धम् ।

हे स्त्रि—स्त्रीशब्दात् सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये स्त्री+सु इति जाते 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदी संज्ञायां 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वादेशे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सुलोपे 'हे स्त्रि' इति सिद्धम् ।

स्त्रियौ—स्त्रीशब्दात् प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये स्त्री+औ इति जाते 'स्त्रियाः' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे 'स्त्रियौ' इति सिद्धम् ।

स्त्रियः—स्त्रीशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये स्त्री+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'स्त्रियाः' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे स्त्रियस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'स्त्रियः' इति सिद्धम् ।

स्त्रियम्, स्त्रीम्—स्त्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये स्त्री+अम् इति जाते 'वाऽम्शसोः' इत्यनेन विकल्पेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे 'स्त्रियम्' इति सिद्धम् । इयङादेशाभावपक्षे—'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'स्त्रीम्' इति सिद्धम् ।

स्त्रियः, स्त्रीः—स्त्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये स्त्री+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'वाऽम्शसोः' इत्यनेन विकल्पेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे,-'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'स्त्रियः' इति सिद्धम् । इयङादेशाभावपक्षे—'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'स्त्रीः' इति रूपं सिध्यति ।

स्त्रिया—स्त्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये स्त्री + टा इति जाते 'स्त्रियाः' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे, संयोगे 'स्त्रिया' इति सिद्धम् ।

स्त्रियै—स्त्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये स्त्री + ङे इति जाते, अनुबन्धलोपे 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ स्त्री + ऐ इति जाते 'स्त्रियाः' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे च 'स्त्रियै' इति सिद्धम् ।

स्त्रियाः—स्त्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ स्त्री + आस् इति जाते 'स्त्रियाः' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे रुत्वे विसर्गे च 'स्त्रियाः' इति सिद्धम् ।

स्त्रीणाम्—स्त्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये स्त्री + आम् इति जाते 'स्त्रियाः' इत्यनेन इयङादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'स्त्रीणाम्' इति सिद्धम् ।

श्रीः—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये श्री + सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'श्रीः' इति सिद्धम् ।

श्रियौ—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये श्री + औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे, अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'श्रियौ' इति सिद्धम् ।

श्रियः—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये श्री + जस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे श्रियस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'श्रियः' इति सिद्धम् । एवम् द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्ययेऽपि 'श्रियः' इत्येव रूपं सिध्यति ।

श्रियम्—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये श्री + अम् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते तम्प्रबाध्य

'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'श्रियम्' इति सिद्धम्।

श्रिया—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये श्री+टा इति जाते 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'श्रिया' इति सिद्धम्।

हे श्रीः—श्री शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये 'नेयङुवङ्स्थानावस्त्री' इत्यनेन नदीत्वाभावे 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः' इत्यनेन ह्रस्वाभावे च श्री+सु इति जाते अनुबन्धलोपे रुत्वे उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे, हे शब्दस्य प्राक् प्रयोगे च 'हे श्रीः' इति सिद्धम्।

श्रियै, श्रिये—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये श्री+ङे इति जाते 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां प्राप्तायां 'नेयङुवङ्स्थानावस्त्री' इत्यनेन निषेधे 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन विकल्पेन नदीसंज्ञायां कृतायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ श्री+ऐ इति जाते 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'श्रियै' इति सिद्धम्। नदीसंज्ञाभावपक्षे—श्री+ए इति स्थिते, इयङि अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'श्रिये' इति सिद्धम्।

श्रियाः, श्रियः—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां प्राप्तायां 'नेयङुवङ्स्थानावस्त्री' इत्यनेन निषेधे 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन विकल्पेन नदीसंज्ञायां कृतायां 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे, अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ श्री+आस् इति जाते 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'श्रियाः' इति रूपं सिद्धम्। नदीसंज्ञाभावपक्षे—श्री+अस् इति स्थिते इयङादेशे अनुबन्धलोपे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'श्रियः' इति रूपं सिध्यति।

श्रीणाम्, श्रियाम्—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये श्री+आम् इति जाते 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' इत्यनेन नदीसंज्ञायां प्राप्तायां 'नेयङुवङ्स्थानावस्त्री' इत्यनेन निषिद्धे 'वाऽऽमि' इत्यनेन विकल्पेन नदीसंज्ञायां 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे, पर्जन्यवल्लक्षणन्यायेन दीर्घे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'श्रीणाम्' इति सिद्धम्। नदी-

संज्ञाभावपक्षे—श्री + आम् इति स्थिते 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'श्रियाम्' इति सिद्धम्।

श्रियाम्, श्रियि—श्रीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने 'ङि' प्रत्यये अनुबन्धलोपे श्री + इ इति जाते 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन विकल्पेन नदीसंज्ञायां 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेरामादेशे श्री + आम् इति जाते 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'श्रियाम्' इति सिद्धम्। नदीसंज्ञाभावपक्षे—श्री + इ इति जाते 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङादेशे अनुबन्धलोपे 'श्रियि' इति रूपं सिध्यति।

क्रोष्ट्री—क्रोष्टुशब्दात् स्त्रीत्वे द्योत्ये 'स्त्रियाञ्च' इत्यनेन तृज्वद्भावे 'क्रोष्टृ' इति जाते ऋदन्तत्वात् 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इत्यनेन ङीप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे क्रोष्टृ + ई इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशः, एवं निष्पन्नात् 'क्रोष्ट्री' शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये क्रोष्ट्री + सु इति जाते 'अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सुलोपे 'क्रोष्ट्री' इति सिद्धम्।

वधूः—वधूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये वधू + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे च 'वधूः' इति सिद्धम्।

भ्रूः—भ्रूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये भ्रू + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे च 'भ्रूः' इति सिद्धम्।

भ्रुवाम्, भ्रुवि—भ्रूशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'ङिति ह्रस्वश्च' इत्यनेन विकल्पेन नदीसंज्ञायां 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेरामादेशे 'आण्नद्याः' इत्यनेन आडागमे अनुबन्धलोपे 'आटश्च' इत्यनेन वृद्धौ 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन 'ऊ'कारस्य उवङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'भ्रुवाम्' इति सिद्धम्। नदीसंज्ञाभावपक्षे—भ्रू + इ इति स्थिते 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन उवङादेशे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'भ्रुवि' इति रूपं सिध्यति।

स्वसा—स्वसृशब्दात् प्रथमैकवचने सु प्रत्यये स्वसृ + सु इति जाते 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इत्यनेन ङीपि प्राप्ते 'न षट्स्वस्रादिभ्यः' इत्यनेन ङीपो निषेधे 'ऋदुशन-

स्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनङि अनुबन्धलोपे स्वसन्+स् इति जाते 'अप्तृन्तृच् स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्' इत्यनेन दीर्घे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'स्वसा' इति सिद्धम् ।

स्वसारः—स्वसृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने स्वसृ+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इत्यनेन ङीपि प्राप्ते 'न षट्स्वस्रादिभ्यः' इत्यनेन ङीपो निषेधे 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' इत्यनेन गुणे 'उरण्रपरः' इत्यनेन रपरे स्वसर्+अस् इति जाते 'अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्' इत्यनेन दीर्घे, 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'स्वसारः' इति सिद्धम् ।

माता—मातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने मातृ+सु इति जाते 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इत्यनेन ङीपि प्राप्ते 'न षट्स्वस्रादिभ्यः' इत्यनेन ङीपो निषेधे 'ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे मातन्+स् इति जाते 'अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्' इत्यनेन दीर्घे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'माता' इति सिद्धम् ।

मातॄः—मातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये मातृ+शस् इति जाते 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इत्यनेन ङीपि प्राप्ते 'न षट्स्वस्रादिभ्यः' इत्यनेन तन्निषेधे अनुबन्धलोपे मातृ+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मातॄः' इति सिद्धम् ।

॥ इत्यजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

---

## अथ अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्

ज्ञानम्—ज्ञानशब्दात् प्रातिपदिकात् प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'अतोऽम्' इत्यनेन सोरमादेशे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'ज्ञानम्' इति सिद्धम् ।

हे ज्ञान—ज्ञानशब्दात् प्रातिपदिकात् सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सुलोपे, 'हे' इत्यस्य प्राक्प्रयोगे 'हे ज्ञान' इति सिद्धम् ।

ज्ञाने—ज्ञानशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये ज्ञान+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औकारस्य 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे ज्ञान+ई इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'यस्येति च' इत्यनेन अकार लोपे प्राप्ते 'औङः श्यां प्रतिषेधो वाच्यः' इति वार्तिकेन निषेधे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे च कृते 'ज्ञाने' इति सिद्धम् ।

ज्ञानानि—ज्ञानशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये ज्ञान+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेनाऽनेकाल्त्वाज्जसः शित्वे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन 'शि' इत्यस्य सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमि 'मिदचोऽन्त्यात्परः' इति योगेनान्त्याज्रूपस्य नस्यान्त्यावयवीभूते उकारमकारयोरित्संज्ञायां लोपे च ज्ञानन्+शि इति जाते शकारस्येत्संज्ञायां लोपे च कृते 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इति नान्तोपधाया दीर्घत्वे 'ज्ञानानि' इति सिद्धम् ।

कतरत्, कतरद्—कतरशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये कतर+सु इति जाते 'अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः' इत्यनेन 'सु' इत्यस्य 'अद्ड्' इत्यादेशे कृते कतर+अद्ड् इति जाते 'हलन्त्यम्' इत्यनेन डकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे कतर+अद् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'टे' इत्यनेन टिसंज्ञकस्य रेफोत्तरवर्त्यकारस्य लोपे संयोगे च 'कतरद्' इति सिद्धम् । 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'कतरत्' इति रूपं सिध्यति ।

हे कतरद्—कतरशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये कतर+सु इति जाते 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः' इत्यनेन 'सु' इत्यस्य 'अद्ड्' आदेशे अनुबन्धलोपे भसंज्ञायां टिलोपे कृते कतर्+अत् इति जाते; अत्र यद् ह्रस्वान्तं तदङ्गं न, यच्चाङ्गं 'कतर्' इति तद् ह्रस्वान्तं न इति 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन न तलोपः इति भावः, 'हे' इत्यस्य प्राक् प्रयोगे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'हे कतरत्, हे कतरद्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

विशेषः—एवं कतमत्-कतमद्, इतरत्-इतरद्, अन्यत्-अन्यद्, अन्यतरत्-अन्यतरद् इत्येषां शब्दरूपाणां सिद्धिर्वाच्या 'अन्यतम' शब्दस्य तु 'अन्यतमम्' इत्येव रूपम्भवति ।

एकतरम्—एकतरशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये एकतर+सु इति जाते 'अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः' इत्यनेन 'सु' इत्यस्य अद्ड्

देशे प्राप्ते 'एकतरात् प्रतिषेधो वाच्यः' इति वार्तिकेन निषेधे 'अतोऽम्' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'एकतरम्' इति सिद्धम् ।

**श्रीपम्**—श्रीपाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये श्रीपा+सु इति जाते 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन प्रातिपदिकस्य ह्रस्वत्वे श्रीप+सु इति जाते 'अतोऽम्' इत्यनेन सोरमादेशे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'श्रीपम्' इति सिद्धम् ।

**श्रीपाय**—श्रीपाशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये श्रीपा+ङे इति जाते 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वत्वे 'ङेर्यः' इत्यनेन यकारादेशे 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे 'श्रीपाय' इति सिद्धम् ।

**वारि**—नपुंसकलिङ्गात् वारिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुप्रत्ययस्य लोपे 'वारि' इति सिद्धम् ।

**वारिणी**—नपुंसकलिङ्गात् वारिशब्दात् प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये वारि+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औकारस्य 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे वारि+ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे वारिन्+ई इति जाते 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'वारिणी' इति सिद्धम् ।

**वारीणि**—नपुंसकलिङ्गात् वारिशब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये वारि+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने शित्वे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन शीत्यस्य सर्वनामस्थानत्वे अनुबन्धलोपे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन नान्तोपधाया दीर्घे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'वारीणि' इति सिद्धम् ।

**हे वारे**—नपुंसकलिङ्गात् वारिशब्दात् सम्बोधनैकवचने सु प्रत्यये वारि+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'न लुमताङ्गस्य' इत्यस्यानित्यत्वपक्षे 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्' इत्यनेन प्रत्ययलक्षणेन 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन सम्बुद्धिनिमित्तके गुणे 'हे वारे' इति सिद्धम् । 'न लुमते'त्यस्य नित्यत्वपक्षे तु 'हे वारि' इति रूपं सिध्यति । अत एव 'हे त्रपो; हे त्रपु' इति भाष्योदाहरणं सङ्गच्छते ।

'न लुमते'त्यस्याऽनित्यत्वे किं मानम् ? इति चेच्छृणु—'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यत्र अज्ग्रहणं किमर्थम्; हलादिषु भ्यामादिषु हि सत्यपि नुमि 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इति नस्य लोपसम्भवात् । न च सम्बुद्धिव्यावृत्त्यर्थमज्ग्रहणम्, अन्यथा

तत्र नुमि 'न ङिसम्बुद्ध्योः' इति निषेधे सति नकारश्रवणप्रसंग इति वाच्यम्, सम्बुद्धेर्लुका लुप्ततया प्रत्ययलक्षणेन प्राप्तं नुमं वारयितुम् अज्ग्रहणं सफलमित्यज्ग्रहणं 'न लुमतेत्यस्यानित्यत्वे' लिङ्गमिति तत्त्वविदः।

**वारिणे**—नपुंसकलिङ्गात् वारिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये वारि+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे घित्त्वात् 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे प्राप्ते 'वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन' इति वार्तिकेन पूर्वविप्रतिषेधस्य प्रबलत्वात् 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे णत्वे च कृते 'वारिणे' इति सिद्धम्।

**वारिणः**—नपुंसकलिङ्गात् वारि शब्दात् पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये वारि+ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे वारि+अस् इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे वारिन्+अस् इति जाते 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'वारिणः' इति सिद्धम्।

**वारीणाम्**—नपुंसकलिङ्गात् वारिशब्दात् षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये वारि+आम् इति जाते 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे प्राप्ते पूर्वविप्रतिषेधात् तृज्वद्भावं बाधित्वा 'इकोऽचि विभक्तौ' इति सूत्रेण नुमः प्राप्तौ 'नुमचिरतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन' इति वार्तिकनियमात् पूर्वविप्रतिषेधेन नुटि 'नामि' इत्यनेन दीर्घे णत्वे च कृते 'वारीणाम्' इति सिद्धम्।

**अनादये, अनादिने**—अनादिशब्दात् चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अनादि+ङे इति जाते 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य' इति सूत्रेण विकल्पेन पुंवत्त्वे सति 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमोऽप्रवृत्तेः 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'घेर्ङिति' इत्यनेन गुणे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे च 'अनादये' इति सिद्धम्। पुंवत्त्वाभावपक्षे—'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'अनादिने' इति रूपं सिध्यति।

ननु अनादिशब्दस्य कथं भाषितपुंस्कत्वमिति चेदुच्यते—भाषितः पुमान् येन प्रवृत्तिनिमित्तेन तद् भाषितपुंस्कम्। अर्थात् नपुंसके लिङ्गान्तरे च यस्य एकमेव वाच्यतावच्छेदकं तच्छब्दस्वरूपं भाषितपुंस्कशब्देन विवक्षितम्। अनादिशब्दश्च उत्पत्त्यभावत्मकमनादित्वं पुरस्कृत्य स्त्रीपुंनपुंसकतत्तद्व्यक्तिप्रत्यायक इति भवति तस्य प्रवृत्तिनिमित्तैक्ये भाषितपुंस्कतेति तत्त्वविदः। तथा चोक्तम्—

'यन्निमित्तमुपादाय पुंसि शब्दः प्रवर्त्तते।
क्लीबवृत्तिः तदेव स्यादुक्तपुंस्कं तदुच्यते॥'

शब्दः पुंस्त्वे यमर्थं भजते यत् च शब्दस्वरूपं भजते, तमेवार्थं प्रधानीकृत्य शब्दस्वरूपमपि पुंवदेव भवेच्चेत् स शब्दः भाषितपुंस्कसंज्ञां लभते इति तात्पर्यार्थः।

पीलुने—पीलुर्वृक्षः तत्फलं पीलु तस्मै पीलुने। अत्र 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य' इत्यनेन न पुंवत् प्रवृत्तिनिमित्तभेदात् 'पीलु'शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये पीलु+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमेऽनुबन्धलोपे संयोगे च 'पीलुने' इति सिद्धम्।

शब्दः पुंस्त्वे यमर्थं भजते यत् च शब्दस्वरूपं भजते तमेवार्थं प्रधानीकृत्य शब्दस्वरूपमपि पुंवदेव भवेच्चेत् स शब्दः भाषितपुंस्कसंज्ञां लभते। तेन शब्दसारूप्यं भजमानोऽपि पुंस्त्वे विद्यमानोऽपि 'पीलु'शब्दः नपुंसकत्वे फलार्थवाचके भाषितपुंस्कसंज्ञां न समादत्ते प्रवृत्तिनिमित्तभेदात्। पीलुशब्दस्य पुंस्त्वे या प्रवृत्तिस्तत्र यन्निमित्तं वृक्षार्थरूपं तस्य भेदादिति भावः। यं वृक्षरूपार्थं निमित्तीकृत्य पीलुशब्दः पुस्त्वं लभते, तदर्थरूपं तस्य नपुंसकेऽसत्त्वात् फलार्थत्वेन प्रवृत्तिभेदेन स्वरूपसादृश्येऽपि भाषितपुंस्कतां न लभत इति स्पष्टार्थः। वृक्षत्वव्याप्यजातिविशेषात्मकं पीलुत्वं प्रवृत्तिनिमित्तमिति। फलविशेषे तु वाच्ये फलत्वव्याप्यजातिविशेषात्मकं पीलुत्वं प्रवृत्तिनिमित्तम्, इति प्रवृत्तिनिमित्तभेदेन भाषितपुंस्कत्वाभावान्न पुंवदित्युक्तिः सङ्गतेति। तदुक्तम्—

'पीलुर्वृक्षः फलं पीलु, पीलुने न तु पीलवे।
वृक्ष निमित्तं पीलुत्वं तज्जत्वं तत्फले पुनः॥'

दध्ना—नपुंसकलिङ्गात् दधि शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये दधि+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे दधन्+आ इति जाते 'अल्लोऽनः' इत्यनेन अनोऽकारलोपे 'दध्ना' इति सिद्धम्।

दध्ने—नपुंसकलिङ्गात् दधि शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये दधि+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे दधन्+ए इति जाते 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अनोऽकारलोपे 'दध्ने' इति सिद्धम्।

दध्नः—नपुंसकलिङ्गात् दधि शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये दधि+ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे दधन्+अस् इति जाते 'अल्लोपोऽनः'

इत्यनेन अनोऽकारस्य लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलो 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'दध्नः' इति सिद्धम् । एवम् षष्ठ्येक वचनेऽपि बोध्यम् ।

दध्नोः—नपुंसकलिङ्गात् दधि शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओ इति जाते 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलो दधन्+ओस् इति जाते 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अनोऽकारस्य लोपे, 'ससजु रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यने विसर्गे 'दध्नोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

दध्नाम्—नपुंसकलिङ्गात् दधिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवच आम् प्रत्यये दधि+आम् इति जाते 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः' इत्यने अनङादेशे, अनुबन्धलोपे दधन्+आम् इति जाते 'अल्लोपोऽनः' अनोऽकार लोपे संयोगे 'दध्नाम्' इति सिद्धम् ।

दध्नि, दधनि—नपुंसकलिङ्गात् दधिशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्ये वचने ङि प्रत्यये दधि+ङि इति जाते अनुबन्धलोपे 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम ङुदात्तः' इत्यनेन अनङादेशे अनुबन्धलोपे दधन्+इति जाते 'विभाषा ङिश्यो इत्यनेन विकल्पेन अनोऽकारलोपे 'दध्नि' । अकारलोपाभावपक्षे च—'दध इति रूपद्वयं सिध्यति ।

सुधि—सुधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिक इत्यनेन ह्रस्वे प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे 'सु इति सिद्धम् ।

सुधिनी—सुधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिक इत्यनेन ह्रस्वे प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सुधि+औ इति जाते 'नपुंसका इत्यनेन औकारस्य 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे सुधि+ई इति जाते 'इकोऽ विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सुधिना' इति सिद्धम् ।

सुधीनि—सुधी शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिक इत्यनेन प्रातिपदिकस्य ह्रस्वत्वे प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये सुधि+जस् जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः 'शि' इत्यादेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्य सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे सु +इ इति जाते 'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'सुधीनि' इति सिद्ध

**विशेष:**—एवम् द्वितीयाविभक्तावपि सुधि, सुधिनी, सुधीनि इत्येतानि रूपाणि बोध्यानि ।

**हे सुधे, हे सुधि**—सुधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन प्रातिपदिकस्य ह्रस्वत्वे 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'न लुमताङ्गस्य' इत्यनित्यत्वात् 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्' इत्यनेन प्रत्ययलक्षणेन पाक्षिके 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन गुणे 'हे सुधे' इति गुणाभावपक्षे च 'हे सुधि' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

**सुधिया, सुधिना**—सुधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये, अनुबन्धलोपे 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य' इत्यनेन वैकल्पिकपुंवद्भावेन ह्रस्वनुमोरभावे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङि, अनुबन्धलोपे, संयोगे च 'सुधिया' इति रूपं सिद्धम् । पुंवद्भावाऽभावपक्षे—'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सुधिना' इति सिद्धम् ।

सुध्यातृत्वस्य शोभनज्ञानवत्त्वस्य वा प्रवृत्तिनिमित्तस्य पुंसि नपुंसके चैकत्वात् पुंवत्त्वविकल्पः ।

**सुधिये, सुधिने**—सुधीशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने 'ङे' प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य' इत्यनेन वैकल्पिकपुंवद्भावेन ह्रस्वनुमोरभावे 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' इत्यनेन इयङि अनुबन्धलोपे संयोगे च 'सुधिये' इति सिद्धम् । पुंवद्भावाऽभावपक्षे—'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सुधिने' इति रूपं सिध्यति ।

**मधु**—नपुंसकलिङ्गात् मधुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लोपे 'मधु' इति सिद्धम् ।

**मधुनी**—नपुंसकलिङ्गात् मधुशब्दात् प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये मधु+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औकारस्य 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे मधु+ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'मधुनी' इति सिद्धम् ।

**मधूनि**—नपुंसकलिङ्गात् मधुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमा बहुवचने 'जश्शसोः शि' इत्यनेन 'शि' आदेशे अनुबन्धलोपे मधु+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन

नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'मधूनि' इति सिद्धम् ।

हे मधो, हे मधु—नपुंसकलिङ्गात् मधुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये मधु+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'न लुमताङ्गस्य' इत्यस्यानित्यत्वात् प्रत्ययलक्षणेन 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन पाक्षिके गुणे 'हे मधो' इति, गुणाभावे च—'हे मधु' इति रूपं सिध्यति।

मधुना—नपुंसकलिङ्गात् मधुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये मधु+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'मधुना' इति सिद्धम् ।

सुलु—नपुंसकलिङ्गात् सुलुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये सुलु+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'सुलु' इति सिद्धम् ।

सुलुनी—नपुंसकलिङ्गात् सुलु शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सुलु+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औकारस्य 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे सुलु+ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे संयोगे च 'सुलुनी' इति सिद्धम् ।

सुलूनि—नपुंसकलिङ्गात् सुलु शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः 'शि' आदेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इति दीर्घ मधू+शि इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागम अनुबन्धलोपे 'मधूनि' इति सिद्धम् ।

सुल्वा, सुलुना—नपुंसकलिङ्गात् सुलु शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयकवचने टा प्रत्यये सुलु+टा इति जाते 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य' इत्यनेन पंवद्भावे पुंवत्त्वेन ह्रस्वाभावेनाघित्वात् नुमभावः, अनुबन्धलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'सुल्वा' इति सिद्धम् । पुंवत्त्वाभावपक्षे—सुलु+आ इति स्थिते यणं प्रबाध्य 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमेऽनुबन्धलोपे 'सुलुना' इति सिद्धम् ।

धातृ—धातृशब्दात् नपुंसकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये धातृ+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'धातृ' इति सिद्धम् ।

धातृणी—नपुंसकलिङ्गात् धातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये धातृ+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औकारस्य 'शि' आदेशे

अनुबन्धलोपे धातृ + ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इत्यनेन नस्य णत्वे 'धातृणी' इति सिद्धम् ।

धातॄणि—नपुंसकलिङ्गात् धातृशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये धातृ + जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः 'शि' आदेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन शेः सर्वनामस्थानसंज्ञायां, अनुबन्धलोपे 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन नान्तस्योपधाया दीर्घत्वे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इत्यनेन नस्य णत्वे 'धातॄणि इति सिद्धम् ।

हे धातः, हे धातृ—नपुंसकलिङ्गात् धातृशब्दात् सम्बोधनैकवचने सु प्रत्यये धातृ + सु इति जाते 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धि संज्ञायां, 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि धारणकर्तृत्वरूपप्रवृत्तिनिमित्तैक्यात् 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य' इत्यनेन विकल्पेन पुंवद्भावे 'न लुमताङ्गस्य' इत्यनित्यत्वात् प्रत्ययलक्षणेन 'ह्रस्वस्य गुणः' इत्यनेन गुणे अकारे रपरे च जाते रेफस्य विसर्गे 'हे धातः' इति सिद्धम् । पक्षे—'हे धातृ' इति रूपं सिध्यति ।

धात्रा, धातृणा—नपुंसकलिङ्गात् धातृशब्दात् तृतीयैकवचने टा प्रत्यये धातृ + टा इति जाते धारणकर्तृत्वरूपप्रवृत्तिनिमित्तैक्यात् 'तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य' इत्यनेन विकल्पेन पुंवद्भावे धातृ + आ इति स्थिते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इत्यनेन नस्य णत्वे 'धातृणा' इति रूपं सिध्यति ।

धातॄणाम्—नपुंसकलिङ्गात् धातृशब्दात् षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये धातृ + आम् इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुट्यनुबन्धलोपे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इत्यनेन नस्य णत्वे 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'धातॄणाम्' इति सिद्धम् ।

प्रद्यु—प्रकृष्टा द्यौः यस्येति विग्रहे 'प्रद्यो' शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्य ओकारस्य उकारे कृते प्रथमैकवचने सु प्रत्यये प्रद्यु + सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लोपे 'प्रद्यु' इति सिद्धम् ।

प्रद्युनी—प्रद्योशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे—'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्योकारस्य उकारे प्रथमा-

द्विवचने औ प्रत्यये प्रद्यु+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे प्रद्यु+ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'प्रद्युनी' इति सिद्धम् ।

**प्रद्यूनि**—प्रद्योशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यौकारस्य उकारे प्रथमा-बहुवचने जस् प्रत्यये प्रद्यु+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः 'शि' आदेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां अनुबन्धलोपे 'नपुंस-कस्य झलचः' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'प्रद्यूनि' इति सिद्धम् ।

**प्रद्युना**—प्रद्योशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यौकारस्य उकारे तृतीयैक-वचने टा प्रत्यये प्रद्यु+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'प्रद्युना' इति सिद्धम् ।

**प्ररि**—प्रकृष्टः राः धनं यस्येति विग्रहे 'प्ररै'शब्दात् 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यैकारस्य इकारे प्रथमैकवचने सु प्रत्यये प्ररि+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'प्ररि' इति सिद्धम् ।

**प्ररिणी**—प्ररैशब्दात् 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यैकारस्य इकारे प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये प्ररि+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे प्ररि+ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'प्ररिणी' इति सिद्धम् ।

**प्ररीणि**—प्ररैशब्दात् 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे—'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यैकारस्य इकारे प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये प्ररि+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः 'शि' आदेशे 'शि सर्वनाम-स्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां अनुबन्धलोपे 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्य-वायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'प्ररीणि' इति सिद्धम् ।

**प्ररिणा**—प्ररैशब्दात् 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यैकारस्य इकारे, तृतीयैकवचने टा प्रत्यये प्ररि+

टा इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'प्ररिणा' इति सिद्धम् ।

प्रराभ्याम्—प्ररैशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यैकारस्य इकारे तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये प्ररि+भ्याम् इति जाते 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इति परिभाषया 'रायो हलि' इत्यनेन आत्वे 'प्रराभ्याम्' इति सिद्धम् ।

प्ररीणाम्—प्ररैशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इत्यनेन ह्रस्वे 'एच इग्घ्रस्वादेशे' इत्यनेन एज्रूपस्यैकारस्य इकारे षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये प्ररि+आम् इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुमागमे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे प्राप्ते 'नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन' इति वार्तिकेन नुडागमे अनुबन्धलोपे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नस्य णत्वे 'नामि' इत्यनेन दीर्घे 'प्ररीणाम्' इति सिद्धम् । माधवमते तु—प्ररि+नाम् इति स्थिते 'रायो हलि' इत्यात्वे नस्य णत्वे 'प्रराणाम्' इति रूपम्भवति ।

सुनु—नपुंसकात् सुनुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे 'सुनु' इति सिद्धम् ।

सुनुनी—नपुंसकात् सुनुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सुनु+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे सुनु+ई इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'सुनुनी' इति सिद्धम् ।

सुनूनि—नपुंसकात् सुनु शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये सुनु+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः 'शि' आदेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमि अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'सुनूनि' इति सिद्धम् ।

सुनुना—नपुंसकात् सुनुशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये सुनु+टा इति जाते 'इकोऽचि विभक्तौ' इत्यनेन नुम्यनुबन्धलोपे 'सुनुना' इति सिद्धम् ।

॥ इत्यजन्ताः नपुंसकलिङ्गाः ॥

# अथ हलन्तपुंल्लिङ्गप्रकरणम्

## हो ढः ॥८।२।३१॥

हकारस्य स्थाने ढकारादेशो भवति झलि परे पदान्ते च ।

लिट्, लिड्—क्विबन्तात् लिह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये लिह्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'लिट्' इति रूपं सिद्धम् । चर्त्वाभावपक्षे—'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन ढकारस्य डकारे 'लिड्' इति रूपं सिध्यति ।

लिड्भ्याम्—क्विबन्तात् लिह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये लिह्+भ्याम् इति जाते 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदत्वात् 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन ढकारस्य डकारे 'लिड्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

लिट्त्सु, लिट्सु—क्विबन्तात् लिह् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये लिह्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन ढस्य डत्वे 'डः सि धुट्' इत्यनेन सस्य धुडागमे, टित्वादाद्यावयवे, अनुबन्धलोपे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे, पुनश्च डकारस्य 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे 'लिट्त्सु' इति सिद्धम् । धुडागमाभावे—'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे, पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन ढस्य डत्वे 'खरि च' इत्यनेन डकारस्य चर्त्वे टकारे 'लिट्सु' इति सिद्धम् ।

धुक्, धुग्—क्विबन्तात् दुह् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'दादेर्धातोर्घः' इत्यनेन घत्वे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन दस्य धत्वे 'धुघ्' इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जशत्वेन गकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'धुक् धुग्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

धुग्भ्याम्—क्विबन्तात् दुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये दुह्+भ्याम् इति जाते 'दादेर्धातोर्घः' इत्यनेन हस्य घत्वे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन भष्भावेन दकारस्य धकारे धुघ्+भ्याम् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन घकारस्य गकारे 'धुग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

धुक्षु—क्विबन्ताद् दुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये दुह्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'दादेर्धातोर्घः' इत्यनेन हस्य घत्वे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन भष्त्वेन हकारस्य धकारे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन धकारस्य गकारे धुग्+सु इति जाते 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सोः सस्य षत्वे क्ष् संयोगेन 'क्ष' इति जाते 'धुक्षु' इति रूपं सिद्धम् ।

ध्रुक्, ध्रुग्, ध्रुट्, ध्रुड्—क्विबन्तात् द्रुहशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैक-वचने सु प्रत्यये द्रुह् + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'दादेर्धातोर्घः' इत्यनेन घत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' इत्यनेन विकल्पेन हस्य घत्वे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन भष्भावेन दकारस्य धकारे, घस्य च 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'ध्रुक्' इति सिद्धम् । चर्त्वाभावपक्षे च—'ध्रुग्' इति रूपं च सिध्यति । घत्वाभावपक्षे—'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढत्वे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन भष्भावे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'ध्रुट्', इति चर्त्वाभावपक्षे च—'ध्रुड्' इति रूपं च सिध्यति ।

ध्रुग्भ्याम्, ध्रुड्भ्याम्—क्विबन्तात् द्रुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीया-द्विवचने भ्याम् प्रत्यये द्रुह् + भ्याम् इति जाते 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' इत्यनेन हकारस्य घत्वे 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' इत्यनेन भष्भावे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन घस्य गत्वे 'ध्रुग्भ्याम्' इति रूपं सिध्यति । घत्वा-भावपक्षे—'हो ढः' इत्यनेन हस्य ढत्वे, भष्भावे, जश्त्वेन ढस्य डत्वे 'ध्रुड्भ्याम्' इति रूपं च सिध्यति ।

ध्रुक्षु, ध्रुट्त्सु, ध्रुट्सु—क्विबन्तात् द्रुहशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमी-बहुवचने सुप् प्रत्यये द्रुह् + सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' इत्यनेन विकल्पेन हस्य घत्वे भष्भावे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षकारे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे 'ध्रुक्षु' इति सिद्धम् । घत्वाभावपक्षे—द्रुह् + सु इत्य-वस्थायां 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढत्वे, भष्भावे, ध्रुढ् + सु इति जाते ढस्य जश्त्वे 'डः सि धुट्' इत्यनेन धुटि अनुबन्धलोपे ध्रुड् + ध् + सु इति जाते धस्य

ढस्य च चर्त्वे 'ध्रुट्त्सु' इति रूपं सिद्धम् । धुडभावपक्षे—हस्य ढत्वे, भष्भावे ढस्य जश्त्वेन डत्वे तस्य चर्त्वेन टकारे 'ध्रुट्सु' इति सिद्धम् ।

**स्नुक्, स्नुग्, स्नुट्, स्नुड्**—क्विबन्तात् ष्णुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये ष्णुह्+सु इति जाते 'धात्वादेः षः सः' इत्यनेन षकारस्य सकारे, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' इत्यनेन हस्य घत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन गत्वे 'वाऽवसाने' विकल्पेन चर्त्वे 'स्नुक्' इति, चर्त्वाभावे—'स्नुग्' इति रूपं च सिध्यति । 'वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्' इति विकल्पाभावपक्षे—'हो ढः' इत्यनेन ढत्वे, तस्य जश्त्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'स्नुट्' इति, चर्त्वाभावपक्षे—'स्नुड्' इति रूपं च सिध्यति ।

**विश्वौहः**—विश्ववाह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये विश्ववाह्+शस् इति जाते, अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'वाह ऊठ्' इत्यनेन सम्प्रसारणे प्राप्ते 'इग्यणः सम्प्रसारणम्' इति नियमात् वरूपस्य यण. स्थाने उकाररूपे सम्प्रसारणे विश्व+ऊ+आह+अस् इति जाते 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे विश्व+ऊह+अस् इति जाते 'एत्येधत्यूठ्सु' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने वृद्ध्येकादेशे, संयोगे विश्वौहस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च कृते 'विश्वौहः' इति सिद्धम् ।

**अनड्वान्**—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायाम् प्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये अनडुह्+सु इति जाते 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आम् आदेशे अनडु+आम्+ह्+सु इति जाते मकारस्येत्संज्ञायां लोपे च अनडु+आह्+सु इति जाते 'सावनडुहः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे अनडु+आ+न्+ह्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' । इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन हलोपे अनडु+आ+न् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्यनेन संयोगान्तलोपासिद्धत्वाद लोपाभावे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'अनड्वान्' इति सिद्धम्'।

**अनड्वाहौ**—अनडुह्शब्दात प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये अनडुह+औ इति जाते 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आमागमे अनुबन्धलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे संयोगे च 'अनड्वाहौ' इति सिद्धम् ।

**अनड्वाहः**—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुचने जस् प्रत्यये

अनडुह् + जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आमागमे अनुबन्धलोपे अनडु + आ + ह् + अस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे, संयोगे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अनड्वाहः' इति सिद्धम् ।

हे अनड्वन्—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये हे शब्दस्य प्राक्प्रयोगे हे अनडुह् + सु इति जाते 'अम्सम्बुद्धौ' इत्यनेन अमागमे अनुबन्धलोपे हे अनडु + अ + ह् + स् इति जाते 'सावनडुहः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे अनडु + अ + न् + ह् + स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन हकारस्य लोपे 'इको इणचि' इत्यनेन यणादेशे 'हे अनड्वन्' इति सिद्धम् ।

अनड्वाहम्—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये अनडुह् + अम् इति जाते 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आमागमे अनुबन्धलोपे अनडु + आ + ह् + अम् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे संयोगे च 'अनड्वाहम्' इति सिद्धम् ।

अनुडुहः—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अनडुह् + शस् इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन शकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अनडुहः' इति सिद्धम् ।

अनडुहा—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये अनडुह् + टा इति जाते 'चुटू' इत्यनेन टकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे संयोगे च 'अनडुहा' इति सिद्धम् ।

अनडुद्भ्याम्—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अनडुह् + भ्याम् इति जाते 'वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः' इत्यनेन हकारस्य दकारे 'अनडुद्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

अनडुद्भिः—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये अनडुह् + भिस् इति जाते 'वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः' इत्यनेन हकारस्य दकारे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'अनडुद्भिः' इति सिद्धम् ।

अनडुहे—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अन-

डुह् + ङे इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ङकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे संयोगे च 'अनडुहे' इति सिद्धम् ।

अनडुहः—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसिप्रत्यये अनडुह् + ङसि इति जाते 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्यनेन इकारस्येत्संज्ञायां 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ङकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे च अनडुह् + अस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अनडुहः' इति सिद्धम् ।

अनडुद्भ्यः—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चमीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये अनडुह् + भ्यस् इति जाते 'वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः' इत्यनेन हकारस्य दकारे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'अनडुद्भ्यः' इति सिद्धम् ।

अनडुत्सु—अनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनडुह् + सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः' इत्यनेन हकारस्य दकारे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे 'अनडुत्सु' इति सिद्धम् ।

तुराषाट्, तुराषाड्—तुरासाह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे तुरासाह् + स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'हो ढः' इत्यनेन हकारस्य ढकारे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन डत्वे कृते 'सहेः साडः सः' इत्यनेन सकारस्य षकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन डस्य विकल्पेन चर्त्वे 'तुराषाट्' इति, चर्त्वाभावपक्षे—'तुराषाड्' इति रूपं च सिध्यति ।

सुद्यौः—सुदिवशब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये सुदिव + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'दिव औत्' इत्यनेन दिवो वकारस्य 'औत्' आदेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'सुद्यौः' इति सिद्धम् ।

सुद्युभ्याम्—सुदिवशब्दात् तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये सुदिव + भ्याम् इति जाते 'दिव उत्' इत्यनेन वकारस्य उकारे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि संयोगे 'सुद्युभ्याम्' इति सिद्धम् ।

चत्वारः—चतुर्शब्दात् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे चतुर् + अस् इति जाते 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आम्यनुबन्धलोपे चतु + आ

र्+अस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणि 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'चत्वारः' इति सिद्धम् ।

चतुरः—चतुर्शब्दात् द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन शकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'चतुरः' इति सिद्धम् ।

चतुर्भिः—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये चतुर्+भिस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'चतुर्भिः' इति सिद्धम् ।

चतुर्भ्यः—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये चतुर्+भ्यस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'चतुर्भ्यः' इति सिद्धम् ।

चतुर्ण्णाम्—चतुर् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये चतुर्+आम् इति जाते 'षट्चतुर्भ्यश्च' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे चतुर्+न+आम् इति जाते 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' इत्यनेन नस्य णत्वे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन वैकल्पिके णकारस्य द्वित्वे 'चतुर्ण्णाम्', 'चतुर्णाम्' इति सिद्धम् ।

चतुर्षु – चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये चतुर्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे प्राप्ते 'रोः सुपि' इत्यनेन निषेधे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सस्य षत्वे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन षस्य द्वित्वे प्राप्ते 'शरोऽचि' इत्यनेन निषेधे 'चतुर्षु' इति सिद्धम् ।

प्रशान्—प्रशाम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये प्रशाम्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'सुप्तिङन्तं पदम्' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'मो नो धातोः' इत्यनेन मकारस्य नकारे 'प्रशान्' इति सिद्धम् ।

कः—किम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये किम्+सु इति जाते 'किमः कः' इत्यनेन कादेशे क+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'कः' इति सिद्धम् ।

कौ—किम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'प्रथमाद्विवचने' औ प्रत्यये किम्+औ इति जाते 'किमः कः' इत्यनेन क आदेशे क+औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन पूर्वपरयोर्वृद्ध्येकादेशे 'कौ' इति सिद्धम् ।

के—किम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये किम्+जस् इति जाते 'किमः कः' इत्यनेन 'क' आदेशे क+जस् इति जाते 'जसः शी' इत्यनेन जसः 'शी' आदेशे क+शी इति जाते अनुबन्धलोपे क+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'के' इति सिद्धम् ।

विशेषः—इदमस्तु सन्निकृष्टे समीपतरवर्ति चैतदो रूपम् ।
अदसस्तु विप्रकृष्टे तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥'

'इदम्' शब्द पास में स्थित किसी मनुष्य या वस्तु के लिए तथा 'एतद्' शब्द अत्यन्त समीपवर्ती मनुष्य या वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है । इसी प्रकार दूरस्थित प्रत्यक्ष के लिए 'अदस्' शब्द और अप्रत्यक्ष के लिए 'तत्' शब्द का प्रयोग होता है ।

## द्वितीयाटौस्स्वेनः ।।२।४।३४।।

द्वितीयायां टौसोश्च परत इदमेतदोरेनादेशो भवति, अन्वादेशे । किञ्चित् कार्यं विधातुमुपात्तस्य कार्यान्तरं विधातुं पुनरुपादानम्—अन्वादेशः । यथा—'अनेन व्याकरणमधीतम्, एनं छन्दोऽध्यापये'ति । 'अनयोः पवित्रं कुलम्, एनयोः प्रभूतं स्वमि'ति ।

अयम्—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, अनुबन्धलोपे इदम्+स् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'इदमो मः' इत्यनेनापवादभूते मकारे कृते 'इदोऽय् पुंसि' इत्यनेन इदम इद्भागस्य अयादेशे, संयोगे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'अयम्' इति सिद्धम् .

इमौ—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये इदम्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे इद+अ+औ इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+औ इति 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'इमौ' इति सिद्धम् ।

इमे—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये इदम्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे इद्+अ+जस् इति जाते

'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+जस् इति जाते 'जसः शी' इत्यनेन 'शी' आदेशे अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'इमे' इति सिद्धम् ।

**इमम्**—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये इदम्+अम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे इद+अ+अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+अम् इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे इम+अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे 'इमम्' इति रूपं सिद्धम् । अत्र अन्वादेशे 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन इदम् शब्दस्य एनादेशो भवति, तत्पक्षे 'एनम्' इति रूपं सिध्यति ।

**इमौ**—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाद्विवचने औट्प्रत्यये इदम्+औट् इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे इद+अ+औ इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+औ इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'इमौ' इति सिद्धम् । अत्र अन्वादेशे 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन इदम् शब्दस्य एनादेशो भवति, तत्पक्षे 'एनौ' इति रूपं सिध्यति ।

**इमान्**—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये इदम्+शस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे इद+अ+शस् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+शस् इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दस्य मत्वे इम+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे इम+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे इमास् इति जाते 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन सस्य नत्वे 'इमान्' इति सिद्धम् । अत्र अन्वादेशे 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन इदम् शब्दस्य एनादेशो भवति, तत्पक्षे 'एनान्' इति रूपं सिध्यति ।

**अनेन**—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये इदम्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे इदम्+आ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+आ इति जाते 'अनाप्यकः' इत्यनेन इदोऽनादेशे कृते अन+आ इति जाते 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन इनादेशे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'अनेन' इति सिद्धम् । अत्र अन्वादेशे 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन इदम् शब्दस्य एनादेशो भवति, तत्पक्षे 'एनेन' इति रूपं सिध्यति ।

**आभ्याम्**—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये इदम्+भ्याम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे इद+भ्याम् इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे

प्राप्ते 'अलोऽन्त्यस्य' इत्यनेनान्त्यस्य लोपे प्राप्ते 'नानर्थकेऽलोऽन्त्यविधिरनभ्यासविकारे' इति परिभाषया अलोऽन्त्यविध्यभावे इद्भागस्यैव लोपे अ+भ्याम् इति जाते 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घत्वे प्राप्ते परमत्र विद्यमानस्याकारस्यादन्तत्वं वर्तते न वेति शङ्कायाम् 'आद्यन्तवदेकस्मिन्' इत्यनेन एकस्मिन्नेवाकारे अन्तवद्भावेन अदन्तत्वं मत्वा दीर्घे कृते 'आभ्याम्' इति सिद्धम्। एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम्।

एभिः—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये इदम्+भिस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे 'हलि लोपः' इत्यनेन इद् भागस्य लोपे 'अतो भिस ऐस्' इत्यनेन भिस ऐसादेशे प्राप्ते 'नेदमदसोरकोः' इत्यनेन निषेधे 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे रेफस्य विसर्गे च 'एभिः' इति सिद्धम्।

अस्मै—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये इदम्+ङे इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+ङे इति जाते 'सर्वनाम्नः स्मै' इत्यनेन 'ङे' इत्यस्य 'स्मै' आदेशे 'अनाप्यकः' इत्यनेन अनादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'हलि लोपः' इत्यनेन इदो लोपे 'अस्मै' इति सिद्धम्।

एभ्यः—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये इदम्+भ्यस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+भ्यस् इति जाते 'अनाप्यकः' इत्यनेन अनि प्राप्ते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे अ+भ्यस् इति जाते 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे रेफस्य विसर्गे च 'एभ्यः' इति सिद्धम्। एवं पञ्चमी बहुवचनेऽपि बोध्यम्।

अस्मात्—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये इदम्+ङसि इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+ङसि इत्यवस्थायाम् 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन ङसेरादादेशे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङसेः स्मादादेशे 'अनाप्यकः' इत्यनेन अनि प्राप्ते 'हलि लोपः' इत्यनेन इदो लोपे 'अस्मात्' इति सिद्धम्।

अस्य—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठ्येकवचने ङस् प्रत्यये इदम्+ङस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+ङस् इति जाते 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन ङसः स्यादेशे इद+स्य

इति जाते 'अनाप्यकः' इत्यनेन अनि प्राप्ते 'हलि लोपः' इत्यनेन इदो लोपे 'अस्य' इति सिद्धम् ।

अनयोः—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये इदम्+ओस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे 'अनाप्यकः' इत्यनेन इदोऽनादेशे अन+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्यनेन अनघटकनकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्यैकारे अने+ओस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे, सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, रेफस्य विसर्गे च 'अनयोः' इति सिद्धम् । अत्र 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन अन्वादेशे एनादेशो भवति, तत्पक्षे 'एनयोः' इति रूपं सिध्यति । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

एषाम्—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये इदम्+आम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे इद+साम् इति जाते हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन मूर्द्धन्यादेशे 'एषाम्' इति सिद्धम् ।

अस्मिन्—इदम्शब्दात् प्रतिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने 'ङि' प्रत्यये इदम्+ङि इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+ङि इति जाते 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङेः स्मिनादेशे इद+स्मिन् इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे—'अस्मिन्' इति सिद्धम् ।

एषु—इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये इदम्+सुप् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन मस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे इद+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सस्य षत्वे 'एषु' इति सिद्धम् ।

राजा—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे राजन्+स् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन नान्तस्योपधाया: दीर्घे राजान्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'राजा' इति सिद्धम् ।

**न ङिसम्बुद्ध्योः ।।८।२।८।।**

ङिसम्बुद्ध्योः परतः प्रातिपदिकान्तस्य नलोपो न भवति ।

हे राजन्—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे हे राजन्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे हे राजन्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'न ङिसम्बुद्ध्योः' इत्यनेन निषेधे 'हे राजन्' इति सिद्धम् ।

राजानौ—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये राजन्+औ इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे राजान्+औ इति जाते संयोगे 'राजानौ' इति सिद्धम् । एवम् द्वितीयाद्विवचनेऽपि 'राजानौ' इति रूपं सिध्यति ।

राजानः—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये राजन्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे राजानस् इति जाते सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'राजानः' इति सिद्धम् ।

राजानम्—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये राजन्+अम् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे संयोगे च 'राजानम्' इति सिद्धम् ।

राज्ञः—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये राजन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे राजन्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन जकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य लोपे राज्+न्+अस् इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नस्य ञत्वे जञोः संयोगे 'ज्ञ' इति वर्णे जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'राज्ञः' इति सिद्धम् ।

राज्ञा—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये राजन्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे राजन्+आ इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन जकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य लोपे राज्+न्+आ इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नस्य ञत्वे जञोः संयोगे 'ज्ञ' इति वर्णे जाते 'राज्ञा' इति सिद्धम् ।

## नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ।।८।२।२।।

सुब्विधौ, स्वरविधौ, संज्ञाविधौ, कृति प्रत्यये च परतः तुग्विधौ कर्तव्ये नलोपोऽसिद्धो भवति, नान्यत्र । राजाश्व इत्यादौ ।

**राजभ्याम्**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये राजन्+भ्याम् इति जाते 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे राज+भ्याम् इति जाते 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति' इत्यनेन नलोपस्याऽसिद्धत्वाद् दीर्घाभावे 'राजभ्याम्' इति सिद्धम्। एवं चतुर्थीद्विवचने पञ्चमीद्विवचनेऽपि बोध्यम्।

**राजभिः**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये राजन्+भिस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे राज+भिस् इति जाते 'अतो भिस ऐस्' इत्यनेन भिस ऐसादेशे प्राप्ते 'नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति' इत्यनेन नलोपस्यासिद्धौ भिस ऐसादेशाभावे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'राजभिः' इति सिद्धम्।

**राज्ञे**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये राजन्+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे राजन्+ए इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अल्लोपे राज्+न्+ए इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नकारस्य ञकारे जञोः संयोगे 'ज्ञ' इति वर्णे जाते राज्ञ्+ए इति जाते संयोगे 'राज्ञे' इति सिद्धम्।

**राजभ्यः**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये राजन्+भ्यस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे राज+भ्यस् इति जाते 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति' इत्यनेन नलोपस्यासिद्धौ दीर्घाभावे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'राजभ्यः' इति सिद्धम्। एवं पञ्चमीबहुवचनेऽपि बोध्यम्।

**राज्ञः**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये राजन्+ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे राजन्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अल्लोपे राज्+न्+अस् इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नकारस्य ञकारे संयोगे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'राज्ञः' इति सिद्धम्। एवं षष्ठ्येकवचनेऽपि बोध्यम्।

**राज्ञाम्**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये राजन्+आम् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अल्लोपे राज्+न्+आम् इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नकारस्य ञकारे संयोगे 'राज्ञाम्' इति सिद्धम्।

**राज्ञि, राजनि**—राजन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि

प्रत्यये राजन्+ङि इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'विभाषा ङिश्योः' इत्यनेन विकल्पेन अल्लोपे राज्+न्+इ इति जाते 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन नकारस्य ञकारे संयोगे 'राज्ञि' इति रूपम्। अल्लोपाभावपक्षे च—'राजनि' इति रूपं सिद्धम्।

यज्वा—यज्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये यज्वन्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'यज्वा' इति सिद्धम्।

यज्वानौ—यज्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये यज्वन्+औ इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन नान्तस्योपधाया दीर्घत्वे 'यज्वानौ' इति सिद्धम्। एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि वोध्यम्।

यज्वानः—यज्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये यज्वन्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे यज्वन्+अस् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'यज्वानः' इति सिद्धम्।

यज्वनः—यज्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये यज्वन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे यज्वन्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अनोऽकारस्य लोपे प्राप्ते 'न संयोगाद्वमन्तात्' इत्यनेन निषेधे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'यज्वनः' इति सिद्धम्।

यज्वना—यज्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये अनुबन्धलोपे यज्वन्+आ इति 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अल्लोपे प्राप्ते 'न संयोगाद्वमन्तात्' इत्यनेन निषेधे, संयोगे 'यज्वना' इति सिद्धम्।

यज्वभ्याम्—यज्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये यज्वन्+भ्याम् इति जाते 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे यज्व+भ्याम् इति जाते 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति' इत्यनेन नलोपस्यासिद्धौ दीर्घाभावे 'यज्वभ्याम्' इति सिद्धम्।

**ब्रह्मणः**—ब्रह्मन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये ब्रह्मन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे ब्रह्मन्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अनोऽकारस्य लोपे प्राप्ते 'न संयोगाद्वमन्तात्' इति मान्तसंयोगत्वादल्लोपनिषेधे सति 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णत्वे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'ब्रह्मणः' इति सिद्धम् ।

**ब्रह्मणा**—ब्रह्मन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये ब्रह्मन्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे ब्रह्मन्+आ इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनेन अनोऽकारस्य लोपे प्राप्ते 'न संयोगाद्वमन्तात्' इत्यनेन मान्तसंयोगत्वादल्लोपनिषेधे सति 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'ब्रह्मणा' इति सिद्धम् ।

**वृत्रहा**—वृत्रहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये वृत्रहन्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'इन्हन्पूषार्यम्णां शौ' इति नियमादुपधाया दीर्घत्वाभावे प्राप्ते 'सौ च' इत्यनेन उपधाया दीर्घत्वे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन न लोपे 'वृत्रहा' इति सिद्धम् ।

**हे वृत्रहन्**—वृत्रहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे अनुबन्धलोपे हे वृत्रहन्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धित्वात् 'सौ च' इत्यनेन उपधायाः दीर्घाभावे 'हे वृत्रहन्' इति सिद्धम् ।

**वृत्रहणौ**—वृत्रहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये 'एकाजुत्तरपदे णः' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'वृत्रहणौ' इति सिद्धम् ।

**वृत्रहणः**—वृत्रहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमबहुवचने जस् प्रत्यये वृत्रहन्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'एकाजुत्तरपदे णः' इत्यनेन नकारस्य णकारे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'वृत्रहणः' इति सिद्धम् ।

**वृत्रघ्नः**—वृत्रहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये वृत्रहन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अल्लोपोऽनः' इत्यनोऽकारलोपे वृत्रह्न्+अस् इति जाते 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' इत्यनेन नकारे परे हकारस्य कुत्वेन घकारे सकारस्य रुत्वे रेफस्य विसर्गे च 'वृत्रघ्नः' इति सिद्धम् ।

**मघवान्**—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये

मघवन्+सु इति जाते 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे मघवतृ+सु इति जाते अनुबन्धलोपे मघवत्+सु इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे मघवन्त्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तकारलोपे सर्वनामस्थानत्वात् 'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'मघवान्' इति रूपं सिद्धम् । तृत्वाभावपक्षे—मघवन्+स्. इत्यवस्थायां सकारस्य लोपे, दीर्घे, नलोपे च 'मघवा' इति रूपं सिध्यति ।

**मघवन्तौ**—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये मघवन्+औ इति जाते 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे मघवत्+औ इति जाते, उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे संयोगे 'मघवन्तौ' इति सिद्धम् । तृत्वादेशाभावपक्षे—मघवन्+औ इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'मघवानौ' इति सिध्यति । एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

**मघवन्तः**—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे मघवन्+अस् इति जाते 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे मघवत्+अस् इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे मघवन्+त्+अस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मघवन्तः' इति सिद्धम् । तृत्वाभावपक्षे मघवन्+अस् इत्यवस्थायां 'सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मघवानः' इति सिध्यति ।

**मघवन्तम्**—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये मघवन्+अम् इति जाते 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे मघवत्+अम् इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे संयोगे 'मघवन्तम्' इति सिद्धम् । तृत्वाभावपक्षे—मघवन् +अम् इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे संयोगे च 'मघवानम्' इति सिध्यति ।

**मघवतः**—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये मघवन्+शस् इति जाते 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे मघवत्+अस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मघवतः' इति सिद्धम् ।

मघोनः—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन तृत्वादेशाभावपक्षे—मघवन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे मघवन्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'श्वयुवमघोनामतद्धिते' इत्यनेन सम्प्रसारणे यणो–वकारस्य इक्–उकारे जाते मघ+उ+अ+न्+अस् इति जाते 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने पूर्वरूपैकादेशे मघ+उन्+अस् इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन उकारस्य गुणे एकादेशे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'मघोनः' इति सिद्धम् ।

मघवता—मघवन् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये मघवन्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे मघवत्+आ इति जाते संयोगे 'मघवता' इति सिद्धम् । तृत्वाभाववक्षे—मघवन्+आ इत्यवस्थायां 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'श्वयुवमघोनामतद्धिते' इत्यनेन सम्प्रसारणे मघ+उ+अ+न्+आ इति जाते 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे मघ+उ+न्+आ इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'मघोना' इति सिध्यति ।

मघवद्भ्याम्—मघवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये मघवन्+भ्याम् इति जाते 'मघवा बहुलम्' इत्यनेन विकल्पेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे मघवत्+भ्याम् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वे 'मघवद्भ्याम्' इति सिद्धम् । तृत्वाभावपक्षे—मघवन्+भ्याम् इत्यवस्थायाम् 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति' इत्यनेन नलोपस्यासिद्धौ दीर्घाभावे 'मघवद्भ्याम्' इति सिध्यति ।

यूनः—युवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये युवन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'श्वयुवमघोनामतद्धिते' इत्यनेन वकारस्य सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे यु+उन्+अस् इति जाते यकारस्यापि 'श्वयुवमघोनामतद्धिते' इत्यनेन सम्प्रसारणे प्राप्ते 'न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्' इत्यनेन निषेधे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'यूनः' इति सिद्धम् ।

यूना—युवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये युवन्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'श्वयुवमघोनामतद्धिते'

इत्यनेन वकारस्य सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे यु+उन्+आ इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'यूना' इति सिद्धम्।

युवभ्याम्—युवन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये युवन्+भ्याम् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन लोपे 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति' इत्यनेन नलोपस्यासिद्धौ दीर्घाभावे 'युवभ्याम्' इति सिद्धम्।

अर्वा—अर्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अर्वन्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे अर्वन्+स् इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'अर्वा' इति सिद्धम्।

अर्वन्तौ—अर्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये अर्वन्+औ इति जाते 'अर्वणस्त्रसावनञः' इत्यनेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे अर्वत्+औ इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'अर्वन्तौ' इति सिद्धम्।

अर्वन्तः—अर्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अर्वन्+जस् इति जाते 'अर्वणस्त्रसावनञः' इत्यनेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे अर्वत्+अस् इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अर्वन्तः' इति सिद्धम्।

अर्वतः—अर्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने शस् प्रत्यये अर्वन्+शस् इति जाते 'अर्वणस्त्रसावनञः' इत्यनेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे अर्वत्+अस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अर्वतः' इति सिद्धम्।

अर्वता—अर्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये अर्वन्+टा इति जाते 'अर्वणस्त्रसावनञः' इत्यनेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे अर्वत्+आ इति जाते संयोगे 'अर्वता' इति सिद्धम्।

अर्वद्भ्याम्—अर्वन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अर्वन्+भ्याम् इति जाते 'अर्वणस्त्रसावनञः' इत्यनेन 'तृ' इत्यन्तादेशे अनुबन्धलोपे अर्वत्+भ्याम् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वे 'अर्वद्भ्याम्' इति सिद्धम्।

पन्थाः—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये पथिन्+सु इति जाते 'पथिमथ्यृभुक्षामात्' इत्यनेन आकारादेशे पथि+आ+स् इति

जाते 'इतोऽत् सर्वनामस्थाने' इत्यनेन इकारस्य अकारादेशे पथ्+अ+आ+सु इति जाते 'थो न्थः' इत्यनेन थकारस्य न्थादेशे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च सकारस्य रुत्वे विसर्गे 'पन्थाः' इति सिद्धम्। एवं सम्बोधनेऽपि बोध्यम्।

पन्थानौ—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये पथिन्+औ इति जाते 'इतोऽत् सर्वनामस्थाने' इत्यनेन इकारस्य अकारादेशे पथ्+अ+न्+औ इति जाते 'थो न्थः' इत्यनेन थकारस्य न्थादेशे पन्थ्+अ+न्+औ इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'पन्थानौ' इति सिद्धम्। एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि बोध्यम्।

पन्थानः—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये पथिन्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे पथिन्+अस् इति जाते 'इतोऽत् सर्वनामस्थाने' इत्यनेन इकारस्य अकारादेशे पथ्+अ+न्+अस् इति जाते 'थो न्थः' इत्यनेन थकारस्य न्थादेशे पन्थ्+अ+न्+अस् इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'पन्थानः' इति सिद्धम्।

पन्थानम्—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये पथिन्+अम् इति जाते 'इतोऽत् सर्वनामस्थाने' इत्यनेन इकारस्य अकारादेशे पथ्+अ+न्+अम् इति जाते 'थो न्थः' इत्यनेन थकारस्य न्थादेशे पन्थ्+अ+न्+अम् इति जाते 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे संयोगे च कृते 'पन्थानम्' इति सिद्धम्।

पथः—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये पथिन्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे पथिन्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिभागस्य लोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'पथः' इति सिद्धम्। एवं पञ्चम्येकवचने, षष्ठ्येकवचनेऽपि बोध्यम्।

पथा—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टाप्रत्यये पथिन्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे पथिन्+आ इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिभागस्य लोपे 'पथा' इति सिद्धम्।

पथिभ्याम्—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये पथिन्+भ्याम् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'पथिभ्याम्' इति सिद्धम्। एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम्।

पथिभिः—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये पथिन्+भिस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'पथिभिः' इति सिद्धम् ।

पथे—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये पथिन्+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे पथिन्+ए इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिभागस्य लोपे संयोगे च 'पथे' इति सिद्धम् ।

पथिभ्यः—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये पथिन्+भ्यस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'पथिभ्यः' इति सिद्धम् ।

पथोः—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये पाथिन्+ओस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिभागस्य लोपे, सकारस्य रुत्वे, विसर्गे च 'पथोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमी-द्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

पथाम्—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये पथिन्+आम् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिलोपे संयोगे 'पथाम्' इति सिद्धम् ।

पथि—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये पथिन्+ङि इति जाते अनुबन्धलोपे पथिन्+इ इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिभागस्य लोपे संयोगे 'पथि' इति सिद्धम् ।

पथिषु—पथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये पथिन्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'आदेशप्रत्यययोः' सकारस्य षकारे 'पथिषु' इति सिद्धम् ।

**ष्णान्ताः षट् ॥१।१।२४॥**

षान्ता नान्ता च संख्या षट्संज्ञा भवति ।

पञ्च—पञ्चन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये पञ्चन्+जस् इति जाते 'ष्णान्ताः षट्' इत्यनेन पञ्चन् शब्दस्य षट्संज्ञायां 'षड्भ्यो लुक्' इत्यनेन जसो लुकि 'पञ्च' इति सिद्धम् । एवं द्वितीयाबहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

पञ्चभिः—पञ्चन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये पञ्चन्+भिस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'पञ्चभिः' इति सिद्धम् ।

**पञ्चभ्यः**—पञ्चन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये पञ्चन्+भ्यस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'पञ्चभ्यः' इति सिद्धम्। एवं पञ्चमीबहुवचनेऽपि बोध्यम्।

**पञ्चानाम्**—पञ्चन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये पञ्चन्+आम् इति जाते 'ष्णान्ताः षट्' इत्यनेन पञ्चन्शब्दस्य षट्संज्ञायां 'षट्चतुर्भ्यश्च' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे पञ्चन्+न्+आम् इति जाते 'नोपधायाः' इत्यनेन दीर्घे 'पञ्चानाम्' इति सिद्धम्।

**पञ्चसु**—पञ्चन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये पञ्चन्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे पञ्चन्+सु इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'पञ्चसु' इति सिद्धम्।

**अष्टौ, अष्ट**—अष्टन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अष्टन्+जस् इति जाते 'अष्टन आ विभक्तौ' इत्यनेनाकारान्तादेशे अष्ट+आ जस् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'अष्टाभ्य औश्' इत्यनेन जस औशादेशे अष्टा+औश् इति जाते अनुबन्धलोपे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धयेकादेशे 'अष्टौ' इति सिद्धम्। आत्वादेशाभावपक्षे—अष्टन्+जस् इत्यवस्थायां 'ष्णान्ताः षट्' इत्यनेन षट्संज्ञायां 'षड्भ्यो लुक्' इत्यनेन जसो लुकि 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे च 'अष्ट' इति रूपं सिध्यति। एवं द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्ययेऽपि बोध्यम्।

**अष्टाभिः, अष्टभिः**—अष्टन् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये अष्टन्+भिस् इति जाते 'अष्टन आ विभक्तौ' इत्यनेन विकल्पेन आकारान्तादेशे अष्ट+आ+भिस् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अष्टाभिस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अष्टाभिः' इति सिद्धम्। आत्वादेशाभावपक्षे—अष्टन्+भिस् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अष्टभिः' इति सिध्यति।

**अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः**—अष्टन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये अष्टन्+भ्यस् इति जाते 'अष्टन आ विभक्तौ' इत्यनेन विकल्पेन आत्वे अष्ट+आ+भ्यस् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अष्टा+भ्यस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे स 'अष्टाभ्यः' इति सिद्धम्। आत्वादेशाभावपक्षे—अष्टन्+भ्यस् इत्यवस्थायां 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन

नलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अष्टभ्यः' इति सिध्यति। एवं पञ्चमी बहुवचनेऽपि बोध्यम्।

**अष्टानाम्**—अष्टन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये अष्टन्+आम् इति जाते 'अष्टन आ विभक्तौ' इत्यनेन विकल्पेन आत्वादेशे अष्ट+आ+आम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'ष्णान्ताः षट्' इत्यनेन षट्संज्ञायां 'षट्चतुर्भ्यश्च' इत्यनेन नुडागमे अष्टा+नुट्+आम् इति जाते अनुबन्धलोपे 'अष्टानाम्' इति सिद्धम्। आत्वादेशाभावपक्षे—अष्टन्+आम् इत्यवस्थायां षट्संज्ञायां 'षट्चतुर्भ्यश्च' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे अष्टन्+नाम् इति जाते 'नोपधायः' इत्यनेन दीर्घे अष्टान्+नाम् इति जाते 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'अष्टानाम्' इति सिद्धम्।

**अष्टासु, अष्टसु**—अष्टन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अष्टन्+सुप् इति जाते 'अष्टन आ विभक्तौ' इत्यनेन विकल्पेन आत्वादेशे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'अष्टासु, अष्टसु' इति रूपद्वयं सिध्यति।

**ऋत्विक्, ऋत्विग्**—ऋतौ उपपदे यजधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'वचिस्वपियजादीनाम् किति' इत्यनेन सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे ऋतु+इज्+क्विन् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणि ऋत्विज्+क्विन् इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्येत्संज्ञायां 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेनोभयोर्लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तस्मिन् गते वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेनापृक्तसंज्ञकस्य वकारस्य लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृतसंज्ञायां कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च ऋत्विज्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कवर्गान्तादेशे आन्तरतम्यात् जकारस्य गकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन चर्त्वेन वा ककारे 'ऋत्विक्, ऋत्विग्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

**ऋत्विजौ**—ऋतौ उपपदे यज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'वचिस्वपियजादीनां किति' इत्यनेन सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि ऋत्विज्+क्विन् इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्य-

नेन नकारस्य चेत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्निवृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये ऋत्विज+औ इति जाते संयोगे 'ऋत्विजौ' इति सिद्धम् ।

ऋत्विजः—ऋतौ उपपदे यज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'वचिस्वपियजादीनां किति' इत्यनेन सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नकारस्येत्संज्ञायां च 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्निवृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये ऋत्विज्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'ऋत्विजः' इति सिद्धम् ।

ऋत्विजा—ऋतौ उपपदे यज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'वचिस्वपियजादीनां किति' इत्यनेन सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नकारस्येत्संज्ञायां च 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्निवृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये ऋत्विज्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे संयोगे 'ऋत्विजा' इति सिद्धम् ।

ऋत्विग्भ्याम्—ऋतौ उपपदे यज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'वचिस्वपियजादीनां किति' इत्यनेन सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नकारस्य च इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्निवृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिक-

संज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये ऋत्विज्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्-प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कवर्गान्तादेशे जकारस्य गकारे 'ऋत्विग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

युङ्—युजिर् योगे इत्यस्माद्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नकारस्य च इत् संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्निवृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये युज्+सु इति जाते अनुबन्ध-लोपे 'युजेरसमासे' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे युन्+ज्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन जलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वेन ङकारे 'युङ्' इति सिद्धम् ।

युञ्जः—युज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नकारस्य च इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्निवृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्यनेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये युज्+जस् इति जाते अनुबन्ध-लोपे 'युजेरसमासे' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे युन्ज्+अस् इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नकारस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन अनुस्वारस्य परसवर्णे युञ्ज्+अस् इति जाते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'युञ्जः' इति सिद्धम् ।

युग्भ्याम्—युज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्य-नेन क्विन् प्रत्यये 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन ककारस्य 'हलन्त्यम्' इत्यनेन नका-रस्य च इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे इकारस्योच्चारणार्थत्वेन तन्नि-वृत्तौ वकारस्य 'अपृक्त एकाल्प्रत्ययः' इत्यनेन अपृक्तसंज्ञायां 'वेरपृक्तस्य' इत्य-नेन लोपे 'कृदतिङ्' इत्यनेन कृत्संज्ञायां कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीया-द्विवचने भ्याम् प्रत्यये युज्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कवर्गादेशे 'युग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

सुयुक्, सुयुग्—सुपूर्वात् युज्धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' इत्यनेन क्विप् प्रत्यये, क्विपः सर्वापहारिलोपे सुयुज् शब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'चोः कुः' इत्यनेन चवर्गस्य कवर्गादेशे—जकारस्य गकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन ककारे 'सुयुक्, सुयुग्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

सुयुजः—सुपूर्वात् युज्धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' इत्यनेन क्विप् प्रत्यये, क्विपः सर्वापहारिलोपे सुयुज् शब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये सुयुज्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'सुयुजः' इति सिद्धम्।

सुयुजा—सुपूर्वात् युज् धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' इत्यनेन क्विप् प्रत्यये, क्विपः सर्वापहारिलोपे सुयुज्शब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये सुयुज्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे संयोगे 'सुयुजः' इति सिद्धम्।

सुयुग्भ्याम्—सुपूर्वात् युज्धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' इत्यनेन क्विप् प्रत्यये, क्विपः सर्वापहारिलोपे सुयुज्शब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये सुयुज्+भ्याम् इति जाते 'चोः कुः' इत्यनेन जकारस्य गकारे 'सुयुग्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ॥८।२।३६॥**

व्रश्चादीनां सप्तानां छशान्तयोश्च षकारादेशो भवति झलि पदान्ते च।

राट्, राड्—राज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये राज्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन जकारस्य षकारे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तस्य जश्त्वेन डकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'राट्, राड्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

राजौ—राज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये राज्+औ इति जाते, संयोगे 'राजौ' इति सिद्धम्।

राजः—राज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये राज्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे राज्+अस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन

सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'राजः' इति सिद्धम्।

**राड्भ्याम्**—राज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये राज्+भ्याम् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन जकारस्य षकारे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तस्य जश्त्वेन डकारे 'राड्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**विभ्राट्, विभ्राड्**—विभ्राज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये विभ्राज्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन जकारस्य षकारे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षकारस्य जश्त्वेन डकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'विभ्राट्, विभ्राड्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

**देवेट्, देवेड्**—देवेज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये देवेज्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन जकारस्य षकारे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षकारस्य जश्त्वेन डकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'देवेट्, देवेड्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

**विश्वसृट्, विश्वसृड्**—विश्वसृज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये विश्वसृज्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन षकारादेशे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षस्य डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'विश्वसृट्' इति 'विश्वसृड्' इति च रूपद्वयं सिध्यति।

**परिमृट्, परिमृड्**—परिमृज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये परिमृज्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन षकारादेशे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षस्य डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'परिमृट्, परिमृड्' इति रूपद्वयं सिध्यति।

**परिव्राट्, परिव्राड्**—परिपूर्वाद् व्रजधातोः 'परौ व्रजेः षः पदान्ते' इति वार्तिकेन क्विप् प्रत्यये, उपधादीर्घे च कृते परिव्राज्+क्विप् इति जाते क्विपः सर्वापहारि लोपे प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये परिव्राज्+सु इति

जाते 'परौ व्रजेः षः पदान्ते' इति वार्तिकेन जकारस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षस्य डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'परिव्राट्, परिव्राड्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

विश्वाराट्, विश्वाराड्—विश्वराज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये विश्वराज्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना जस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षस्य डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे डस्य टत्वे 'विश्वस्य वसुराटोः' इत्यनेन दीर्घे 'विश्वाराट्, विश्वाराड्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

विश्वाराड्भ्याम्—विश्वराज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये विश्वराज्+भ्याम् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना जस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षस्य डत्वे 'विश्वस्य वसुराटोः' इत्यनेन दीर्घे च 'विश्वाराड्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

## स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ॥८।२।२९॥

पदान्ते झलि च परे यः संयोगस्तदाद्योः सकारककारयोर्लोपो भवति ।

भृट्, भृड्—भ्रस्ज पाके इत्यस्माद्धातोः क्विप् प्रत्यये क्विपः सर्वापहारिलोपे 'ग्राहिज्यावयिव्यधि' इत्यादिना सम्प्रसारणे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे प्रातिपदिकसंज्ञायां सुप्रत्यये भृस्ज+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' इत्यनेन संयोगाद्यस्य 'स्' इत्यस्य लोपे 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षकारस्य डकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन डकारस्य टकारे 'भृट्, भृड्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

भृड्भ्याम्—भ्रस्ज पाके इत्यस्माद्धातोः क्विप् प्रत्यये, क्विपः सर्वापहारि लोपे 'ग्रहिज्यावयिव्यधि' इत्यादिना सम्प्रसारणे रेफस्य ऋकारे 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये भृस्ज्+भ्याम् इति जाते 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' इत्यनेन 'स्' इत्यस्य लोपे 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना जस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षकारस्य डकारे 'भृड्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

स्यः—त्यद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये त्यद्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन 'द्' इत्यस्य

अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे त्य+स् इति जाते 'तदोः सः सावनन्त्योः' इत्यनेन अनन्त्यस्य तकारस्य सत्वे स्य+स् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'स्यः' इति सिद्धम् ।

त्यौ—त्यद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये त्यद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन दकारस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे त्य+औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'त्यौ' इति सिद्धम् ।

त्ये—त्यद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये त्यद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे त्य+जस् इति जाते 'जसः शी' इत्यनेन जसः स्थाने 'शी' आदेशे त्य+शी इति जाते अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने गुणैकादेशे 'त्ये' इति सिद्धम् ।

सः—तद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये तद्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे तद्+स् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन दस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे त+स् इति जाते 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन तकारस्य सकारादेशे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सोः सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'सः' इति सिद्धम् ।

तौ—तद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये तद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे त+औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'तौ' इति सिद्धम् ।

ते—तद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये तद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे 'जसः शी' इत्यनेन जसः स्थाने 'शी' आदेशे त+शी इति जाते अनुबन्धलोपे 'आद् गुणः' इत्यनेन पूर्वपरयोर्गुणैकादेशे 'ते' इति सिद्धम् ।

यः—यद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये यद्+सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन

पररूपैकादेशे य + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'यः' इति सिद्धम् ।

यौ—यद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये यद् + औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे य + औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे' 'यौ' इति सिद्धम् ।

ये—यद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये यद् + जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे य + जस् इति जाते 'जसः शी' इत्यनेन जसः स्थाने शी आदेशे य + शी इति जाते अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणैकादेशे 'ये' इति सिद्धम् ।

एषः—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये एतद् + सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन सकारादेशे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सस्य षत्वे कृते एष + सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'एषः' इति सिद्धम् ।

एतौ—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् 'प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये एतद् + औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे एत + औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'एतौ' इति सिद्धम् ।

एते—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये एतद् + जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे 'जसः शी' इत्यनेन जसः स्थाने शी आदेशे एत + शी इति जाते अनुबन्धलोपे 'आद् गुणः' इत्यनेन गुणैकादेशे 'एते' इति सिद्धम् ।

एतम्, एनम्—एतद् शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये एतद् + अम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे एत + अम् इति जाते 'अमिपूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'एतम्' इति सिद्धम् । अत्र अन्वादेशविषये 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन एतद् शब्दस्य 'एन' आदेशः, तत्पक्षे 'एनम्' इति रूपं जायते ।

एतौ, एनौ—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाद्विवचने औट् प्रत्यये एतद् + औट् इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः'

इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे एत+औ इति जाते 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्धयेकादेशे 'एतौ' इति सिद्धम्। अत्र अन्वादेशविषये 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन एतद् शब्दस्य 'एन' आदेशः, तत्पक्षे 'एनौ' इति रूपं जायते।

एतान्, एनान्—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीया-बहुवचने शस्प्रत्यये एतद्+शस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे एत+शस् इति जाते 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन शसः स्थाने नकारादेशे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन दीर्घे 'एतान्' इति सिद्धम्। अत्र अन्वादेशविषये 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन 'एतद्' शब्दस्य 'एन' आदेशः, तत्पक्षे 'एनान्' इति रूपं जायते।

एतेन, एनेन—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैक-वचने टा प्रत्यये एतद्+टा इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे एत+टा इति जाते 'टाङसिङसामिनात् स्याः' इत्यनेन 'टा' इत्यस्य इनादेशे एत+इन इति जाते 'आद् गुणः' इत्यनेन गुणे 'एतेन' इति सिद्धम्। अत्र अन्वादेशविषये 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन 'एतद्' शब्दस्य 'एन' आदेशः, तत्पक्षे 'एनेन' इति रूपं जायते।

एतयोः, एनयोः—एतद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठी-द्विवचने ओस् प्रत्यये एतद्+ओस् इति जाते 'त्यदीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे एत+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्यनेन एत्वे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'एतयोः' इति सिद्धम्। अत्र अन्वादेशविषये 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' इत्यनेन एतद् शब्दस्य 'एन' आदेशः, तत्पक्षे 'एनयोः' इति रूपं जायते।

## ङे प्रथमयोरम् ॥७।१।२८॥

युष्मदस्मद्भ्यां परस्य 'ङे' इत्येतस्य प्रथमाद्वितीययोरश्चामादेशो भवति।

त्वम्—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये युष्मद्+सु इति जाते 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन सोरमादेशे युष्मद्+अम् इति जाते 'त्वाहौ सौ' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य त्वादेशे विहिते त्व+अद्+अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दस्य लोपे त्व+अम् इति जाते 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'त्वम्' इति सिद्धम्।

अहम्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने

सु प्रत्यये अस्मद् + सु इति जाते 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन सोरमादेशे अस्मद् + अम् इति जाते 'त्वाही सौ' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य अहादेशे विहिते अह + अद् + अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दस्य लोपे अह + अम् इति जाते 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'अहम्' इति सिद्धम् ।

**युवाम्**—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये युष्मद् + औ इति जाते 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन औकारस्य अमादेशे 'युवावौ द्विवचने' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य युव-आदेशे युव + अद् + अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्' इत्यनेन आकारान्तादेशे युव + आ + अम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने दीर्घे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'युवाम्' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—द्वितीयाद्विवचने युव + अद् + अम् इति स्थितौ पररूपत्वे 'द्वितीयायां च' इत्यनेन आकारान्तादेशः ।

**आवाम्**—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये अस्मद् + औ इति जाते 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन औकारस्य अमादेशे 'युवावौ द्विवचने' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य आवादेशे आव + अद् + अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्' इत्यनेन आत्वे आव + आ + अम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन पूर्वपरयोः स्थाने दीर्घे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'आवाम्' इति सिद्धम् ।

**विशेषः**—द्वितीयाद्विवचने आव + अद् + अम् इति स्थितौ पररूपत्वे 'द्वितीयायां च' इत्यनेन आकारान्तादेशः ।

**यूयम्**—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये युष्मद् + जस् इति जाते 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन जसः स्थाने अमादेशे 'यूयवयौ जसि' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य यूयादेशे यूय + अद् + अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे 'यूयम्' इति सिद्धम् ।

**वयम्**—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अस्मद् + जस् इति जाते 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन जसः स्थाने अमादेशे 'यूयवयौ जसि' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य वयादेशे वय + अद् + अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपकादेशे 'वयम्' इति सिद्धम् ।

**त्वाम्**—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये युष्मद्+अम् इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य 'त्व' आदेशे त्व+अद्+अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'द्वितीयायाञ्च' इत्यात्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घत्वे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे च कृते 'त्वाम्' इति सिद्धम् ।

**माम्**—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये अस्मद्+अम् इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य मादेशे म+अद्+अम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'द्वितीयायाञ्च' इत्यात्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घत्वे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपैकादेशे च कृते 'माम्' इति सिद्धम् ।

**युष्मान्**—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये युष्मद्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यमि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'शसो नः' इत्यनेन शस आदेरकारस्य नादेशे युष्मद्+न्+स् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन सलोपे 'द्वितीयायाञ्च' इत्यात्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'युष्मान्' इति सिद्धम् ।

**अस्मान्**—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अस्मद्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन अमि प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'शसो नः' इत्यनेन शस आदेरकारस्य नादेशे अस्मद्+न्+स् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन सलोपे 'द्वितीयायञ्च' इत्यात्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'अस्मान्' इति सिद्धम् ।

**त्वया**—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञाकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने 'टा' प्रत्यये युष्मद्+टा इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य त्वादेशे त्व+अद्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे 'योऽचि' इत्यनेन यकारादेशे त्व+य्+आ इति जाते संयोगे 'त्वया' इति सिद्धम् ।

**मया**—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने 'टा' प्रत्यये अस्मद्+टा इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य मादेशे म+अद्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपे 'योऽचि' इत्यनेन यकारादेशे म+य्+आ इति जाते संयोगे 'मया' इति सिद्धम् ।

**युवाभ्याम्**—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये युष्मद्+भ्याम् इति जाते 'युवावौ द्विवचने' इत्यनेन मपर्यन्तस्य युष्मदो युवादेशे युव+अद्+भ्याम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे

'युष्मदस्मदोरनादेशे' इत्यनेन दकारस्य आकारादेशे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'युवाभ्याम्' इति सिद्धम्। एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम्।

आवाभ्याम्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अस्मद्+भ्याम् इति जाते 'युवावौ द्विवचने' इत्यनेन मपर्यन्तस्य अस्मद् शब्दस्य आवादेशे आव+अद्+भ्याम् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'युष्मदस्मदोरनादेशे' इत्यनेन दकारस्य आकारादेशे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'आवाभ्याम्' इति सिद्धम्। एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम्।

युष्माभिः—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये युष्मद्+भिस् इति जाते 'युष्मदस्मदोरनादेशे' इत्यनेन दकारस्य स्थाने आकारादेशे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'युष्माभिः' इति सिद्धम्।

अस्माभिः—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये अस्मद्+भिस् इति जाते 'युष्मदस्मदोरनादेशे' इत्यनेन दकारस्य आकारादेशे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'अस्माभिः' इति सिद्धम्।

तुभ्यम्—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये युष्मद्+ङे इति जाते 'तुभ्यमह्यौ ङयि' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य तुभ्य आदेशे तुभ्य+अद्+ङे इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन ङेरमादेशे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपादेशे 'तुभ्यम्' इति सिद्धम्।

मह्यम्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अस्मद्+ङे इति जाते 'तुभ्यमह्यौ ङयि' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य मह्यादेशे मह्य+अद्+ङे इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे 'ङे प्रथमयोरम्' इत्यनेन ङेरमादेशे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपादेशे 'मह्यम्' इति सिद्धम्।

युष्मभ्यम्—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये युष्मद्+भ्यस् इति जाते भ्यसो भ्यम्' इत्यनेन भ्यसः स्थाने भ्यमादेशे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे 'युष्मभ्यम्' इति सिद्धम्।

अस्मभ्यम्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहु-

वचने भ्यस् प्रत्यये अस्मद्+भ्यस् इति जाते 'भ्यसो भ्यम्' इत्यनेन भ्यसः स्थाने भ्यमादेशे 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे 'अस्मभ्यम्' इति सिद्धम् ।

त्वत्—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये युष्मद्+ङसि इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य त्वादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'एकवचनस्य च' इत्यनेन ङसेरति विहिते 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे त्व+अत् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे च 'त्वत्' इति सिद्धम् ।

मत्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अस्मद्+ङसि इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेनास्मदो मपर्यन्तस्य मादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'एकवचनस्य च' इत्यनेन ङसेरति विहिते 'शेषे लोपः' इत्यनेन दकारस्य लोपे म+अत् इति जाते 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे च 'मत्' इति सिद्धम् ।

युष्मत्—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चमीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये युष्मद्+भ्यस् इति जाते 'पञ्चम्या अत्' इत्यनेन भ्यसोऽति 'शेषे लोपः' इत्यनेन दस्य लोपे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'युष्मत्' इति सिद्धम् ।

अस्मत्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चमीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये अस्मद्+भ्यस् इति जाते 'पञ्चम्या अत्' इत्यनेन भ्यसोऽति 'शेषे लोपः' इत्यनेन दस्य लोपे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अस्मद्' इति सिद्धम् ।

तव—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठ्येकवचने ङस् प्रत्यये युष्मद्+ङस् इति जाते 'तवममौ ङसि' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य तवादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्' इत्यनेन ङसोऽशि विहिते अनुबन्धलोपे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'तव' इति सिद्धम् ।

मम—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठ्येकवचने ङस् प्रत्यये अस्मद्+ङस् इति जाते 'तवममौ ङसि' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य ममादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्' इत्यनेन ङसोऽशि विहिते अनुबन्धलोपे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे च 'मम' इति सिद्धम् ।

युवयोः—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये युष्मद्+ओस् इति जाते 'युवावौ द्विवचने' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्त-

स्य युवादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'योऽचि' इत्यनेन दकारस्य यकारे विहिते संयोगे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'युवयोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

आवयोः—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये अस्मद् + ओस् इति जाते 'युवावौ द्विवचने' इत्यनेन दकारस्य यकारे विहिते संयोगे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'आवयोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

युष्माकम्—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये युष्मद् + आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे युष्मद् + साम् इति जाते 'साम आकम्' इत्यनेन आकमादेशे युष्मद् + आकम् इति जाते 'शेषे लोपः' इत्यनेन दलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घत्वे 'युष्माकम्' इति सिद्धम् ।

अस्माकम्—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रतिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये अस्मद् + आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे अस्मद् + साम् इति जाते 'साम आकम्' इत्यनेन आकमादेशे अस्मद् + आकम् इति जाते 'शेषे लोपः' इत्यनेन दलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घत्वे 'अस्माकम् इति सिद्धम् ।

त्वयि—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये युष्मद् + ङि इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन युष्मदो मपर्यन्तस्य त्वादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे त्वद् + ङि इति जाते अनुबन्धलोपे 'योऽचि' इत्यनेन दकारस्य यकारादेशे संयोगे 'त्वयि' इति सिद्धम् ।

मयि—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अस्मद् + ङि इति जाते 'त्वमावेकवचने' इत्यनेन अस्मदो मपर्यन्तस्य मादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे च कृते मद् + ङि इति जाते अनुबन्धलोपे 'योऽचि' इत्यनेन दकारस्य यकारादेशे 'मयि' इति सिद्धम् ।

युष्मासु—युष्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये युष्मद् + सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'युष्मदस्मदोरनादेशे' इत्यनेन दस्याऽऽत्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घत्वे 'युष्मासु' इति सिद्धम् ।

अस्मासु—अस्मद्शब्दात् सर्वनामसंज्ञकात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने

सुप् प्रत्यये अस्मद् + सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'युष्मदस्मदोरनादेशे' इत्यनेन दस्याऽऽत्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घत्वे 'अस्मासु' इति सिद्धम्।

**युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥८।१।२०॥**

पदात्परयोरपादादौ स्थितयोः षष्ठ्यादिविशिष्टयोर्वान्नावित्येतावादेशौ भवतस्तौ चानुदात्तौ।

पद से पर अपादादि में (श्लोक या ऋचा के चरण के आदि में नहीं) स्थित जो षष्ठी चतुर्थी द्वितीयास्थ युष्मद्-अस्मद् शब्द उनको क्रम से 'वाम्' और 'नौ' आदेश होता है।

**बहुवचनस्य वस्नसौ ॥८।१।२१॥**

पदात्परयोरपादादौ स्थितयोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयाबहुवचनान्तयोर्युष्मदस्मदोर्वस्नसावादेशौ भवतः। वान्नावोरपवादः।

पद से पर अपादादि में स्थित षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीया बहुवचनान्त युष्मद्-अस्मद् शब्द को क्रम से 'वस्' और 'नस्' आदेश होता है।

**तेमयावेकवचनस्य ॥८।१।२२॥**

पदात्परयोरपादादौ स्थितयोः षष्ठीचतुर्थ्येकवचनान्तयोर्युष्मदस्मदो'स्ते-मे' इत्येतावादेशौ भवतः।

पद से पर अपादादि में स्थित षष्ठी-चतुर्थ्येकवचनान्त युष्मद्-अस्मद् शब्द को 'ते' और 'मे' आदेश होता है।

क्रमशः उदाहरणानि

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तयः |
|---|---|---|---|
| स्थानी—त्वाम्, माम् | युवाम्, आवाम् | युष्मान्, अस्मान्। | द्वितीया |
| आदेशः—त्वा, मा | वाम्, नौ | वः, नः। | |
| स्थानी—तुभ्यम्, मह्यम् | युवाभ्याम्, आवाभ्याम् | युष्मभ्यम्, अस्मभ्यम्। | चतुर्थी |
| आदेशः—ते, मे | वाम्, नौ | वः, नः। | |
| स्थानी—तव, मम | युवयोः, आवयोः | युष्माकम्, अस्माकम्। | षष्ठी |
| आदेशः—ते, मे | वाम्, नौ | वः, नः। | |

श्रीश'स्त्वा'ऽवतु 'मा'ऽपीह दत्ताद् 'ते' 'मे'ऽपि शर्म सः।
स्वामी 'ते' 'मे'ऽपि स हरिः, पातु 'वाम'पि 'नौ' विभुः ॥ १ ॥
सुखं 'वां' 'नौ' ददात्वीशः, पति'र्वाम'पि 'नौ' हरिः।
सोऽव्याद् 'वो' 'नः' शिवं 'वो' 'नो' दद्यात् सेव्योऽत्र 'वः' सः 'नः' ॥२॥

**श्रीशस्त्वावतु इति श्लोकार्थः**—इह-संसारे, श्रीशः-लक्ष्मीपतिः नारायणः, त्वा-त्वाम्, मा-माम्, अपि-च, अवतु-पातु, रक्षतु। अत्र द्वितीयाया एकवचने 'त्वामौ द्वितीयायाः' इत्यनेन 'त्वा' 'मा' आदेशे क्रमशः कृते त्वा मा इति रूपे भवतः। स-पूर्वोक्तः हरिः-नारायणः, ते-तुभ्यम्, मे-मह्यम् अपि, शर्म-सुखं, दत्तात्-ददातु। अत्र चतुर्थ्येकवचने 'तेमयावेकवचनस्य' इत्यनेन क्रमशः 'ते' 'मे' आदेशे उभे रूपे भवतः। स हरिः—पूर्वोक्तः नारायणः, ते-तव, मे-मम, अपि-च स्वामी-प्रभुः, अस्तीति शेषः। अत्र षष्ठ्येकवचने 'तेमयावेकवचनस्य' इत्यनेन तव मम इत्यस्य स्थाने क्रमशः 'ते' 'मे' आदेशौ भवतः। (सः) विभुः-व्यापको नारायणः वाम्-युवाम्, नौ-आवाम् पातु-रक्षतु। अत्र द्वितीयायाः द्विवचने 'युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ' इत्यनेन युवाम्, आवाम् इत्यनयोः स्थाने क्रमशो वाम् नौ आदेशौ भवतः। (सः) ईशः-प्रभुः, वाम्-युवाभ्याम्, नौ-आवाभ्याम्, सुखं-कल्याणं ददातु-दत्तात्। अत्र चतुर्थीद्विवचने 'तेमयावेकवचनस्य' इत्यनेन युवाभ्याम्, आवाभ्याम् इत्यनयोः स्थाने क्रमशो वाम्, नौ आदेशौ भवतः। (सः) हरिः-नारायणः वां-युवयोः, नौ-आवयोः, पतिः-प्रभुः अस्तीति शेषः। अत्र षष्ठीद्विवचने युवयोः, आवयोः इत्यनयोः स्थाने स्थाने क्रमशो वाम् नौ आदेशौ भवतः। सः-हरिः वः-युष्मान्, नः-अस्मान् अव्यात्-रक्षेत्। अत्र द्वितीयाबहुवचने युष्मान्, अस्मान् इत्यनयोः स्थाने क्रमशो वः, नः इत्येतावादेशौ भवतः। सः-हरिः, वः-युष्मभ्यम्, नः-अस्मभ्यम्, शिवं-कल्याणं, दद्यात्। अत्र चतुर्थीबहुवचने युष्मभ्यम्, अस्मभ्यम् इत्यनयोः स्थाने क्रमशो वः, नः इत्येतावादेशौ भवतः। अत्र-इह लोके, सः-हरिः, वः-युष्माकम्, नः-अस्माकम्, सेव्यः-आराध्यः अस्तीति शेषः। अत्र षष्ठीबहुवचने युष्माकम्, अस्माकम् इत्यनयोः स्थाने वः, नः इत्येतावादेशौ भवतः।

## (वा०) एकवाक्ये निघातयुष्मदस्मदादेशाः वक्तव्याः।

एकतिङ् वाक्यम्। एकवाक्य एव युष्मदस्मदोरनुदात्तत्वम्पूर्वोक्ता वाम् नौ प्रभृतय आदेशाः भवन्ति। एकतिङ्घटितमेव वाक्यम्भवति। तेनेह न—ओदनं पच, तव भविष्यति। इह तु स्यादेव—शालीनां ते ओदनं दास्यामि।

एक वाक्य में ही युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान में त्वा, मा, ते, मे, वाम्, नौ, वस् और नस् आदेश होते हैं। एक तिङन्त पदघटित पदसमूह वाक्य कहा जाता है। जैसे—'शालीनां ते ओदनं दास्यामि' यहाँ एक तिङन्त पद 'दास्यामि' है, अतः 'तुभ्यम्' के स्नान में 'ते' आदेश हुआ। 'ओदनं प च

तव भविष्यति' यहाँ दो वाक्य हैं क्योंकि पच और भविष्यति दो तिङन्त पद हैं, द्वितीय वाक्य के आदि में होने से पद के परे 'तव' नहीं है, अतः ते आदेश नहीं होता।

**(वा०) एते वान्नावादय आदेशा अनन्वादेशे वा वक्तव्याः।**

एते पूर्वोक्ताः वाम् नौ प्रभृतय आदेशाः अनन्वादेशे विकल्पेन वक्तव्याः अन्वादेशे तु नित्यमेव भवन्ति। यथा—धाता ते भक्तोऽस्ति, तव भक्तोऽस्तीति वा। तस्मै ते नम इत्येव।

**न चवाहाहैव युक्ते ॥८।१।२४॥**

च, वा, ह, अह, एवं तेषां पञ्चानां योगे वाम् नौ प्रभृतय आदेशा न भवन्ति यथा—हरिस्त्वां मां च रक्षतु। कथं त्वां मां वा न रक्षेदित्यादि।

**पश्यार्थैश्चानालोचने ॥८।१।२५॥**

आलोचनं चाक्षुषं ज्ञानम्, तद्भिन्नमनालोचनम्। अचाक्षुषज्ञानार्थैर्धातुभिर्योगे वाम् नौ प्रभृतय आदेशा न भवन्ति। यथा—चेतसा त्वां समीक्षते। आलोचने तु भवत्येव—भक्तस्त्वा पश्यति चक्षुषा।

**सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ॥८।१।२६॥**

विद्यमानपूर्वात्प्रथमान्तादन्वादेशेऽप्येते आदेशाः विकल्पेन भवन्ति। यथा—भक्तस्त्वमप्यहं तेन हरिस्त्वां त्रायते स माम्। त्वा, मेति वा।

**सामन्त्रितम् ॥२।३।४८॥**

सम्बोधने या प्रथमा तदन्तमामन्त्रितसंज्ञं स्यात्।

**आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ॥८।१।७२॥**

पूर्वमामन्त्रितं पदमविद्यमानवद् भवति। यथा—अग्ने तव। देवा अस्मान् पाहि।

अग्ने तव—'अग्ने तव श्रवो वयः' इत्यृचि 'अग्ने' इति सम्बोधनप्रथमान्तं प्रातिपदिकम्। 'सामन्त्रितम्' इत्यनेन तस्य आमन्त्रितसंज्ञायां 'आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्' इत्यनेन आमन्त्रितसंज्ञकस्य 'अग्ने' प्रातिपदिकस्याऽविद्यमानवद्भावे 'तव' इति पदस्य पदात् परत्वाभावात्, पादादौ स्थितत्वाच्च। 'तेमयावेकवचनस्य' इत्यनेन 'तव' इत्यस्य 'ते' इत्यादेशो न भवति।

देवाऽस्मान् पाहि—अत्र 'सामन्त्रितम्' इत्यनेन सम्बोधनबहुवचनान्तस्य 'देवा' इति पदस्य आमन्त्रितसंज्ञायां 'आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्' इत्यनेन 'देवा' इत्यस्याऽविद्यमानवद्भावे 'अस्मान्' इत्यस्य 'बहुवचनस्य वस्नसौ'

इत्यनेन अस्मदो नसादेशो न भवति; 'अस्मान्' इति पदस्य पदात् परत्वाभावात्, पदादौ स्थितत्वाच्चेति ।

## नाऽऽमन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम् ।।८।१।७३।।

विशेष्यवाचकं यदामन्त्रितं पदम्, तत् समानाधिकरणे विशेषणे परतः अविद्यमानवन्न भवति । यथा—हरे ! दयालो ! नः पाहि ।

सुपात्, सुपाद्—शोभनौ पादौ यस्येति विग्रहे सुपाद् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये सुपाद्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्ब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सस्य लोपे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन दस्य तत्वे च 'सुपात्' इति, चर्त्वाभावे च 'सुपाद्' इति सिद्धम् ।

## पादः पत् ।।६।४।१३०।।

पाच्छब्दान्तं यदङ्गं भं तदवयवस्य पाच्छब्दस्य पदादेशो भवति ।

सुपदः—सुपाद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये सुपाद्+जस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'पादः पत्' इत्यनेन 'पाद्' शब्दस्य पदादेशे सुपद+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'सुपदः' इति सिद्धम् । एवं बहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

सुपदा—सुपाद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये सुपाद्+टा इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'पादः पत्' इत्यनेन 'पाद' शब्दस्य पदादेशे सुपद्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे संयोगे 'सुपदा' इति सिद्धम् ।

सुपाद्भ्याम्—सुपाद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये संयोगे 'सुपाद्भ्याम्' इति सिद्धम् । अत्राजादिविभक्तेरभावान्न भत्वम्, भत्वाभावान्न पदादेशः ।

अग्निमत्, अग्निमद्—अग्निमथ्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अग्निमथ्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन थकारस्य दकारे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'अग्निमत्, अग्निमथ्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

अग्निमथौ—अग्निमथ्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये अग्निमथ्+औ इति जाते संयोगे 'अग्निमथौ' इति सिद्धम् ।

अग्निमथः—अग्निमथ्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अग्निमथ्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अग्निमथः' इति सिद्धम् ।

**अग्निमद्भ्याम्**—अग्निमथ्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अग्निमथ्+भ्याम् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन थकारस्य दकारे 'अग्निमद्भ्यांम्' इति सिद्धम् ।

**प्राङ्**—प्र+अन् च् इत्यवस्थायां 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे, प्रत्ययलक्षणेन 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानकारस्य लोपे प्र अच् इति जाते 'कृदतिङ्' इत्यनेन क्विनः कृत्संज्ञकत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचनें सु प्रत्यये 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमें अनुबन्धलोपे प्र अन् च्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नकारस्य कुत्वेन ङकारे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे 'प्राङ्' इति सिद्धम् ।

**प्राञ्चौ**—प्रपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे, प्रत्ययलक्षणेन 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानकारस्य लोपे प्र अच् इति जाते, क्विनः कृत्संज्ञकत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे प्र अन् च्+औ इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नकारस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे 'प्राञ्चौ' इति सिद्धम् ।

**प्राञ्चः**—प्रपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे, प्रत्ययलक्षणेन 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानकारस्य लोपे प्र+अच् इति जाते, क्विनः कृत्संज्ञकत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे प्र+अन् च्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नकारस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'प्राञ्चः' इति सिद्धम् ।

**प्राचः**—प्रपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च'

इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे प्रत्ययलक्षणेन 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानकारलोपे प्र+अच् इति जाते क्विनः कृत्संज्ञकत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये प्र+अच्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अकारस्य लोपे 'चौ' इत्यनेन प्र-अकारस्य दीर्घे संयोगे सस्य रुत्वे विसर्गे च 'प्राचः' इति सिद्धम्।

**प्राचा**—प्रपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे प्र+अच् इति जाते क्विनः कृत्संज्ञकत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये प्र+अच्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अकारस्य लोपे 'चौ' इत्यनेय प्र-अकारस्य दीर्घे संयोगे च 'प्राचा' इति सिद्धम्।

**प्राग्भ्याम्**—प्रपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये क्विनः सर्वापहारिलोपे प्र+अच् इति जाते क्विनः कृत्संज्ञकत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये प्र+अच्+भ्याम् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अकारस्य लोपे 'चौ' इत्यनेन प्र-अकारस्य दीर्घे प्राच्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन चस्य कत्वे प्राक्+भ्याम् इति जाते 'झलां जश् झशि' इत्यनेन ककारस्य गकारे 'प्राग्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**प्रत्यङ्**—प्रतिपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये क्विनः सर्वापहारिलोपे प्रति+अन्+च् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणि 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्रत्यच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्' इत्यादिना सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चलोपे, नुमो नकारस्य 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन ङकारे 'प्रत्यङ्' इति सिद्धम्।

**प्रत्यञ्चौ**—प्रतिपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यय क्विनः सर्वापहारिलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि प्रत्यञ्च् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्रत्यच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये प्रत्यच्+

औ इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे प्रत्यन्च्+औ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णादेशे संयोगे 'प्रत्यञ्चौ' इति सिद्धम् ।

**प्रत्यञ्चः**—प्रतिपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये क्विनः सर्वापहारिलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि प्रत्यञ्च् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्रत्यच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये प्रत्यच्+जस् इति अनुबन्धलोपे सर्वनामस्थानत्वात् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातो' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे प्रत्यन्च्+अस् इति जाते संयोगे, सस्य रुत्वे विसर्गे च 'प्रत्यञ्चः' इति सिद्धम् ।

**प्रतीचः**—प्रतिपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे प्रति+अन्च् इति जाते कृत्संज्ञकत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये प्रति+अन्च्+शस् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे कृते अनुबन्धलोपे प्रति+अच्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इत्यनेन पूर्वस्याणो दीर्घत्वे सस्य रुत्वे रेफस्य विसर्गे च 'प्रतीचः' इति सिद्धम् ।

**प्रत्यग्भ्याम्**—प्रतिपूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि प्रत्यन्च् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्रत्यच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये प्रत्यये प्रत्यच्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वे प्रत्यक्+भ्याम् इति जाते 'झलां जश् झशि' इत्यनेन ककारस्य गकारे 'प्रत्यग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**उदङ्**—उद्पूर्वात् अञ्चु धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे उदन्च् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे उदच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उदच्+सु इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे उदन्च्+स् इति

जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन नकारस्य ङकारे 'उदङ्' इति सिद्धम् ।

उदञ्चौ—उद्पूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्वग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे उदञ्च् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे उदच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये उदच्+औ इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे उदन्च्+औ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे संयोगे च 'उदञ्चौ' इति सिद्धम् ।

उदञ्चः—उद्पूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारि लोपे 'उदञ्च्' इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे उदच् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये उदच्+जस् इति जाते अनुन्धलोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे उदन्च्+अस् इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे, संयोगे, सकारस्य रुत्वे विसर्गेच 'उदञ्चः' इति सिद्धम् ।

उदीचः—उद्पूर्वाद् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नकारलोपे उदच् इति जाते 'कृदतिङ्' इत्यनेन क्विनः कृत्संज्ञायां, कृदन्तत्वात् "कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे उदच्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अलोपे प्राप्ते, तम्प्रबाध्य 'उद ईत्' इत्यनेन ईत्वे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'उदीचः' इति सिद्धम् ।

उदीचा—उद्पूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विदधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नकारलोपे उदच् इति जाते 'कृदतिङ्' इत्यनेन क्विनः कृत्संज्ञायां, कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये उदच्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे 'यचि

भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अलोपे प्राप्ते तम्प्रबाध्य 'उद ईत्' इत्यनेन ईत्वे संयोगे 'उदीचा' इति सिद्धम् ।

उदग्भ्याम्—उद्पूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नकारलोपे उदच् इति जाते 'कृदतिङ्' इत्यनेन क्विनः कृतसंज्ञायां कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन प्रातिपदिकसंज्ञायां, तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये उदच्+भ्याम् इति जाते क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन चकारस्य ककारे उदक्+भ्याम् इति जाते 'झलां जश् झसि' इत्यनेन ककारस्य गकारे 'उदग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

सम्यङ्—सम्पूर्वात् अञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृस्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चा च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सम्+अन्च्+क्विन् इति जाते 'समः समि' इत्यनेन 'सम' शब्दस्य 'समि' इत्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे सम्यन् च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चलोपे 'क्वन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन नस्य ङकारे 'सम्यङ्' इति सिद्धम् ।

सम्यञ्चौ—सम्पूर्वात् अञ्चु धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चु युजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सम्+अन्च्+क्विन् इति जाते 'समः समि' इत्यनेन समः स्थाने सम्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि सम्यन् च्+क्विन् इति जाते क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सम्यच्+औ इति जाते सर्वनामस्थानत्वात् 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे सम्यन्च्+औ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे, संयोगे च 'सम्यञ्चौ' इति सिद्धम् ।

समीचः—सम्पूर्वात् अन्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चु युजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सम्+अन्च्+क्विन् इति जाते 'समः समि' इत्यनेन समः स्थाने समि इत्यादेशे, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे कृदन्तत्वात् 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इत्यनेन

प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये समि+अच्+अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' ईत्यनेन पूर्वस्याणो दीर्घे संयोगे च कृते सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'समीचः' इति सिद्धम् ।

**सम्यग्भ्याम्**—समिपूर्वात् अञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सम्+अन्च्+क्विन् इति जाते 'समः समि' इत्यनेन समः स्थाने सम्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि सम्यन् च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये सम्यच्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वे सम्यक्+भ्याम् इति जाते 'झलां जश् झशि' इत्यनेन ककारस्य गकारे 'सम्यग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**सध्र्यङ्**—सहपूर्वात् अञ्चु धाचोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सह+अन्च्+क्विन् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, क्विनः सर्वापहारिलोपे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये सह+अच्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'सहस्य सध्रिः' इत्यनेन सहस्य 'सध्रिः' इत्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारस्य लोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वेन ङकारे 'सध्र्यङ्' इति सिद्धम् ।

**सध्र्यञ्चौ**—सहपूर्वात् अञ्चु धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सह+अन्च्+क्विन् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, क्विनः सर्वापहारिलोपे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सह+अच्+औ इति जाते अनुबन्धलोपे 'सहस्य सध्रिः' इत्यनेन सहस्य सध्रि इत्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे सध्र्यन्च्+औ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे संयोगे च 'सध्र्यञ्चौ' इति सिद्धम् ।

**सध्रीचः**—सहपूर्वात् अञ्चु धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सह+अन्च्+क्विन् इति जाते 'अनिदितां हल उप-

धायाः क्ङिति' इत्यनेन न लोपे, क्विनः सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये सह + अच् + शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'सहस्य सध्रिः' इत्यनेन सहस्य 'सध्रि' इत्यादेशे सध्रि + अच् + अस् इति जाते 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इत्यनेन पूर्वस्याणो दीर्घत्वे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'सध्रीचः' इति सिद्धम् ।

**सध्र्यग्भ्याम्**—सहपूर्वात् अञ्च् धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये सह + अन्च् + क्विन् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, क्विनः सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये सह + अच् + भ्याम् इति जाते 'सहस्य सध्रिः' इत्यनेन सहस्य 'सध्रि' इत्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि सध्र्यच् + भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वे 'झलां जश् झशि' इत्यनेन ककारस्य जश्त्वेन गकारे 'सध्र्यग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**तिर्यङ्**—तिरस्पूर्वात् अञ्च् धातोः ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'तिरसस्तिर्यलोपे' इत्यनेन तिरसः स्थाने तिरि इत्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे तिर्यञ्च् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारस्य लोपे 'क्विन्प्रत्यस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन नस्य ङकारे 'तिर्यङ्' इति सिद्धम् ।

**तिरश्चौ**—तिरस्पूर्वात् अञ्च् धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानलोपे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये तिरस् + अच् + औ इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अल्लोपे 'तिरसस्तिर्यलोपे' इत्यस्याऽप्राप्त्या 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन सस्य श्चुत्वेन शकारे, संयोगे 'तिरश्चौ' इति सिद्धम् ।

**तिरश्च**—तिरस्पूर्वात् अञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानलोपे तिरस् + अच् + अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अल्लोपे 'तिरसस्तिर्यलोपे' इत्यस्याऽप्राप्त्या 'स्तोः श्चुना श्चुः'

इत्यनेन सस्य श्चुत्वेन शकारे: संयोगे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च तिरश्चः इति सिद्धम् ।

तिरश्चा—तिरस्पूर्वात् अञ्च् धातोः ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये तिरस् +अच्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे तिरस्+अच्+आ इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'अचः' इत्यनेन अल्लोपे 'तिरसस्तिर्यलोपे' इत्यस्याप्राप्त्या 'स्तोः श्चुना श्चुः' इत्यनेन सस्य श्चुत्वेन शकारे 'तिरश्चा' इति सिद्धम् ।

तिर्यग्भ्याम्—तिरस्पूर्वात् अञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन उपधानलोपे, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'तिरसस्तिर्यलोपे' इत्यनेन तिरसः स्थाने 'तिरि' इत्यादेशे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये तिर्यच्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वे तिर्यक्+भ्याम् इति जाते 'झलां जश् झशि' इत्यनेन जश्त्वेन कस्य गत्वे 'तिर्यग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

प्राङ्—प्रपूर्वात् अञ्च् धातोः 'ऋत्विक्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये प्र+अन्च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन निषिद्धे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारस्य लोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नकारस्य ङकारे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'प्राङ्' इति सिद्धम् ।

प्राञ्चौ—प्रपूर्वात् अञ्च्धातोः ऋत्विक्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये प्र+अन्च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन निषिद्धे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये प्र+अन्च्+औ इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन परसवर्णे, संयोगे 'प्राञ्चौ' इति सिद्धम् ।

प्राञ्चः—प्रपूर्वात् अञ्च्धातो 'ऋत्विक्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां

च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये प्र+अन्च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन निषिद्धे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे प्र+अन्च्+अस् इति जाते, नलोपाभावाद् 'अचः' इत्यनेन अल्लोपाऽप्राप्तौ 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'प्राञ्चः' इति सिद्धम् ।

प्राङ्भ्याम्—प्रपूर्वात् अञ्च् धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये प्र+अन्च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन निषिद्धे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये प्र+अन्च्+भ्याम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे प्रान्च्+भ्याम् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नकारस्य कुत्वेन ङकारे 'प्राङ्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

प्राङ्षु, प्राङ्क्षु—प्रपूर्वात् अञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये प्र+अन्च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन निषिद्धे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे प्र+अन्च्+सु इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वे ङकारे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सस्य षत्वे 'ङ्णोः कुक्टुक् शरि' इत्यनेन विकल्पेन कुकि अनुबन्धलोपे 'क् ष्' संयोगे क्षकारे 'प्राङ्षु, प्राङ्क्षु' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

क्रुङ्—क्रुञ्च् कौटिल्याल्पीभावयोः इत्यस्माद्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये क्रुन्च्+क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना निपातनान्नलोपाभावे कृते, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे क्रुञ्च्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन

चकारलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वेन ङकारे 'क्रुङ्' इति सिद्धम् ।

क्रुञ्चौ—क्रुञ्च् कौटिल्याल्पीभावयोः इत्यस्माद्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, क्रुन्च् + क्विन् इति जाते, क्विनः सर्वापहारिलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना निपातनान्नलोपाभावे कृते कृदन्तत्वात् प्रादिपदिकसंज्ञायां, प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये कुन्च् + औ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे, संयोगे च कृते 'क्रुञ्चौ' इति सिद्धम् ।

क्रुञ्चः—क्रुञ्च् धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपेः 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना निपातनान्नलोपाभावे कृते, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे क्रुन्च् + अस् इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे, संयोगे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'क्रुञ्चः' इति सिद्धम् ।

क्रुङ्भ्याम्—क्रुञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे, 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे प्राप्ते 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना निपातनान्नलोपाभावे कृते, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये क्रुन्च् + भ्याम् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारलोपे, 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वेन ङकारे 'क्रुङ्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

महान्—महत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्ध लोपे महत् + स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे महन् + त् इति जाते 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेनोपधायाः दीर्घत्वे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तकारस्य लोपे 'महान्' इति सिद्धम् ।

महान्तौ—महत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये महत् + औ इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे महन्त् + औ इति जाते 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेनोपधादीर्घत्वे 'महान्तौ' इति सिद्धम् ।

**महान्तः**—महत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अनुबन्धलोपे महत्+अस् इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे महन्+त्+अस् इति जाते 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्युपधादीर्घत्वे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'महान्तः' इति सिद्धम् ।

**हे महन्**—महत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये महत्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सलोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे हे महन्+त् इति जाते सम्बुद्धित्वात् 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेनोपधादीर्घाप्राप्तौ 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तलोपे 'हे महन्' इति सिद्धम् ।

**महतः**—महत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये महत्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्जनीये 'महतः' इति सिद्धम् ।

**महद्भ्याम्**—महत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये महत्+भ्याम् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तस्य दत्वे 'महद्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**धीमान्**—धीमत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये धीमत्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'धीमन्+त्+स् इति जाते 'अत्वसन्तस्य चाऽधातो.' इत्यनेनोपधादीर्घत्वे धीमान्+त्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तलोपे 'धीमान्' इति सिद्धम् ।

**धीमन्तौ**—धीमत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने 'औ' प्रत्यये धीमत्+औ इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे संयोगे च 'धीमन्तौ' इति सिद्धम् ।

**धीमन्तः**—धीमत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने 'जस्' प्रत्यये धीमत्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे धीमत्+अस् इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे,

अनुबन्धलोपे, सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, रेफस्य विसर्गे च 'धीमन्तः' इति सिद्धम् ।

हे धीमन्—धीमत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये धीमत्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' इत्यनेन सलोपे सर्वनामस्थानत्वात् उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे हे धीमन्+त् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तलोपे 'हे धीमन्' इति सिद्धम् ।

भवान्—भाधातोः 'भातेर्डवतुः' इत्युणादिसूत्रेण डवतुप्रत्यये अनुबन्धलोपे डित्वसामर्थ्यादभस्याऽपि टेर्लोपे निष्पन्नात् 'भवत्'शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अत्वसन्तस्य चाधातोः' इत्यनेन दीर्घे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे भवान्+त्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तलोपे तस्याऽसिद्धत्वान्नलोपाभावे 'भवान्' इति सिद्धम् ।

भवन्तौ—भाधातोः 'भातेर्डवतुः' इत्युणादिसूत्रेण डवतुप्रत्यये अनुबन्धलोपे डित्वसामर्थ्यादभस्याऽपि टेर्लोपे निष्पन्नात् 'भवत्'शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये भवत्+औ इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे संयोगे 'भवन्तौ' इति सिद्धम् ।

भवन्—भूधातोः 'वर्तमाने लट्' इत्यनेन लटि 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' इत्यनेन शतृप्रत्यये अनुबन्धलोपे भू+अत् इति जाते 'तिङ्शित् सार्वधातुकम्' इत्यनेन सार्वधातुकसंज्ञायां 'कर्तरि शप्' इत्यनेन शप्यनुबन्धलोपे भू+अ+अत् इति जाते 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' इत्यनेन 'भू' इत्यस्य गुणे ओकारे भो+अ+अत् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अवादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे निष्पन्नात् भवत् शब्दात् कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे अत्वन्ताभावाद् दीर्घाभावे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन तकारलोपे 'भवन्' इति सिद्धम् ।

ददत्—ददत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये अनुबन्धलोपे ददत्+स् इति जाते 'उभे अभ्यस्तम्' इत्यनेन अभ्यस्तसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे प्राप्ते 'नाभ्यस्ताच्छतुः' इत्यनेन निषेधे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'सुप्तिङन्तं पदम्' इत्यनेन

पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तकारस्य दकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन चर्त्वेन दकारस्य तकारे 'ददत्' इति सिद्धम् । पक्षे—'ददद्' इति रूपं भवति ।

ददतौ—ददत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये ददत्+औ इति जाते 'उभे अभ्यस्तम्' इत्यनेन अभ्यस्तसंज्ञायां 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे प्राप्ते 'नाभ्यस्ताच्छतुः' इत्यनेन निषेधे संयोगे 'ददतौ' इति सिद्धम् ।

जक्षत्—जक्षत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे जक्षत्+स् इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे प्राप्ते 'जक्षित्यादयः षट्' इत्यनेन अभ्यस्तसंज्ञायां 'नाभ्यस्ताच्छतुः' इत्यनेन निषेधे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'सुप्तिङन्तं पदम्' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन तकारस्य दकारे वाऽवसाने इत्यनेन चर्त्वेन दकारस्य तकारे 'जक्षत्' इति सिद्धम् । पक्षे—'जक्षद्' इति रूपं सिध्यति ।

जक्षतः—जक्षत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये जक्षत्+जस् इति जाते, अनुबन्धलोपे, जक्षत्+अस् इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे प्राप्ते 'जक्षित्यादयः षट्' इत्यनेन अभ्यस्तसंज्ञायां 'नाभ्यस्ताच्छतुः' इत्यनेन नुमो निषेधे, संयोगे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'जक्षतः' इति सिद्धम् ।

तादृक्, तादृग्—तद्शब्दोपपदाद् दृश् धातोः 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे 'आ सर्वनाम्नः' इत्यनेन दकारस्य आकारे त+आ+दृश् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे तादृश् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे तादृश्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वस्यासिद्धत्वात् 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन शकारस्य षत्वे पदत्वात् 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षकारस्य डकारे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन तस्य कुत्वेन गकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन तस्य चर्त्वेन ककारे 'तादृक्' इति सिद्धम् । पक्षे—'तादृग्' इति रूपं सिध्यति ।

तादृशः—तद्शब्दोपपदात् दृश्धातोः 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये; तस्य सर्वापहारिलोपे 'आ सर्वनाम्नः' इत्यनेन दकारस्य

आकारे, त+आ+दृश् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे तादृश् इति जाते, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे तादृश्+अस् इति जाते, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'तादृशः' इति सिद्धम् ।

**तादृग्भ्याम्**—तद्शब्दोपपदात् दृश्धातोः 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे, 'आ सर्वनाम्नः' इत्यनेन दकारस्य आकारे त+आ+दृश् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे तादृश् इति जाते, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये तादृश्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वस्याऽसिद्धत्वात् 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन शकारस्य षत्वे पदत्वात् 'झलां जश्झशि' इत्यनेन जश्त्वेन षस्य डत्वे 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन गकारे 'तादृग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**विट्, विड्**—विश्धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे विश्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना स्लोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन शकारस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन षकारस्य डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन टत्वे 'विट्' इति सिद्धम् । पक्षे—'विड्' इति रूपं सिध्यति ।

**विशौ**—विश्धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये विश्+औ इति जाते संयोगे 'विशौ' इति सिद्धम् ।

**विड्भ्याम्**—विश्धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये, विश्+भ्याम् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन शकारस्य षत्वे 'झलां जश्झशि' इत्यनेन जश्त्वेन षकारस्य डत्वे 'विड्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**नक्, नग्, नट्, नड्**—णश्धातो क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे 'णो नः' इत्यनेन णकारस्य नत्वे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सौ, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना शस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इति षस्य डत्वे 'नशेर्वा' इत्यनेन डस्य विकल्पेन कुत्वेन गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'नक् नग्' इति, कुत्वाभावपक्षे च—'नट्, नड्' इत्येतानि रूपाणि सिध्यन्ति ।

**नशौ**—णश्धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे 'णो नः' इत्यनेन णस्य नत्वे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये नश्+औ इति जाते संयोगे 'नशौ' इति सिद्धम् ।

**नशः**—णश् धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे, 'णो नः' इत्यनेन णस्य नत्वे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, अनुबन्ध-लोपे नश्+अस् इति जाते संयोगे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे, अनुबन्ध-लोपे, रेफस्य 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'नशः' इति सिद्धम् ।

**नग्भ्याम्, नड्भ्याम्**—णश्धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे 'णो नः' इत्यनेन णस्य नत्वे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये नश्+भ्याम् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः' इत्यनेन शकारस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे 'नशेर्वा' इत्यनेन विकल्पेन कुत्वेन डस्य गत्वे 'नग्भ्याम्, नड्भ्याम्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

## स्पृशोऽनुदके क्विन् ॥३।२।५८॥

अनुदके सुप्युपपदे स्पृशेर्धातोः क्विन् प्रत्ययो भवति ।

**घृतस्पृक्, घृतस्पृग्**—घृतं स्पृशतीति विग्रहे 'स्पृशोऽनुदके क्विन्' इत्यनेन क्विन् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे 'उपपदमतिङ्' इत्यनेन उपपदसमासे सुब्लुकि समासत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सौ कृते घृतस्पृश्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वस्याऽसिद्धत्वत् 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराज-भ्राजच्छशां षः' इत्यनेन शकारस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन षस्य गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्वे 'घृतस्पृक्, घृतस्पृग्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

**दधृक्, दधृग्**—धृष्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, निपात-नाद् द्वित्वे धृष+धृष+क्विन् इति जाते 'पूर्वोऽभ्यासः' इत्यनेन अभ्याससंज्ञायां 'हलादि शेषः' इत्यनेन हलादिशेषे 'उरत्' इत्यनेन ऋकारस्य अत्वे 'अभ्यासे चर्च' इत्यनेन धकारस्य दकारे क्विन सर्वापहारिलोपे दधृष् इति जाते, कृदन्त-त्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सौ दधृष्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सलोपे, जश्त्वं प्रति कुत्वस्या-सिद्धत्वात् प्रथमं 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन डकारे, तस्य 'क्विन्प्रत्ययस्य

कुः' इत्यनेन कुत्वेन गकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन ककारे 'दधृक्, दधृग्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

दधृग्भ्याम्—धृष्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, निपातनाद् द्वित्वे धृष्+धृष्+क्विन् इति जाते 'पूर्वोऽभ्यासः' इत्यनेन अभ्याससंज्ञायां 'हलादिः शेषः' इत्यनेन हलादिशेषे, 'उरत्' इत्यनेन ऋकारस्य अकारे, 'अभ्यासे चर्च' इत्यनेन धकारस्य दकारे, क्विनः सर्वापहारिलोपे दधृष् इति जाते कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये दधृष्+भ्याम् इति जाते जश्त्वं प्रति कुत्वस्याऽसिद्धत्वात् प्रथमं 'झलां जश् झशि' इत्यनेन जश्त्वेन षकारस्य डकारे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन गकारे 'दधृग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

रत्नमुट्, रत्नमुड्—रत्नमुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये रत्नमुष्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन डकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन डकारस्य टकारे 'रत्नमुट्, रत्नमुड्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

रत्नमुड्भ्याम्—रत्नमुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये रत्नमुष्+भ्याम् इति जाते 'झलां जश्झशि' इत्यनेन जश्त्वेन डकारे 'रत्नमुड्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

षट्, षड्—षट्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । तेन षष् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये षष्+जस् इति जाते 'ष्णान्ताः षट्' इत्यनेन षट्संज्ञायां 'षड्भ्यो लुक्' इत्यनेन जसो लुकि, 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षकारस्य डकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन चर्त्वे च 'षट्, षड्' इति रूपद्वयं सिध्यति । एवं शस्यपि बोध्यम् ।

षड्भिः—षष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये षष्+भिस् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'षड्भिः' इति सिद्धम् ।

षण्णाम्—षष् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये षष्+आम् इति जाते 'ष्णान्ताः षट्' इत्यनेन षट्संज्ञायां 'षट्चतुर्भ्यश्च' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे षष्+न्+आम् इति जाते पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षकारस्य डकारे षड्+न्+आम् इति जाते 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' इत्यनेन वैकल्पिकमनुनासिकम्प्रबाध्य 'प्रत्यये भाषायां नित्यम्' इति वार्तिकेन नित्यं नस्य णत्वे षड्+णाम् इति जाते 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन ष्टुत्वे 'षण्णाम्' इति सिद्धम् ।

न चाऽत्र 'न पदान्ताट्टोरनाम्' इत्यनेन ष्टुत्वनिषेधः कुतो नेति वाच्यम् ? 'अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्' इत्यत्र वार्तिके अनाम् ग्रहणेन तन्निषेधात्।

**षट्त्सु, षट्सु**—षष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां, सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये षष्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षकारस्य जश्त्वेन डकारे 'डः सि धुट्' इत्यनेन वैकल्पिके धुडागमे अनुबन्धलोपे षड्+ध्+सु इति जाते 'खरि च' इत्यनेन धकारस्य तकारे, पुनश्च 'खरि च' इत्यनेन डकारस्य टकारे 'षट्त्सु' धुडभावपक्षे च 'षट्सु' इति सिध्यति।

**पिपठीः**—पिपठिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये पिपठिष्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे, रुत्वे कर्तव्ये 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्यनेन षत्वस्यासिद्धत्वात् 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे पिपठिर् इति जाते "र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन उपधाया इकारस्य दीर्घे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गत्वे 'पिपठीः' इति सिद्धम्।

**पिपठीर्भ्याम्**—पिपठिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये, पिपठिष्+भ्याम् इति जाते, रुत्वे कर्तव्ये 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्यनेन षत्वस्यासिद्धत्वात् 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे पिपठिर्+भ्याम् इति जाते 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन उपधाया इकारस्य दीर्घे 'पिपठीर्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**पिपठीष्षु, पिपठीःषु**—पिपठिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे पिपठिष्+सु इति जाते रुत्वम्प्रति षत्वस्यासिद्धत्वाद 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन उपधाया इकारस्य दीर्घे पिपठीर्+सु इति जाते 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'वा शरि' इत्यनेन सकारस्य षत्वे 'पिपठीःषु' इति सिद्धम्।

विसर्गस्य विसर्गाभावपक्षे—'विसर्जनीयस्य सः' इत्यनेन विसर्गस्य सकारे 'नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि' इत्यनेन विभक्तिसकारस्य षत्वे 'ष्टुना ष्टुः' इत्यनेन पूर्वसकारस्य ष्टुत्वे 'पिपठीष्षु' इति सिद्धम्।

**चिकीः**—चिकीर्ष् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये चिकीर्ष्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्'

इत्यनेन सुलोपे, षकारस्यासिद्धत्वात् सकारबुद्धया 'रात्सस्य' इत्यनेन सलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'चिकीः' इति सिद्धम् ।

**चिकीर्षु**—चिकीर्ष् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये चिकीर्ष् + सुप् इति जाते, अनुबन्धलोपे 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पद-संज्ञायां पदत्वेन षत्वस्यासिद्धत्वात् सकारस्य 'रात्सस्य' इत्यनेन लोपे चिकीर् + सु इति जाते 'रोः सुपि' इति सूत्रनियमात् रेफस्य विसर्गाभावे 'आदेश-प्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षकारे 'अचो रहाभ्यां द्वे' इत्यनेन षकारस्य द्वित्वे प्राप्ते 'शरोऽचि' इत्यनेन द्वित्वनिषेधे 'चिकीर्षु' इति सिद्धम् ।

**विद्वान्**—विद्वस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये विद्वस् + सु इति जाते, अनुबन्धलोपे, 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सुलोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे 'सान्त-महतः संयोगस्य' इत्यनेन उपधादीर्घे विद्वान् + स् इति जाते 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन सकारस्य लोपे 'विद्वान्' इति सिद्धम् ।

**विद्वांसौ**—विद्वस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने 'औ' प्रत्यये विद्वस् + औ इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन दीर्घे विद्वान्स् + औ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नकारस्यानुस्वारे, संयोगे 'विद्वांसौ इति सिद्धम् ।

**हे विद्वन्**—विद्वस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्ध-लोपे विद्वन्स् इति जाते, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे, सम्बुद्धित्वाद् 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन दीर्घाभावे, 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन सकारलोपे 'हे विद्वन्' इति सिद्धम् ।

**विदुषः**—विद्वस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे विद्वस् + अस् इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'वसोः सम्प्रसारणम्' इत्यनेन वस्य स्थाने उकाररूपे सम्प्रसारणे विद् + उस् + अस् इति जाते 'सम्प्रसारणाच्च' इत्यनेन पूर्वरूपे विदुस् + अस् इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन प्रत्ययावयवात् सस्य षत्वे संयोगे च कृते विदुषस् इति जाते अन्त्य सकारस्य 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे, रेफस्य 'खरवसानयो-र्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'विदुषः' इति सिद्धम् ।

**विद्वद्भ्याम्**—विद्वस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये विद्वस्+भ्याम् इति जाते 'वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः' इत्यनेन सकारस्य दकारे 'विद्वद्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**पुमान्**—पुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये पुंस्+सु इति जाते 'पुंसोऽसुङ्' इत्यनेन अन्त्य सकारस्य स्थाने असुङादेशे 'हलन्त्यम्' इत्यनेन ङकारस्य, 'उपदेशेऽननुनासिक इत्' इत्यनेन च उकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन उभयोर्लोपे पुमस्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे, 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे प्रत्ययलक्षणे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन उपधादीर्घे, 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन संयोगान्तसकारलोपे 'पुमान्' इति सिद्धम्।

**हे पुमन्**—पुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये पुंस्+सु इति जाते 'पुंसोऽसुङ्' इत्यनेन अन्त्यसकारस्य स्थाने असुङादेशे 'हलन्त्यम्' इत्यनेन ङकारस्य, 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इत्यनेन च उकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेनोभयोर्ङकारोकारयोर्लोपे पुमस्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे, 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे, प्रत्ययलक्षणे 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे, 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां सम्बुद्धित्वात् 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन उपधादीर्घाभावे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन सलोपे 'हे पुमन्' इति सिद्धम्।

**पुमांसौ**—पुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, पुंस्+औ इति जाते 'पुंसोऽसुङ्' इत्यनेन अन्त्यसकारस्य स्थाने असुङादेशे, अनुबन्धलोपे, पुमस्+औ इति जाते 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' इत्यनेन नुमागमेऽनुबन्धलोपे पुमन्स्+औ इति जाते 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन उपधादीर्घे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'पुमांसौ' इति सिद्धम्।

**पुंसः**—पुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां, द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे, पुंस्+अस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'पुंसः' इति सिद्धम्।

**पुंसु**—पुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे पुंस्+सु इति जाते 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां, 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन सकारलोपे 'पुंसु' इति सिद्धम्।

**उशना**—उशनस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उशनस्+सु इति जाते 'ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनेन अन्त्यसकारस्य स्थाने अनङादेशे, उशन+अनङ्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे, उशनन्+सु इति जाते 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे, अनुबन्धलोपे, 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे, 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'उशना' इति सिद्धम् ।

**हे उशन ! हे उशनन् ! हे उशनः !**—उशनस् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सुप्रत्यये, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे हे उशनस्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे 'अस्य सम्बुद्धौ वाऽनङ् नलोपश्च वा वाच्यः' इति वार्तिकेन विकल्पेन अनङादेशे, नलोपे च अनुबन्धलोपे 'हे उशन' इति रूपम् । वाग्रहणान्नलोपाभावे—'हे उशनन् !' इति रूपम्; अनङादेशाभावपक्षे हे उशनस् इत्यवस्थायां सस्य रुत्वे, रेफस्य विसर्गत्वे च 'हे उशनः' इति रूपत्रयं सिध्यति ।

**उशनोभ्याम्**—उशनस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये उशनस्+भ्याम् इति जाते 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे 'हशि च' इत्यनेन उत्वे 'आद् गुणः' इत्यनेन गुणे च कृते 'उशनोभ्याम्' इति सिद्धम् ।

**अनेहा**—अनेहस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनेहस्+सु इति जाते 'ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसां च' इत्यनेन अन्त्यस्य सकारस्य अनङादेशे, अनुबन्धलोपे, 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन उपधाया दीर्घत्वे 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'अनेहा' इति सिद्धम् ।

**हे अनेहः**—अनेहस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये, 'हे' इत्यस्य पूर्वप्रयोगे हे अनेहस्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे, 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गत्वे च—'हे अनेहः' इति सिद्धम् ।

**वेधाः**—वेधस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये वेधस्+सु इति जाते 'अत्वसन्तस्य चाधातोः' इत्यनेन असन्तत्वाद्दीर्घे वेधास्+सु इति जाते, अनुबन्धलोपे, 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन

सस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'वेधाः' इति सिद्धम् ।

**हे वेधः**—वेधस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'हे' इत्येतस्य पूर्वप्रयोगे हे वेधस्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सोर्लोपे, 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'हे वेधः' इति सिद्धम् ।

**वेधोभ्याम्**—वेधस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये वेधस्+भ्याम् इति जाते 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे 'हशि च' इत्युत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'वेधोभ्याम्' इति सिद्धम् ।

**असौ**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये, अदस्+सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे, 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे च 'अदस औ सुलोपश्च' इत्यनेन औकारान्तादेशे सुलोपे च विहिते अद+औ इति जाते 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन दस्य सत्वे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'असौ' इति सिद्धम् ।

**असकौ, असुकः**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक्टेः' इत्यनेन अकच् प्रत्यये 'अदकस्' इति निष्पन्ने, तस्मात् प्रथमैकवचने सुप्रत्यये 'अदस औ सुलोपश्च' इत्यनेन तन्मध्यपतितन्यायेन अदकस् शब्दस्य सकारस्य औत्वे सुलोपे च प्राप्ते 'औत्वप्रतिषेधः साकच्कस्य वा वक्तव्यः' इत्यनेन विकल्पेन औत्वप्रतिषेधः प्रतिषेधाभावपक्षे औत्वे सुलोपे च अदक+औ इति जाते 'तदोः सः सावनन्त्योः' इत्यनेन दस्य सत्वे 'असकौ' इति सिद्धम् । प्रतिषेधपक्षे—अदकस्+सु इति स्थिते 'अदस औ सुलोपश्च' इत्यनेन तन्मध्यपतितन्यायेन अदस् शब्दवत् अदकस् शब्दस्यौत्वे प्राप्ते 'औत्वप्रतिषेधः साकच्कस्य वा वक्तव्यः' इति वार्तिकेन औत्वप्रतिषेधे 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन दस्य सत्वे 'सादुत्वं च' इति वार्तिकेन सकारात् परस्य अकारस्य उत्वे 'त्यदादीनामः' इत्यत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे च 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, रेफस्य 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'असुकः' इति रूपं सिद्धम् ।

**अमू**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये अदस्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारेऽन्तादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पर-

रूपैकादेशे अद+औ इति जाते मुत्वस्यासिद्धत्वात् पूर्वम् वृद्धौ ततः 'अदसोऽसेर्दादुदोमः' इत्यनेन औकारस्य उकारे, दकारस्य मकारे च कृते संयोगे 'अमू' इति सिद्धम् ।

अमी—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अदस्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'जसः शी' इति सूत्रेण जसः श्यादेशे, अनुबन्धलोपे, 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'एत ईद्बहुवचने' इत्यनेन एकारस्य ईकारे दस्य मकारे च कृते संयोगे 'अमी' इति सिद्धम् ।

अमुम्—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये अदस्+अम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे अद+अम् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारे, अकारस्य उत्वे च 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे च 'अमुम्' इति सिद्धम् ।

अमून्—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अदस्+शस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन सकारस्य अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे अद+शस् इति जाते 'तस्माच्छसो नः पुंसि' इत्यनेन शसो नकारादेशे 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारे अकारस्य उत्वे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन दीर्घे 'अमून्' इति सिद्धम् ।

अमुना—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन उत्वे, दकारस्य मकारे च कृते अमु+आ इति जाते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्यनेन मुत्वस्यासिद्धत्वे प्राप्ते 'नमुने' इत्यनेन तन्निषेधे 'शेषो घ्यसखि' इत्यनेन घिसंज्ञायां 'आङो नाऽस्त्रियाम्' इत्यनेन 'ना'भावे 'अमुना' इति सिद्धम् ।

अमूभ्याम्—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अदस्+भ्याम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे अद+भ्याम् इति जाते 'सुपि च' इत्यनेन दीर्घे अदाभ्याम् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारे आकारस्य ऊत्वे च कृते 'अमूभ्याम्' इति सिद्धम् ।

अमीभिः—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये अदस्+भिस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पर-

रूपैकादेशे अद+भिस् इति जाते 'अतो भिस ऐस्' इत्यनेन भिस ऐसादेशे प्राप्ते 'नेदमदसोरकोः' इत्यनेन सूत्रेण निषेधे 'बहुवचने झल्येत्' इत्यनेन एत्वे 'एत ईद् बहुवचने' इत्यनेन एकारस्य ईकारे, दकारस्य मकारे च कृते सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे रेफस्य विसर्गे च संयोगे 'अमीभिः' इति सिद्धम् ।

**अमुष्मै**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अदस्+ङे इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे, सर्वादित्वेन सर्वनामत्वात् 'सर्वनाम्नः स्मै' इत्यनेन स्मै आदेशे 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन उत्वे, दस्य मत्वे च 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सस्य षत्वे 'अमुष्मै' इति सिद्धम् ।

**अमुष्मात्**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अदस्+ङसि इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे, सर्वादित्वेन सर्वनामत्वात् 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङसेः स्मादादेशे अद+स्मात् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दस्य मत्वे, अकारस्य उत्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षत्वे 'अमुष्मात्' इति सिद्धम् ।

**अमीभ्यः**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने, पञ्चमीबहुवचने च भ्यस् प्रत्यये अदस्+भ्यस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे अद+भ्यस् इति जाते 'बहुवचने झल्येत्' इत्यनेन एत्वे अदे+भ्यस् इति जाते 'एत ईद् बहुवचने' इत्यनेन एकारस्य ईत्वे दकारस्य मकारे, सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे रेफस्य विसर्गे च 'अमीभ्यः' इति सिद्धम् ।

**अमुष्य**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठ्येकवचने ङस् प्रत्यये अदस्+ङस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन ङसः स्यादेशे 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारे, अकारस्य उत्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षत्वे 'अमुष्य' इति सिद्धम् ।

**अमुयोः**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये अदस्+ओस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे अद+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्येत्वे अदे+ओस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे अदयोस् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मत्वे, अकारस्य उत्वे, सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, रेफस्य विसर्गे च 'अमुयोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

**अमीषाम्**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये अदस्+आम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे, अद+आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे अद+स्+आम् इति जाते 'बहुवचने झल्येत्' इत्यनेन एत्वे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षत्वे 'एत ईद् बहुवचने' इत्यनेन एकारस्य ईकारे दकारस्य मत्वे च कृते संयोगे 'अमीषाम्' इति सिद्धम् ।

**अमुष्मिन्**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङिप्रत्यये अदस्+ङि इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपैकादेशे अद+ङि इति जाते 'ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ' इत्यनेन ङेः स्मिनादेशे अद+स्मिन् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दस्य मत्वे, अकारस्य उत्वे च कृते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सस्य षत्वे 'अमुष्मिन्' इति सिद्धम् ।

**अमीषु**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे अदस्+सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यत्वे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे अद+सु इति जाते 'बहुवचने झल्येत्' इत्येत्वे अदे+सु इति जाते 'एत ईद् बहुवचने' इत्यनेन एकारस्य ईकारे दकारस्य मकारे च 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षत्वे च 'अमीषु' इति सिद्धम् ।

॥ इति हलन्तपुंल्लिङ्गप्रकरणम् ॥

---

## अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

**उपानत्, उपानद्**—उपानह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उपानह्+सु इति जाते सोरुकारस्येत्संज्ञायां लोपे च उपानह्+स् इति जाते 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्' इत्यादिना स्लोपे 'नहो धः' इत्यनेन हकारस्य धत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन धकारस्य दत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'उपानत्' इति, चर्त्वाभावपक्षे च—'उपानद्' इति सिध्यति ।

**उपानद्भ्याम्**—उपानह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये उपानह्+भ्याम् इति जाते 'नहो धः' इत्यनेन हकारस्य धत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन धकारस्य दत्वे 'उपानद्भ्याम्' इति सिद्ध्यति ।

**उपानत्सु**—उपानह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये

उपानह् + सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'नहो धः' इत्यनेन हकारस्य धत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन धकारस्य दत्वे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे 'उपानत्सु' इति सिध्यति ।

**उष्णिक्, उष्णिग्**—उत्पूर्वात् ष्णिह्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये तस्य सर्वापहारिलोपे निपातनाद् दलोपे षत्वे च 'उष्णिह्' शब्दे निष्पन्ने, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सकारलोपे 'उष्णिह्' इति जाते 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन हकारस्य घत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन चर्त्वेन वा कत्वे 'उष्णिक्, उष्णिग्' इति रूपद्वयं सिद्ध्यति ।

**उष्णिग्भ्याम्**—उत्पूर्वात् ष्णिह्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये तस्य सर्वापहारिलोपे निपातनाद् दलोपे षत्वे च 'उष्णिह्' शब्दे निष्पन्ने कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये उष्णिह् + भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन हकारस्य घत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन गत्वे 'उष्णिग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**द्यौः**—दिव्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये दिव् + सु इति जाते 'दिव औत्' इत्यनेन वकारस्य औकारे 'इको यणचि' इत्यनेन यणि, उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'द्यौः' इति सिद्धम् ।

**गीः**—गॄ निगरणे इत्यस्माद्धातोः क्विप् प्रत्यये, तस्य सर्वापहारिलोपे 'ॠत इद्धातोः' 'उरण्रपरः' इत्यनेन रपरे 'गिर्' इति निष्पन्ने प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन सुलोपे 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन दीर्घे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'गीः' इति सिद्धम् ।

**चतस्रः**—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये चतुर् + जस् इति जाते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन चतसृादेशे विहिते जसो जकारस्य 'चुटू' इत्यनेन इत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे चतसृ + अस् इति जाते 'अचि र ऋतः' इत्यनेन ऋकारस्य रेफत्वे, 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'चतस्रः' इति सिद्धम् । एवं द्वितीयाबहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

**चतसृभिः**—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये चतुर्+भिस् इति जाते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन 'चतसृ' आदेशे चतसृ+भिस् इति जाते, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'चतसृभिः' इति सिद्धम् ।

**चतसृभ्यः**—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये चतुर्+भ्यस् इति जाते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन 'चतसृ' आदेशे चतसृ+भ्यस् इति जाते, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'चतसृभ्यः' इति सिद्धम् । एवं पञ्चमीबहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

**चतसृणाम्**—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये चतुर्+आम् इति जाते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन 'चतसृ' इत्यादेशे चतसृ+आम् इति जाते 'अचि र ऋतः' इत्यनेन ऋकारस्य रेफादेशे प्राप्ते 'नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन' इत्यनेन पूर्वविप्रतिषेधेन तं बाधित्वा 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' इत्यनेन नुडागमे अनुबन्धलोपे चतसृ+नाम् इति जाते 'नामि' इत्यनेन दीर्घे प्राप्ते 'न तिसृचतसृ' इत्यनेन निषिद्धे 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'चतसृणाम्' इति सिद्धम् ।

**चतसृषु**—चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये चतुर्+सुप् इति जाते 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' इत्यनेन 'चतसृ' आदेशे चतसृ+सुप् इति जाते, अनुबन्धलोपे 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य मूर्द्धन्यादेशे 'चतसृषु' इति सिद्धम् ।

**'चतुर्' शब्दस्य त्रिषु लिङ्गेषु रूपाणि ( चतुर् शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः )**

| पुंल्लिङ्गे | स्त्रीलिङ्गे | नपुंसकलिङ्गे |
|---|---|---|
| चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि |
| चतुरः | चतस्रः | चत्वारि |
| चतुर्भिः | चतसृभिः | चतुर्भिः |
| चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः |
| चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः |
| चतुर्णाम् | चतसृणाम् | चतुर्णाम् |
| चतुर्षु | चतसृषु | चतुर्षु |
| हे चत्वारः ! | हे चतस्रः ! | हे चत्वारि ! |

**यः सौ ॥७।२।११०॥**

इदम् शब्दस्य दकारस्य यकारादेशो भवति सौ परतः ।

**इयम्**—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये इदम्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'यः सौ' इत्यनेन दकारस्य यकारादेशे इयम्+स् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे प्राप्ते तं बाधित्वा 'इदमो मः' इत्यनेन मकारस्य मकारादेशे 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' इत्यनेन स्लोपे 'इयम्' इति सिद्धम् ।

**इमे**—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये इदम्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+औ इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे इमा+औ इति जाते 'औङ आपः' इत्यनेन 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणैकादेशे 'इमे' इति सिद्धम् । एवं द्वितीयाद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

**इमाः**—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये इदम्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+अस् इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे इमा+अस् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'इमाः' इति सिद्धम् । एवं द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्ययेऽपि बोध्यम् ।

**इमाम्**—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये इदम्+अम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+अम् इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे इमा+अम् इति जाते 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'इमाम्' इति सिद्धम् ।

**अनया**—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये अनुबन्धलोपे इदम्+आ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+आ इति जाते 'आङि चापः' इत्यनेन आप एकारे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन सूत्रेण अयादेशे 'अनाप्यकः' इत्यनेन इद्स्थाने अनादेशे च कृते 'अनया' इति सिद्धम् ।

**आभ्याम्**—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम्

प्रत्यये इदम्+भ्याम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे इदा+भ्याम् इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्-भागस्य लोपे 'आभ्याम्' इति सिद्धम् । एवम् चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

आभिः—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये इदम्+भिस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+भिस् इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'आभिः' इति सिद्धम् ।

अस्यै—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये इदम्+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+ए इति जाते सर्वनामत्वात् 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्याडागमे अनुबन्धलोपे ह्रस्वत्वे च इद+स्या+ए इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'अस्यै' इति सिद्धम् ।

आभ्यः—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये इदम्+भ्यस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+भ्यस् इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'आभ्यः' इति सिद्धम् । एवं पञ्चमी-बहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

अस्याः—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चमीविभक्तेरेक-वचने ङसि प्रत्यये इदम्+ङसि इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+अस् इति जाते "सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च" इत्यनेन स्याडागमे आपो ह्रस्वत्वे च अनुबन्धलोपे इद+स्या+अस् इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे अस्या+अस् इति जाते, सवर्णदीर्घे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अस्याः' इति सिद्धम् । एवं षष्ठ्येकवचनेऽपि बोध्यम् ।

अनयोः—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस्

प्रत्यये इदम्+ओस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+ओस् इति जाते 'अनाप्यकः' इत्यनेन इद्भागस्य अनादेशे अना+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्येत्वे अने+ओस्, इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'अनयोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

आसाम्—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्ययें इदम्+आम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे 'आसाम्' इति सिद्धम् ।

अस्याम्—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये इदम्+ङि इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इदा+ङि इति जाते 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन स्यांडागमे आपो ह्रस्वत्वे च अनुबन्धलोपे 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्-भागस्य लोपे अस्या+ङि इति जाते 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन ङेरामादेशे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'अस्याम्' इति सिद्धम् ।

आसु—इदम्शब्दात् स्त्रीलिङ्गे प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे इदम्+सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे इद+सु इति जाते 'हलि लोपः' इत्यनेन इद्भागस्य लोपे 'आसु' इति सिद्धम् ।

स्रक्, स्रग्—सृज्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, निपातनात् अमागमे च अनुबन्धलोपे 'उरण्रपरः' इत्यनेन रपरे स्रज् इति स्थिते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन जस्य गत्वे स्रग् इति स्थिते प्रातिपदिक-संज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये अनुबन्धलोपे अपृक्तएकाल्प्रत्ययः इत्यनेन अपृक्त-संज्ञायां 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्' इत्यादिना सकारलोपे 'वाऽवसाने' इत्यनेन वा चर्त्वे 'स्रक्,स्रग्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

**स्या**—त्यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये त्यद्+सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे त्या+स् इति जाते 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन तकारस्य सकारे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सलोपे च 'स्या' इति सिद्धम् ।

**त्ये**—त्यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये त्यद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे त्या+औ इति जाते 'औङ आपः' इत्यनेन औ प्रत्ययस्य 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे त्या+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'त्ये' इति सिद्धम् ।

**त्याः**—त्यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस्प्रत्यये त्यद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे त्या+अस् इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे प्राप्ते 'नादिचि' इति निषिद्धे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'त्याः' इति सिद्धम् ।

**वाक्, वाग्**—वाच्शब्दात् स्त्रीलिङ्गात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने 'सु' प्रत्यये वाच्+सु इति जाते, सकारोत्तरवर्त्तिन उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना 'स्' इत्यस्य लोपे 'चोः कुः' इत्यनेन चकारस्य कत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन कत्वे 'वाक्, वाग्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

**वाग्भ्याम्**—वाच्शब्दात् स्त्रीलिङ्गात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये वाच्+भ्याम् इति जाते 'चोः कुः' इत्यनेन चकारस्य कत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन जश्त्वेन कस्य गत्वे 'वाग्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

**आपः**—नियतस्त्रीलिङ्गात् बहुवचनान्तात् अप्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अप्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'सुडनपुंसकस्य' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम्' इत्यनेन दीर्घे आप्+अस् इति जाते संयोगे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन

सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'आपः' इति सिद्धम् ।

**अपः**—नियतस्त्रीलिङ्गात् बहुवचनान्तात् अप्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयाबहुवचने शस् प्रत्यये अप्+शस् इति जाते अनुबन्धलोपे, सर्वनामस्थानत्वाभावाद् दीर्घाभावे, 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अपः' इति सिद्धम् ।

**अद्भिः**—अप्शब्दात् नियतस्त्रीलिङ्गात् बहुवचनान्तात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये अप्+भिस् इति जाते 'अपो भि' इत्यनेन अप् शब्दस्य तकारान्तादेशे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तकारस्य दकारे अद्+भिस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'आद्भिः' इति सिद्धम् ।

**अद्भ्यः**—अप्शब्दात् नियतस्त्रीलिङ्गात् बहुवचनान्तात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये अप्+भ्यस् इति जाते 'अपो भि' इत्यनेन अप् शब्दस्य तकारान्तादेशे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तकारस्य दकारे अद्+भ्यस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अद्भ्यः' इति सिद्धम् । एवं पञ्चमीबहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

**अपाम्**—नियतस्त्रीलिङ्गात् बहुवचनान्तात् अप्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीबहुवचने आम् प्रत्यये संयोगे 'अपाम्' इति सिद्धम् ।

**अप्सु**—नियतस्त्रीलिङ्गात् बहुवचनान्तात् अप्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अप्सु' इति सिद्धम् ।

**दिक्, दिग्**—नियतस्त्रीलिङ्गात् दिश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये दिश्+सु इति जाते उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना 'स्' इत्यस्य लोपे दिश् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन डस्य कुत्वेन गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन कत्वे 'दिक्' इति, पक्षे—'दिग्' इति च रूपद्वयं सिध्यति ।

**दिग्भ्याम्**—नियतस्त्रीलिङ्गात् दिश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये दिश्+भ्याम् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन डस्य कुत्वेन गत्वे 'दिग्भ्याम्' इति सिद्धम् । एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

**दिग्भिः**—नियतस्त्रीलिङ्गात् दिश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीया-बहुवचने भिस् प्रत्यये दिश्+भिस् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना शस्य षत्वं 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन डस्य कुत्वेन गत्वे दिग्भिस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्ध-लोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'दिग्भिः' इति सिद्धम् ।

**दिग्भ्यः**—नियतस्त्रीलिङ्गात् दिश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहु-वचने भ्यस्प्रत्यये दिश्+भ्यस् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना शस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन डस्य कुत्वेन गत्वे दिग्भ्यस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'दिग्भ्यः' इति सिद्धम् । एवं पञ्चमी-बहुवचनेऽपि बोध्यम् ।

**दिक्षु**—नियतस्त्रीलिङ्गात् दिश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये दिश्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'व्रश्चभ्रस्ज' इत्यादिना शस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन डस्य कुत्वेन गत्वे दिग्+सु इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन सकारस्य षत्वे 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वेन गस्य कत्वे, संयोगे 'दिक्षु' इति सिद्धम् ।

**दृक्, दृग्**—स्त्रीलिङ्गात् दृश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये दृश्+सु इति जाते उकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सलोपे 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृज' इत्यादिना शस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन गकारे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन गस्य कत्वे 'दृक्, दृग्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

**दृग्भ्याम्**—स्त्रीलिङ्गात् दृश्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये दृश्+भ्याम् इति जाते 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृज' इत्यादिना शस्य षत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन डत्वे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वेन गकारे दृग्भ्याम्' इति सिद्धम् । एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

**त्विट्**—स्त्रीलिङ्गात् त्विष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सलोपे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन डत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन डकारस्य टकारे 'त्विट्, त्विड्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

**त्विड्भ्याम्**—स्त्रीलिङ्गात् त्विष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने

भ्याम् प्रत्यये त्विष्+भ्याम् इति जाते 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे 'त्विड्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**त्विट्त्सु, त्विट्सु**—स्त्रीलिङ्गात् त्विष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमी-बहुवचने सुप् प्रत्यये त्विष्+सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन षस्य डत्वे त्विड्+सु इति जाते 'डः सि धुट्' इत्यनेन धुडागमे अनुबन्ध-लोपे 'खरि च' इत्यनेन धकारस्य तकारे, पुनश्च 'खरि च' इत्यनेन डकारस्य टकारे 'त्विट्त्सु' इति सिद्धम्। धुडभावे—'त्विट्सु' इति सिध्यति।

**सजूः**—स्त्रीलिङ्गात् सजुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये सजुष्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सकारस्य लोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन षस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन जकारोत्तरवर्त्युकारस्य दीर्घत्वे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'सजूः' इति सिद्धम्।

**सजुषौ**—स्त्रीलिङ्गात् सजुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सजुष्+औ इति जाते, संयोगे 'सजुषौ' इति सिद्धम्।

**सजूर्भ्याम्**—स्त्रीलिङ्गात् सजुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये सजुष्+भ्याम् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन षस्य रुत्वे अनु-बन्धलोपे 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन जकारोत्तरवर्त्युकारस्य दीर्घत्वे 'सजू-र्भ्याम्' इति सिद्धम्।

**आशीः**—स्त्रीलिङ्गात् आशिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये आशिष्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'हल्ङ्याब्भ्य' इत्यादिना सलोपे षत्वस्यासिद्धत्वात् 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन दीर्घे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गे 'आशीः' इति सिद्धम्।

**आशिषौ**—स्त्रीलिङ्गात् आशिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये आशिष्+औ इति जाते संयोगे 'आशिषौ' इति सिद्धम्।

**आशिषः**—स्त्रीलिङ्गात् आशिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये आशिष्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'आशिषः' इति सिद्धम्।

**आशीर्भ्याम्**—स्त्रीलिङ्गात् आशिष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीया-द्विवचने भ्याम्प्रत्यये आषिस्+भ्याम् इति जाते षत्वस्यासिद्धत्वात् 'ससजुषो

रुः' इत्यनेन रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' इत्यनेन दीर्घे 'आशीर्भ्याम्' इति सिद्धम् ।

असौ—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अदस्+सु इति जाते अनुबन्धलोपे 'अदस औ सुलोपश्च' इत्यनेन अदसः सकारस्य औकारे सुलोपे च अद+औ इति जाते 'तदोः सः सावनन्त्ययोः' इत्यनेन दकारस्य सकारे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'असौ' इति सिद्धम् ।

अमू—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये अदस्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+औ इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारादेशे अकारस्य उकारे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घे 'अमू' इति सिद्धम् ।

अमूः—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस्प्रत्यये अदस्+जस् इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+अस् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारे आकारस्य उत्वे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घैकादेशे अमूस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्जनीये 'अमूः' इति सिद्धम् । एवं द्वितीयाबहुवचनेऽपि बोध्यम् । तत्र शसो नत्वं न भवति स्त्रीलिङ्गत्वात् ।

अमुम्—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां द्वितीयैकवचने अम् प्रत्यये अदस्+अम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टापि अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+अम् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदोमः' इत्यनेन दकारस्य मकारे आकारस्य उत्वे च अमु+अम् इति जाते 'अमिपूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपत्वे 'अमुम्' इति सिद्धम् ।

अमुया—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये अदस्+टा इति जाते अनुबन्धलोपे अदस्+आ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप्

प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+आ इति जाते 'आङि चापः' इत्येत्वे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे अदया इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन दकारस्य मकारे अकारस्य उत्वे च 'अमुया इति सिद्धम् ।

अमूभ्याम्—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अदस्+भ्याम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+भ्याम् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन आकारस्य ऊकारे दस्य मत्वे च 'अमूभ्याम्' इति सिद्धम् । एवं चतुर्थीपञ्चम्योर्द्विवचनेऽपि बोध्यम् ।

अमूभिः—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाबहुवचने भिस् प्रत्यये अदस्+भिस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+भिस् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन आकारस्य ऊकारे दस्य मत्वे च 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अमूभिः' इति सिद्धम् ।

अमुष्यै—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थ्येकवचने ङे प्रत्यये अदस्+ङे इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टापि अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+ए इति जाते 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन ह्रस्वत्वे स्याडागमे च, अनुबन्धलोपे अद+स्या+ए इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन अकारस्य उत्वे दस्य मत्वे च अमु+स्या+ए इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन षत्वे 'वृद्धिरेचि' इत्यनेन वृद्ध्येकादेशे 'अमुष्यै' इति सिद्धम् ।

अमूभ्यः—अदस्शब्दात् स्त्रीलिङ्गात् प्रातिपदिकसंज्ञायां चतुर्थीबहुवचने भ्यस् प्रत्यये अदस्+भ्यस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+भ्यस् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन आकारस्य ऊकारे दस्य मत्वे च अमूभ्यस् इति जाते 'ससजुषो रुः'

इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुवन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे च 'अमूभ्यः' इति सिद्धम् । एवं पञ्चमीवहुवचनेऽपि वोध्यम् ।

अमुष्याः—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां पञ्चम्येकवचने ङसि प्रत्यये अदस्+ङसि इति जाते अनुवन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुवन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+अस् इति जाते 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन ह्रस्वत्वे, स्याडागमे अनुवन्धलोपे अद+स्या+अस् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन अकारस्य उत्वे दकारस्य मत्वे च अमु+स्या+अस् इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन षत्वे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुवन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अमुष्याः' इति सिद्धम् । एवम् षष्ठ्येकवचनेऽपि वोध्यम् ।

अमुयोः—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये अदस्+ओस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुवन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्येत्वे अदे+ओस् इति जाते 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे अदयोस् इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन अकारस्य उत्वे दस्य मत्वे च अमुयोस् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अमुयोः' इति सिद्धम् । एवं सप्तमीद्विवचनेऽपि वोध्यम् ।

अमूषाम्—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीवहुवचने आम् प्रत्यये अदस्+आम् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा+आम् इति जाते 'आमि सर्वनाम्नः सुट्' इत्यनेन सुडागमे अनुबन्धलोपे अदा+स्+आम् इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन षत्वे 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन आकारस्य ऊकारे दस्य मत्वे च 'अमूषाम्' इति सिद्धम् ।

अमूष्याम्—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तम्येकवचने ङि प्रत्यये अदस्+ङि इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अकः

सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे अदा + ङि इति जाते 'ङेराम्नद्याम्नीभ्यः' इत्यनेन आमादेशे अदा + आम् इति जाते 'सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च' इत्यनेन ह्रस्वत्वे, स्याडागमे च, अनुबन्धलोपे अद + स्या + आम् इति जाते 'आदेश-प्रत्यययोः' इत्यनेन षत्वे 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन अकारस्य उत्वे दस्य मत्वे च अमुष्या + आम् इति जाते 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन सवर्णदीर्घे 'अमुष्याम्' इति सिद्धम् ।

अमूषु—स्त्रीलिङ्गात् अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अदस् + सुप् इति जाते अनुबन्धलोपे 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'अजाद्यतष्टाप्' इत्यनेन टाप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे अदा + सु इति जाते 'अदसोऽसेर्दादुदो मः' इत्यनेन आकारस्य ऊकारे, दस्य मत्वे च अमूसु इति जाते 'आदेशप्रत्यययोः' इत्यनेन षत्वे 'अमूषु' इति सिद्धम् ।

॥ इति हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ॥

---

## अथ हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्

स्वनडुत्, स्वनडुद्—सु-शोभनाः अनड्वाहः यस्य कुलस्येति विग्रहे स्वनडुह्-शब्दात् नपुंसकलिङ्गात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये स्वनडुह् + सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लोपे 'वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः' इत्यनेन हस्य दत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन दस्य तत्वे 'स्वनडुत्, स्वनडुद्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

स्वनडुही—नपुंसकलिङ्गात् स्वनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमा-द्विवचने औ प्रत्यये स्वनडुह् + औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औ स्थाने श्यादेशे स्वनडुह् + शी इति जाते 'लशक्वतद्धिते' इत्यनेन शकारस्येत्संज्ञायां 'तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे संयोगे 'स्वनडुही' इति सिद्धम् ।

स्वनड्वांहि—नपुंसकलिङ्गात् स्वनडुह्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमा-बहुवचने जस् प्रत्यये स्वनडुह् + जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः श्यादेशेऽनुबन्धलोपे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आमागमेऽनुबन्धलोपे 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे

स्वनड्वा + हि इति जाते 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नकारस्याऽनुस्वारे 'स्वनड्वांहि' इति सिद्धम् ।

वाः—नपुंसकलिङ्गात् वार्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये वार् + सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे पदान्तत्वात् 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'वाः' इति सिद्धम् ।

वारी—नपुंसकलिङ्गात् वार्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये वार् + औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे वार् + शी इति जाते, अनुबन्धलोपे, संयोगे 'वारी' इति सिद्धम् ।

वारा—नपुंसकलिङ्गात् वार् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये वार् + टा इति जाते, अनुबन्धलोपे, संयोगे 'वारा' इति सिद्धम् ।

चत्वारि—नपुंसकलिङ्गात् चतुर्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये चतुर् + जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे चतुर् + इ इति जाते, 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थान-संज्ञायां 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यनेन आमागमे, अनुबन्धलोपे चतु + आ + र् + इ इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन यणादेशे, संयोगे 'चत्वारि' इति सिद्धम् ।

किम्—नपुंसकलिङ्गात् किम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये किम् + सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे 'किम्' इति सिद्धम् ।

के—नपुंसकलिङ्गात् किम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये किम् + औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औ स्थाने श्यादेशे अनुबन्ध-लोपे किम् + ई इति जाते 'किमः कः' इत्यनेन किमः कादेशे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'के' इति सिद्धम् ।

कानि—नपुंसकलिङ्गात् किम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये किम् + जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे किम् + इ इति जाते 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे किम् + न् + इ इति जाते 'किमः कः' इत्यनेन किमः स्थाने कादेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'कानि' इति सिद्धम् ।

इदम्—नपुंसकलिङ्गात् इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये इदम् + सु इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे'

इत्यनेन पररूपत्वे इद+सु इति जाते 'अतोऽम्' इत्यनेन अमादेशे 'अमि पूर्वः' इत्यनेन पूर्वरूपे 'इदम्' इति सिद्धम् ।

**इमे**—नपुंसकलिङ्गात् इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये इदम्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे इद+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन श्यादेशे, अनुबन्धलोपे इद+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे इदे इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे 'इमे' इति सिद्धम् ।

**इमानि**—नपुंसकलिङ्गात् इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये इदम्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे इद+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन श्यादेशे, अनुबन्धलोपे इद+इ इति जाते 'दश्च' इत्यनेन दकारस्य मकारे 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे इम+न्+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'इमानि' इति सिद्धम् ।

**एनत्, एनद्**—नपुंसकलिंङ्गात् इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये इदम्+सु इति जाते 'अन्वादेशे नपुंसके एनद् वक्तव्यः' इत्यनेन वार्तिकेन इदम एनदादेशे 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'एनत्, एनद्' इति रूपद्वयं सिद्धम् ।

**विशेषः**—एने, एनानि इति रूपद्वयसाधुत्वं इमे इमानि इतिवद् बोध्यम् ।

**एनेन**—नपुंसकलिङ्गात् इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये इदम्+टा इति जाते 'अन्वादेशे नपुंसके एनद् वक्तव्यः' इति वार्तिकेन एनदादेशे त्यदाद्यत्वे पररूपत्वे च 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इत्यनेन इनादेशे एन+इन इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'एनेन' इति सिद्धम् ।

**एनयोः**—नपुंसकलिङ्गात् इदम्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां षष्ठीद्विवचने ओस् प्रत्यये इदम्+ओस् इति जाते 'अन्वादेशे नपुंसके एनद् वक्तव्यः' इत्यनेन इदम् एनदादेशे 'त्यदादीनामः' इत्यत्वे 'अतो गुणे' इति पररूपत्वे एन+ओस् इति जाते 'ओसि च' इत्येत्वे 'एचोऽयवायावः' इत्यनेन अयादेशे, रुत्वे विसर्गे च 'एनयोः' इति सिद्धम् ।

**व्योम**—नपुंसकलिङ्गात् व्योमन् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये व्योमन्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'व्योम' इति सिद्धम् ।

**व्योम्नी, व्योमनी**—नपुंसकलिङ्गात् व्योमन् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये व्योमन्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औ स्थाने श्यादेशे, अनुवन्धलोपे 'विभाषा ङिश्योः' इत्यनेन विकल्पेन उपधाया अकारस्य लोपे 'व्योम्नी' इति सिद्धम्। लोपाभावपक्षे च–'व्योमनी' इति सिध्यति

**व्योमानि**—नपुंसकलिङ्गात् व्योमन् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये व्योमन्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'व्योमानि' इति सिद्धम्।

**ब्रह्म**—नपुंसकलिङ्गात् ब्रह्मन् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये ब्रह्मन्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'ब्रह्म' इति सिद्धम्।

**हे ब्रह्म, हे ब्रह्मन्**—नपुंसकलिङ्गात् ब्रह्मन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सम्बोधनप्रथमैकवचने सु प्रत्यये, 'हे' इत्यस्यानुप्रयोगे हे ब्रह्मन्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे 'एकवचनं सम्बुद्धिः' इत्यनेन सम्बुद्धिसंज्ञायां 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नित्यं नलोपे प्राप्ते 'सम्बुद्धौ नपुंसकानां नलोपो वा वाच्यः' इत्यनेन वार्तिकेन विकल्पेन नलोपे 'हे ब्रह्म' इति सिद्धम्। नलोपाभावपक्षे—'हे ब्रह्मन्' इति सिध्यति।

**ब्रह्मणी**—नपुंसकलिङ्गात् ब्रह्मन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये ब्रह्मन्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे ब्रह्मन्+ई 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णत्वे 'ब्रह्मणी' इति सिद्धम्।

**ब्रह्माणि**—नपुंसकलिङ्गात् ब्रह्मन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये ब्रह्मन्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे ब्रह्मन्+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' इत्यनेन नकारस्य णकारे 'ब्रह्माणि' इति सिद्धम्।

**अहः**—अहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नपुंसकलिङ्गे प्रथमैकवचने सु प्रत्यये अहन्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'रोऽसुपि' इत्यनेन नस्य रेफादेशे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अहः' इति सिद्धम्।

**अह्नी, अहनी**—अहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नपुंसकलिङ्गे प्रथमाद्वि-

वचने औ प्रत्यये अहन्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे अहन्+ई इति जाते भसंज्ञायां, 'विभाषा ङिश्योः' इत्यनेन अनोऽकारस्य विकल्पेन लोपे 'अह्नी' इति सिद्धम्। लोपाभावपक्षे—'अहनी' इति सिध्यति।

अहानि—नपुंसकलिङ्गात् अहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये अहन्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन श्यादेशे, अनुबन्धलोपे, अहन्+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'अहानि' इति सिद्धम्।

अहोभ्याम्—नपुंसकलिङ्गात् अहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये अहन्+भ्याम् इति जाते 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इत्यनेन पदसंज्ञायां 'अहन्' इत्यनेन नस्य रुत्वे 'हशि च' इत्यनेन गुणे 'अहोभ्याम्' इति सिद्धम्।

अहःसु—नपुंसकलिङ्गात् अहन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सप्तमीबहुवचने सुप् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अहन्' इत्यनेन नकारस्य रुत्वे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अहःसु' इति सिद्धम्।

दण्डि—नपुंसकलिङ्गात् दण्डिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये दण्डिन्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'दण्डि' इति सिद्धम्।

दण्डिनी—नपुंसकलिङ्गात् दण्डिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये दण्डिन्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे, संयोगे 'दण्डिनी' इति सिद्धम्।

दण्डीनि—नपुंसकलिङ्गात् दण्डिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये दण्डिन्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे दण्डिन्+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'दण्डीनि' इति सिद्धम्।

सुपथि—नपुंसकलिङ्गात् सुपथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये सुपथिन्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे 'नलोपः प्रातिपादिकान्तस्य' इत्यनेन नलोपे 'सुपथि' इति सिद्धम्।

सुपथी—नपुंसकलिङ्गात् सुपथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये सुपथिन्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे

अनुबन्धलोपे सुपथिन्+ई इति जाते 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायां 'भस्य टेर्लोपः' इत्यनेन टिलोपे 'सुपथी' इति सिद्धम् ।

**सुपन्थानि** नपुंसकलिङ्गात् सुपथिन्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस्प्रत्यये सुपथिन्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे सुपथिन्+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'इतोऽत्सर्वनामस्थाने' इत्यनेन थकारोत्तरवर्तिन इकारस्य अकारादेशे सुपथन्+इ इति जाते 'थो न्थः' इत्यनेन थस्य न्थादेशे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन नान्तोपधायाः दीर्घत्वे 'सुपन्थानि' इति सिद्धम् ।

**ऊर्क्**—नपुंसकलिङ्गात् ऊर्ज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये ऊर्ज्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'चोः कुः' इत्यनेन जकारस्य कुत्वेन गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन कत्वे 'ऊर्क्' इति सिद्धम् । पक्षे—'ऊर्ग्' इति सिध्यति ।

**ऊर्ज्जी**—नपुंसकलिङ्गात् ऊर्ज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये ऊर्ज्+औ इति जाते नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे ऊर्ज्+ई इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे, ऊर्न्ज्+ई इति जाते 'नश्चापदान्त स्य झलि' इत्यनेन नकारस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णादेशे 'ऊर्ञ्जी' इति सिद्धम् ।

**ऊर्ञ्जि**—नपुंसकलिङ्गात् ऊर्ज्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये ऊर्ज्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे 'ऊर्ञ्जि' इति सिद्धम् ।

**त्यद्**—नपुंसकलिङ्गात् त्यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये त्यद्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'त्यद्' इति सिद्धम् ।

**त्ये**—नपुंसकलिङ्गात् त्यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये त्यद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे त्य+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे त्य+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'त्ये' इति सिद्धम् ।

**त्यानि**—नपुंसकलिङ्गात् त्यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने

जस् प्रत्यये त्यद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे त्य+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'त्यानि' इति सिद्धम् ।

**तत्, तद्**—नपुंसकलिङ्गात् तद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये तद+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'तत्, तद्' इति रूपद्वयं सिद्धम् ।

**ते**—नपुंसकलिङ्गात् तद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने 'औ' प्रत्यये तद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इति पररूपत्वे त+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे त+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'ते' इति सिद्धम् ।

**तानि**—नपुंसकलिङ्गात् तद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जसि तद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे त+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे-अनुबन्धलोपे त+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'तानि' इति सिद्धम् ।

**यत्, यद्**—नपुंसकलिङ्गाद् यद् शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये यद्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वेन ढकारस्य तकारे 'यत्, यद्' इति रूपद्वयं सिद्धम् ।

**ये**—नपुंसकलिङ्गाद् यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये यद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे य+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'ये' इति सिद्धम् ।

**यानि**—नपुंसकलिङ्गाद् यद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये यद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे य+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे य+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनाम-

स्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'यानि' इति सिद्धम् ।

एतत्, एतद्—नपुंसकलिङ्गाद् एतद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, एतद्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'एतत्, एतद्' इति रूपद्वयं सिद्धम् ।

एते—नपुंसकलिङ्गात् एतद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, एतद्+औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे, एत+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे, एत+ई इति जाते 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'एते' इति सिद्धम् ।

एतानि—नपुंसकलिङ्गाद् एतद्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, एतद्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे, एतद्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे, एत+इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घे 'एतानि' इति सिद्धम् ।

गवाक्, गवाग्—गामञ्चतीति विग्रहे गोपूर्वादञ्चधातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे, गो अन्च् इति स्थिते, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, गो+अन्च्+सु इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, गो अच् सु इत्यवस्थायाम् 'अवङ् स्फोटायनस्य' इत्यनेन अवङि, अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन चस्य कत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन कस्य गत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'गवाक्, गवाग्' इति रूपद्वयं सिद्धम् ।

अवङ्भावपक्षे—'सर्वत्र विभाषा गोः' इत्यनेन पाक्षिके प्रकृतिभावे, गो अक्, गो अग् इति रूपद्वयं सिद्धम् । प्रकृतिभावपक्षे—'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपे 'गोऽक्, गोऽग्' इति रूपद्वयं सिध्यति । पूजायां तु 'नाञ्चेः पूजायाम्' इति सूत्रेण नलोपस्य निषेधात् चकारस्य 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन लोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वेन ङकारे, अवङि 'गवाङ्' इति रूपं सिद्धम् । प्रकृतिभावे गो अङ् इति रूपम्, पूर्वरूपे च 'गोऽङ्' इति रूपं सिध्यति ।

गोची—गोपूर्वादञ्चुधातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये क्विनः

सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, गो अन्च्+औ इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नकारस्य लोपे 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'यचि भम्' इत्यनेन भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यनेन अचोऽकारस्य लोपे संयोगे च कृते 'गोची' इति रूपं सिद्धम् ।

**गवाञ्चि**—गोपूर्वादञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये क्विनः सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, गो अन्च्+जस् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां शकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे, गो अन्च्+इ इति जाते 'अवङ् स्फोटायनस्य' इत्यवङि, अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे, गवान् च्+इ इति जाते 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' इत्यनेन परसवर्णे 'गवाञ्चि' इति सिद्धम् ।

**गोचा**—गोपूर्वादञ्च्धातोः क्विनि प्रत्यये तस्य सर्वापहारिलोपे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयैकवचने टा प्रत्यये, अनुबन्धलोपे 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे 'अचः' इति सूत्रेण अकारस्य लोपे संयोगे च 'गोचा' इति रूपं सिद्धम् ।

पूजायां तु 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन नलोपस्य निषेधे 'अवङ् स्फोटायनस्य' इति सूत्रेण विकल्पेन अवङादेशे 'सर्वत्र विभाषा गोः' इति सूत्रेण विकल्पेन प्रकृतिभावे 'गवाञ्चा' इति, प्रकृतिभावपक्षे 'गो अञ्चा' इति, पूर्वरूपपक्षे च 'गोऽञ्चा' इति त्रीणि रूपाणि सिध्यन्ति ।

**गवाग्भ्याम्**—गोपूर्वादञ्च्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्' इत्यादिना क्विन् प्रत्यये, क्विनः सर्वापहारिलोपे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये, गो अन्च्+भ्याम् इति जाते 'अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति' इत्यनेन नलोपे, गो अच्+भ्याम् इति जाते 'अवङ् स्फोटायनस्य' इत्यनेन अवङादेशे अनुबन्धलोपे 'अकः सवर्णे दीर्घः' इत्यनेन दीर्घे, गवाच्+भ्याम् इति जाते 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन कुत्वे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन गत्वे 'गवाग्भ्याम्' इति सिद्धम् । अवङभावपक्षे 'सर्वत्र विभाषा गोः' इत्यनेन विकल्पेन प्रकृतिभावे 'गो अग्भ्याम्' इति, पक्षे च 'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपे 'गोऽग्भ्याम्'

इति रूपञ्च सिध्यति। पूजायां तु 'नाञ्चेः पूजायाम्' इत्यनेन नलोपनिषेधे अवङादेशे 'संयोगान्तस्य लोपः' इत्यनेन चकारस्य लोपे 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इत्यनेन नस्य कुत्वेन ङकारे 'गवाङ्भ्याम्' इति सिद्धम्। अवङादेशाभावपक्षे—'सर्वत्र विभाषा गोः' इत्यनेन विकल्पेन प्रकृतिभावे 'गो अङ्भ्याम्' इति, पक्षे च 'एङः पदान्तादति' इत्यनेन पूर्वरूपे 'गोऽङ्भ्याम्' इति रूपं सिध्यति।

## 'गवाक्' शब्दस्य रूपाणि

'गवाक्' शब्दस्य नपुंसकलिङ्गे अर्चायां गतौ प्रकृतिभावपक्षे, अवङादेश-पक्षे पूर्वरूपपक्षे च नवाधिकशतं ( १०९ ) रूपाणि भवन्ति। तत्र सौ, अमि, सुपि च प्रत्येकं नव, भादौ—भ्यामि, भिसि, भ्यंसि च प्रत्येकं षड्; जसि शसि च प्रत्येकं त्रीणि; शेषे दशके वचने प्रत्येकं चत्वारि रूपाणि भवन्तीत्यवधेयम्। तथा हि—

**प्रथमायाम्**—( १६ ) गवाक्-गवाग्, गो अक्-गो अग्, गोऽक्-गोऽग्, गवाङ्, गो अङ्; गोऽङ् ( ९ )। गोची, गवाञ्ची, गो अञ्ची-गोऽञ्ची ( ४ )। गवाञ्चि, गो अञ्चि, गोऽञ्चि ( ३ )।

**द्वितीयायाम्**—( १६ ) पूर्ववत्।

**तृतीयायाम्**—( १६ ) गोचा, गवाञ्चा, गो अञ्चा-गोऽञ्चा ( ४ )। गवा-ग्भ्याम्-गो अग्भ्याम् गोऽग्भ्याम्, गवाङ्भ्याम्-गो अङ्भ्याम्-गोऽङ्भ्याम् ( ६ )। गवाग्भिः, गो अग्भिः, गोऽग्भिः, गवाङ्भिः, गो अङ्भिः, गोऽङ्भिः।

**चतुर्थ्याम्**—( १६ ) गोचे, गवाञ्चे, गो अञ्चे-गोऽञ्चे ( ४ )। गवा-ग्भ्याम्, गो अग्भ्याम्-गोऽग्भ्याम्, गवाङ्भ्याम् गो अङ्भ्याम्-गोऽङ्भ्याम् ( ६ )। गवाग्भ्यः, गो अग्भ्यः-गोऽग्भ्यः, गवाङ्भ्यः, गो अङ्भ्यः-गोऽङ्भ्यः ( ६ )।

**पञ्चम्याम्**—(१६) गोचः, गवाञ्चः, गोअञ्चः-गोऽञ्चः (४)। गवाग्भ्याम्, गो अग्भ्याम्-गोऽग्भ्याम्, गवाङ्भ्याम्, गो अङ्भ्याम्-गोऽङ्भ्याम् ( ६ )। गवा-ग्भ्यः, गो अग्भ्यः-गोऽग्भ्यः, गवाङ्भ्यः, गो अङ्भ्यः-गोऽङ्भ्यः ( ६ )।

**षष्ठ्याम्**—( १२ ) गोचः, गवाञ्चः, गो अञ्चः-गोऽञ्चः ( ४ )। गोचोः, गवाञ्चोः, गो अञ्चोः-गोऽञ्चोः (४)। गोचाम्-गवाचाम्, गो अञ्चाम्-गोऽञ्चाम् (४)।

**सप्तम्याम्**—( १७ ) गोचि, गवाञ्चि, गो अञ्चि-गोऽञ्चि ( ४ )। गोचोः, गवाञ्चोः, गो अञ्चोः-गोऽञ्चोः ( ४ )। गवाक्षु, गो अक्षु-गोऽक्षु, गवाङ्क्षु-गो अङ्क्षु गोऽङ्क्षु, गवाङ्षु-गो अङ्षु-गोऽङ्षु ( ९ )।

सर्वं मिलित्वा १०९ रूपाणि भवन्ति। तथा चोक्तम्—

'गवाक्' शब्दस्य रूपाणि क्लीबेऽर्चागतिभेदतः ।
असन्ध्यवङ्पूर्वरूपैर्नवाधिकशतं मतम् ॥ १ ॥
स्वमुसुप्सु नव, षड्भादौ षट्के स्युस्त्रीणि जश्शसोः ।
चत्वारि शेषे दशके रूपाणीति विभावय ॥' २ ॥

शकृत्—शकृत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नपुंसकलिङ्गे प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, शकृत्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सुलोपे 'झलां जशोऽन्ते' इत्यनेन तस्य दत्वे 'वाऽवसाने' इत्यनेन विकल्पेन चर्त्वे 'शकृत्, शकृद्' इति रूपद्वयं सिध्यति ।

शकृती—नपुंसकलिङ्गात् शकृत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, शकृत्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'शकृती' इति सिद्धम् ।

शकृन्ति—नपुंसकलिङ्गात् शकृत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, शकृत्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'शकृन्ति' इति सिद्धम् ।

ददत्—नपुंसकलिङ्गात् ददत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, ददत्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'ददत्' इति सिद्धम् ।

ददती—नपुंसकलिङ्गात् ददत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, ददत्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'ददती' इति सिद्धम् ।

ददन्ति, ददति—नपुंसकलिङ्गात् ददत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, ददत्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'वा नपुंसकस्य' इत्यनेन विकल्पेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे 'ददन्ति' इति सिद्धम्; नुमभावपक्षे च 'ददति' इति सिध्यति ।

तुदत्—नपुंसकलिङ्गात् तुदत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, तुदत्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'तुदत्' इति सिद्धम् ।

तुदन्ती, तुदती—नपुंसकलिङ्गात् तुदत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, तुदत्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने

श्यादेशे अनुबन्धलोपे, तुदत्+ई इति जाते 'आच्छीनद्योर्नुम्' इत्यनेन विकल्पे नुमागमे, अनुबन्धलोपे 'तुदन्ती' इति सिद्धम्, नुमभावपक्षे–'तुदती' इति सिद्धम्।

तुदन्ति—नपुंसकलिङ्गात् तुदत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः श्यादेशे अनुबन्धलोपे, तुदत्+इ इति इति जाते 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'तुदन्ति' इति सिद्धम्।

भात्—नपुंसकलिङ्गात् भात्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, भात्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'भात्' इति सिद्धम्।

भाती—नपुंसकलिङ्गात् भात्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'भाती' इति सिद्धम्।

भान्ति—नपुंसकलिङ्गात् भात्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे, अनुबन्धलोपे 'भान्ति' इति सिद्धम्।

पचत्—नपुंसकलिङ्गात् पचत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, पचत्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'पचत्' इति सिद्धम्।

पचन्ती—नपुंसकलिङ्गात् पचत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, पचत्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने 'शी' इत्यादेशे अनुबन्धलोपे 'शप्श्यनोर्नित्यम्' इत्यनेन नित्यं नुमागमे अनुबन्धलोपे, नस्यानुस्वारे, परसवर्णे च 'पचन्ती' इति सिद्धम्।

पचन्ति—नपुंसकलिङ्गात् पचत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, पचत्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन श्यादेशे, अनुबन्धलोपे, पचत्+इ इति जाते 'शप्श्यनोर्नित्यम्' इत्यनेन नित्यं नुमागमे अनुबन्धलोपे, नस्यानुस्वारे परसवर्णे च 'पचन्ति' इति सिद्धम्।

दीव्यत्—नपुंसकलिङ्गात् दीव्यत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये, दीव्यत्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'दीव्यत्' इति सिद्धम्।

**दीव्यन्ती**—नपुंसकलिङ्गात् दीव्यत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, दीव्यत्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'शप्श्यनोर्नित्यम्' इत्यनेन नित्यं नुमागमे अनुबन्धलोपे, नस्यानुस्वारे परसवर्णे च 'दीव्यन्ती' इति सिद्धम् ।

**दीव्यन्ति**—नपुंसकलिङ्गात् दीव्यत्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, दीव्यत्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे, दीव्यत्+इ इति जाते 'शप्श्यनोर्नित्यम्' इत्यनेन नित्यं नुमागमे अनुबन्धलोपे, नस्यानुस्वारे परसवर्णे च 'दीव्यन्ति' इति सिद्धम् ।

**धनुः**—नपुंसकलिङ्गात् धनुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, धनुष्+सु इति इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि, षस्याऽसिद्धत्वात् 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन रेफस्य विसर्गत्वे 'धनुः' इति सिद्धम् ।

**धनुषी**—नपुंसकलिङ्गात् धनुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, धनुष्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने शी इत्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'धनुषी' इति सिद्धम् ।

**धनूंषि**—नपुंसकलिङ्गात् धनुष्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, धनुष्+जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः श्यादेशे, 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां, शकारस्येत्संज्ञायां लोपे च 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन सान्तसंयोगस्योपधाया दीर्घत्वे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे, 'नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि' इत्यनेन सस्य षत्वे संयोगे च कृते 'धनूंषि' इति सिद्धम् ।

**पयः**—नपुंसकलिङ्गात् पयस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, पयस्+सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सकारस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'पयः' इति सिद्धम् ।

**पयसी**—नपुंसकलिङ्गात् पयस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, पयस्+औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'पयसी' इति सिद्धम् ।

**पयांसि**—नपुंसकलिङ्गात् पयस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, पयस् + जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे, पयस् + इ इति जाते 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन दीर्घे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनुस्वारे 'पयांसि' इति सिद्धम् ।

**पयोभ्याम्**—नपुंसकलिङ्गात् पयस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां तृतीयाद्विवचने भ्याम् प्रत्यये, पयस् + भ्याम् इति जाते 'ससजुषो रुः' इत्यनेन रुत्वे 'हशि च' इत्यनेन उत्वे 'आद्गुणः' इत्यनेन गुणे 'पयोभ्याम्' इति सिद्धम् ।

**सुपुम्**—नपुंसकलिङ्गात् सुपुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये, सुपुंस् + सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'सुपुम्' इति सिद्धम् ।

**सुपुंसी**—नपुंसकलिङ्गात् सुपुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, सुपुंस् + औ इति जाते 'नपुंसकाच्च' इत्यनेन औस्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'सुपुंसी' इति सिद्धम् ।

**सुपुमांसि**—नपुंसकलिङ्गात् सुपुंस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायाम् प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, सुपुंस् + जस् इति जाते 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे, अनुबन्धलोपे 'शिं सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'पुंसोऽसुङ्' इत्यनेन असुङि अनुबन्धलोपे, सुपुमस् + इ इति जाते 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सान्तमहतः संयोगस्य' इत्यनेन दीर्घत्वे 'नश्चापदान्तस्य झलि' इत्यनेन नस्यानुस्वारे 'सुपुमांसि' इति सिद्धम् ।

**अदः**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नपुंसकलिङ्गे प्रथमैकवचने सु प्रत्यये, अदस् + सु इति जाते 'स्वमोर्नपुंसकात्' इत्यनेन सोर्लुकि 'ससजुषो रुः' इत्यनेन सस्य रुत्वे, अनुबन्धलोपे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इत्यनेन विसर्गे 'अदः' इति सिद्धम् ।

**अमू**—अदस्शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नपुंसकलिङ्गे प्रथमाद्विवचने औ प्रत्यये, अदस् + औ इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे, अद + औ इति जाते 'अदसोऽसेर्दादु दो मः' इत्यनेन अकारस्य उकारे दकारस्य मकारे च, अमु + औ इति जाते 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशे 'अमू' इति सिद्धम् ।

अमूनि—अदस्‌शब्दात् प्रातिपदिकसंज्ञायां नपुंसकलिङ्गे प्रथमाबहुवचने जस् प्रत्यये, अदस्+जस् इति जाते 'त्यदादीनामः' इत्यनेन अकारादेशे 'अतो गुणे' इत्यनेन पररूपत्वे 'जश्शसोः शिः' इत्यनेन जसः स्थाने श्यादेशे अनुबन्धलोपे 'शि सर्वनामस्थानम्' इत्यनेन सर्वनामस्थानसंज्ञायां 'नपुंसकस्य झलचः' इत्यनेन नुमागमे अनुबन्धलोपे 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' इत्यनेन दीर्घत्वे, अदानि इति जाते 'अदसोऽसेर्दादु दो मः' इत्यनेन दात्परस्याकारस्योत्वे दस्य मत्वे च 'अमूनि' इति सिद्धम् ।

।। इति हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ।।

## अथाऽव्ययप्रकरणम्

### स्वरादिनिपातमव्ययम् ।। १।१।३७ ।।

स्वर् आदिर्येषां ते स्वरादयः, ते च निपाताश्चेति समाहारद्वन्द्वः, अव्ययम् इति पृथक् । 'द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकमभिसम्बध्यते' इति स्मरणात्—स्वर्, अन्तर् प्रातरित्येवमादयः स्वरादिगणपठिताः शब्दाः, निपाताश्चाऽव्ययसंज्ञाः स्युरिति सूत्रार्थः सङ्गच्छते ।

### तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ।। १।१।३८ ।।

यस्मात् सर्वा विभक्तिर्नोत्पद्यते स तद्धितान्तोऽप्यव्ययसंज्ञः स्यात् ।

### कृन्मेजन्तः ।। १।१।३९ ।।

कृद् यो मान्त एजन्तश्च तदन्तमप्यव्ययसंज्ञं भवति ।

स्मारम्, स्मारम्—स्मृ धातोः 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' इत्यनेन णमुल् प्रत्यये अनुबन्धलोपे 'अचो ञ्णिति' इत्यनेन वृद्धौ रपरे च 'नित्यवीप्सयोः' इत्यनेन द्वित्वे कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सुप्रत्यये, मान्तकृदन्तत्वात् 'कृन्मेजन्तः' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुलोपे संयोगे च 'स्मारम्, स्मारम्' इति सिद्धम् ।

जीवसे—जीव प्राणधारणे इत्यस्माद्धातोः 'तुमर्थे सेसेनसेअसेन्-क्सेकसेनध्यै-अध्यैन्कध्यै-कध्यैन्शध्यै-शध्यैन्तवै-तवेङ्तवेनः' इत्यनेन सूत्रेण असे प्रत्यये, प्रातिपदिकत्वात् सुप्रत्यये तस्य 'कृन्मेजन्तः' इति सूत्रेण अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुलोपे, संयोगे 'जीवसे' इति सिद्धम् ।

पिबध्यै—पा धातोः 'तुमर्थे सेसेनसेअसेन्' इत्यादिना शध्यै प्रत्यये अनुबन्धलोपे, शित्वात् 'तिङ्शित् सार्वधातुकम्' इत्यनेन सार्वधातुकसंज्ञायां 'पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिशदसदां' इत्यादिना पास्थाने पिबादेशे, कृदन्तत्वात्

प्रातिपदिकसंज्ञायां सुप्रत्यये 'कृन्मेजन्तः' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुलोपे, संयोगे 'पिबध्यै' इति सिद्धम् ।

## क्त्वातोसुन्कसुनः ॥ १।१।४० ॥

क्त्वा-तोसुन्-कसुन्प्रत्ययान्तमप्यव्ययसंज्ञं भवति ।

कृत्वा—डुकृञ् करणे इत्यस्माद्धातोः 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' इत्यनेन क्त्वा प्रत्यये कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सौ 'क्त्वातोसुन्कसुनः' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुलोपे 'कृत्वा' इति सिद्धम् ।

उदेतोः—उत्पूर्वाद् इण् धातोः 'भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन्' इत्यनेन तोसुन् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे, गुणे, कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सु प्रत्यये 'क्त्वातोसुन्कसुनः' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुपो लुकि, सकारस्य रुत्वे विसर्गे च 'उदेतोः' इति सिद्धम् ।

विसृपः—विपूर्वात् सृप धातोः 'सृपितृदोः कसुन्' इत्यनेन कसुन् प्रत्यये, अनुबन्धलोपे, प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सौ 'क्त्वातोसुन्कसुनः' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुपो लुकि 'विसृपः' इति सिद्धम् ।

अधिहरि—हरिमधिकृत्येत्यस्मिन् विग्रहे हरि ङि अधि इत्यलौकिकविग्रहे 'अव्ययं विभक्ति०' इत्यादिना अव्ययीभावसमासे, समासत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' इत्यनेन 'अधि' इत्यस्य उपसर्जनसंज्ञायाम् 'उपसर्जनं पूर्वम्' इत्यनेन अधेः पूर्वप्रयोगे 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' इत्यनेन सुपो लुकि, समासत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां सौ 'अव्ययीभावश्च' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुपो लुकि 'अधिहरि' इति सिद्धम् ।

तत्र शालायाम्—तस्यामिति विग्रहे तत्-शब्दात् 'सप्तम्यास्त्रल्' इत्यनेन तद्धिते त्रल् प्रत्यये अनुबन्धलोपे तद्+त्र इति जाते 'खरि च' इत्यनेन चर्त्वे प्रातिपदिकसंज्ञायां सौ 'तद्धितश्चासर्वविभक्तिः' इत्यनेन अव्ययसंज्ञायाम् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुपो लुकि 'तत्र' इति सिद्धम् । स्त्रीत्वबोधनाय प्रकृते 'शालायाम्' इति योजितम् ।

अत्युच्चैसौ – उच्चैरतिक्रान्तः इत्यस्मिन् विग्रहे 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' इत्यनेन समासे, अति+उच्चैस् इति जाते 'इको यणचि' इत्यनेन

समासत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञायां औ प्रत्यये अत्युच्चैस्+औ इति जाते, अत्र समासाद्विहितस्य सुपः अव्ययभूतादुच्चैश्शब्दात् परत्वेऽपि ततो विहितत्वाऽभावात् 'अव्ययादाप्सुपः' इत्यनेन सुपो न लुक्। अत्युच्चैरिति समुदायस्य तु नाव्ययत्वम्, स्वरादिगणें उच्चैश्शब्दस्य केवलस्य पाठात्। न च स्वरादिगणे केवलं 'उच्चैस् शब्दस्य पाठेऽपि तदन्तविधिना 'स्वरादिनिपातमव्ययम्' इत्यनेन अत्युच्चैश्शब्दस्याऽपि अव्ययसंज्ञा कुतो नेति वाच्यम् 'गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसम्प्रत्यय' इति न्यायस्य जागरूकत्वात्।

अव्ययलक्षणम्—

'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥"

त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु, सर्वेषु वचनेषु, च यत् न व्येति=विकारं प्राप्नोति, किन्तु सदृशम्—एकप्रकारकमेव भवति, तद् 'अव्ययम्' इत्यर्थः।

पिधानम्—पिधानम् इत्यव्ययपदम्। अत्र 'भागुरि' नामकस्याऽऽचार्यस्य मतानुसारेण अपीत्यस्योपसर्गस्याऽकारस्य लोपे प्रातिपदिकसंज्ञायां प्रथमैकवचने सौ "अव्ययादाप्सुपः" इत्यनेन सुलोपे 'पिधानम्' इति सिद्ध्यति। अन्येषामाचार्याणाम्मते-'अपिधानम्' इति भवति। एवम् भागुरिमते-'वगाहः', अन्यमते—'अवगाहः' इत्यपि बोध्यम्। उक्तं च मूले—

"वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः।
आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा॥"

यथा—वगाहः, अवगाहः। पिधानम्, अपिधानम्। वाच्+आ=वाचा, निश्+आ=निशा इत्यादयः।

॥ इति अव्ययप्रकरणम्॥

---

# मध्यसिद्धान्तकौमुद्याः अव्ययप्रकरणान्तम्

## अतिलघूत्तरीयाणि लघूत्तरीयाणि च प्रश्नोत्तराणि

**प्रश्न १— माहेश्वर सूत्राणां किम्प्रयोजनम्?**

**उत्तरम्**— माहेश्वराणि सूत्राण्यणादि संज्ञार्थानि।

**प्रश्न २— हकारादिश्वकारः किमर्थः?**

**उत्तरम्**— हकारादिश्वकार उच्चारणार्थः।

**प्रश्न ३— माहेश्वरसूत्रे हकारस्य द्विवारं पाठः किमर्थः?**

**उत्तरम्**— हकारो द्विरुपात्तेऽयमटि शल्यपि वाञ्छता।

अर्हेणाधुक्षदित्यत्र द्वयं सिद्धं भविष्यति।

**प्रश्न ४— लोपसंज्ञाविधायकं सूत्रं सवृत्तिकं लिखन्तु**

**उत्तरम्**— अदर्शनं लोपः—

इति लोपसंज्ञाविधायकं सूत्रम्।

प्रसक्तस्य दर्शनं लोप संज्ञं स्यात्।

इति तस्य सूत्रस्य वृत्तिं।

**प्रश्न ५— उदात्त संज्ञाविधाकं सूत्रं लिखन्तु**

**उत्तरम्**— उच्चैरुदात्तः। इति उदात्तसंज्ञाविधायकं सूत्रम्।

**प्रश्न ६— अनुदात्त संज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु।**

**उत्तरम्**— नीचैरनुदात्तः।

**प्रश्न ७— स्वरित संज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु।**

**उत्तरम्**— समाहारः स्वरितः— उदातत्वाऽनुदातत्वे वर्णधर्मौ समाह्रियेते यस्मिन् सोऽच् स्वरित् संज्ञः स्यात्।

**प्रश्न ८— अनुनासिकसंज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु।**

**उत्तरम्**— मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।

प्रश्न ९— ऌवर्णस्य कति भेदाः भवन्ति?

उत्तरम्— ऌवर्णस्य द्वादश भेदाः तस्य दीर्घाऽभावात्।

प्रश्न १०— एचां कति भेदाः भवन्ति?

उत्तरम्— एचामपि द्वादश तेषां ह्रस्वाभावात्।

प्रश्न११— आभ्यन्तर प्रयत्नः कतिधा भवति?

उत्तरम्— आभ्यन्तर प्रयत्नः पञ्चधा भवति।

प्रश्न १२— आभ्यन्तर प्रयत्नानां नामानि लिखन्तु ?

उत्तरम्— स्पृष्टः, ईषत्स्पटः, ईषद्विवृतः, विवृतः संवृतश्चेत्ति पञ्चधा आभ्यन्तर प्रयत्नः।

प्रश्न १३— सवर्णसंज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— तुल्यास्य प्रयत्नं सर्वण्राम्

प्रश्न १४— स्पर्शवर्णा के?

उत्तरम्— कादयो मावसानाः स्पर्शाः

प्रश्न १५— कति भवन्ति वाह् प्रयत्नाः?

उत्तरम्— वाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा।

प्रश्न १६— वाह्यप्रयत्नानां नामानि लिखन्तु?

उत्तरम्— विवारः, संवारः, श्वासो,, नादः, घोषः, अघोषः, अल्पप्राणः, महाप्राणः, उदात्तः, अनुदात्तः, स्वरितश्चेति एकादश वाह्यप्रयत्नाः।

प्रश्नः १७— जिह्वमूलीयः कः?

उत्तरम्—अह क अह ख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्ग सदृशो जिह्वमूलीयः।

प्रश्नः १८— उपध्मानीयः कः?

उत्तरम् अहःप अह फ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो उपध्मानीयः।

प्रश्नः १९— संहितासंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— परः संनिकर्षः संहिता।

प्रश्नः २०— संयोगसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— हलोऽनन्तराः संयोगः।

प्रश्नः २१— पदसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— सुप्तिङन्तं पदम्।

प्रश्नः २२— यणादेश विधायकं सूत्रं सार्थं लिखन्तु?

उत्तरम्— इको यणचि— इकः स्थाने यण् स्यादचि संहितायां विषये।

प्रश्नः २३— अयाद्यादेश विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— एचोऽयवायावः।

प्रश्नः २४— गुणसंज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अदेङ्गुणः— अदेङ् च गुणसंज्ञः स्यात्।

प्रश्नः २५— तपरार्थ निर्णायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— तपरस्तत्कालस्य—

तः परोयस्मात् तात्परश्चोच्चार्यमाणो वर्णः समकालस्यैव संज्ञा स्यात्।

प्रश्नः २६— गुणादेश विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— आंद्गुणः—

अवर्णादचिपरे पूर्वपरयोरेको गुणादेशः स्यात्।

प्रश्नः २७— वृद्धिसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— वृद्धिरादैच्—

आदैच्च वृद्धिसंज्ञः स्यात् ।

प्रश्नः २८— वृद्धयेकादेश विधायकं सूत्रं लिखन्तु ?

उत्तरम्— वृद्धिरेचि—

आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः।

प्रश्नः २९— पररूपविधायकं सूत्रं लिखन्तु ?

उत्तरम्— एङि पररूपम्—

आदुपसर्गाद्ङादौ धातौ परे पररूपमेकादेशः।

प्रश्नः ३०— टिसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अचोऽन्त्यादि टि =

अचां मध्ये यो अन्त्य स आदिर्यस्य तट्टि संज्ञं स्यात्।

प्रश्नः ३१— लघुसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— ह्रस्वं लघु।

प्रश्नः ३२— ह्रस्वस्य गुरु संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— संयोगे गुरुः— संयोगे परे ह्रस्वं गुरुसंज्ञा स्यात्।

प्रश्नः ३३— उदन्त—अदन्त—ऐदन्तानां प्रगृह्यसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्।

प्रश्नः ३४— श्चुत्वविषायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— स्तोः श्चुना श्चुः।

प्रश्नः ३५— ष्टुत्वविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— ष्टुना ष्टुः।

प्रश्नः ३६— जश्त्व विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— झलां जशोऽन्ते।

प्रश्नः ३७— चर्त्वविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— खरि च।

प्रश्नः ३८— शस्य छत्व विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— शश्छोऽटि।

प्रश्नः ३९— मान्तपदस्यानुस्वारविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— मोऽनुस्वारः।

प्रश्नः ४०— रेफस्य विसर्ग विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— खरवसानयोः विसर्जनीयः।

प्रश्नः ४१— विसर्गस्य सकार विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— विसर्जनीयस्य सः।

प्रश्नः ४२— आम्रेडित संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— तस्य परमाम्रेडितम्।

प्रश्नः ४३— सस्य विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— ससजुषो रुः।

प्रश्नः ४४— पूर्वस्याणो दीर्घविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

प्रश्नः ४५— प्रातिपादिकसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— (१) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्। (२) कृत्तद्धित समासाश्च।

प्रश्नः ४६— सुप् विभक्तीनां एकवचन द्विवचन—वहुवचन प्रतिपादकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— सुपः =

सुपस्त्रीणि त्रीणि वचनान्येकवच द्विवचन बहुवचनन संज्ञानि स्युः।

प्रश्नः ४७—अवसान संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— विरामोऽवसानम्— वर्णानामभावोऽवसानसंज्ञः स्यात्।

प्रश्नः ४८— अङ्गसंज्ञाविधायकंसूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— यस्मात् प्रत्यय विधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्।

यः प्रत्ययो यस्मात् विधीयते तदादिशब्दस्वरूपं तस्मिन् प्रत्यये परेऽङ्गसंज्ञं स्यात्।

प्रश्नः ४९— रषाभ्यां परस्य नस्य णत्वविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि।

प्रश्नः ५०— भिष ऐस् विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अतो भिस ऐस्।

प्रश्नः ५१— स्थानिवद्भाव विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ।

प्रश्नः ५२— सस्य षत्व विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— आदेश प्रत्ययोः।

इण्कुभ्यां परस्यापदान्तस्याऽऽदेशः प्रत्ययावयश्च यः सस्तस्य मूर्धन्यादेशः

प्रश्नः ५३— सर्वनामसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— सर्वादीनि सर्वनामानि।

प्रश्नः ५४— सर्वनाम्नोङेः स्मै विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— सर्वनाम्नः स्मै।

प्रश्नः ५५— जरायाः जरस विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— जरायाः जरसन्यतरस्याम्।

जरायाः जरस्वास्यादजादौ विभक्तौ॥

प्रश्नः ५६— भसंज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— यचि भम्।

यकारादिष्वजादिषु च कप् प्रत्ययावधिषु स्वादिष्वसर्वनामस्थानेषु पूर्वं भ संज्ञं स्यात्।

प्रश्नः ५७— उपधासंज्ञाविधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा।

अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधा संज्ञः स्यात्।

प्रश्नः ५८— एकाल् प्रत्ययस्य अपृक्त संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अपृक्त एकाल प्रत्ययः।

एकाल्प्रत्ययो यः सोऽपृक्त संज्ञः स्यात्।

प्रश्नः ५९— संख्यासंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— बहुगणवतुडति संख्या।

प्रश्नः ६०— नदी संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— यूस्त्र्याख्यौ नदी

ईदूदन्तौ नित्यस्त्रीलिङ्गौ नदीसंज्ञौ स्तः।

प्रश्नः ६१— बहुव्रीहि समासे दिग्वाचकानां शब्दानां सर्वनामसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— विभाषा दिक्समासे।

प्रश्नः ६२— के स्वस्रादयः?

उत्तरम्— स्वसा तिस्रश्चतस्रश्च ननन्दा दुहिता तथा।

याता मातेति सप्तैते स्वस्रादय उदाहृताः।। इति।

प्रश्नः ६३— क्लीबात् स्वमोरम् विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— अतोऽम्।

प्रश्नः ६४— क्लीबात् जशशसोःशी विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— जश्शसोः शी।

प्रश्नः ६५— भाषितपुंस्कं निरूपयन्तु।

उत्तरम्— यन्निमितमुपादाय पुंसिशब्दः प्रवर्तते।

क्लीबवृत्ति तदेव स्यात् उक्तपुंस्कं तदुच्यते।।

पीलुर्वृक्षः फलं पील पीने न तु पीलवे।

वृक्षे निमित्तं पीलुत्वं तज्जत्वं तत्फले पुनः।।

प्रश्नः ६६— हकारस्य ढकार विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— होढः।

हस्य ढः स्यज्झलि पदान्ते च।

प्रश्नः ६७— दादिधातोर्हस्य घत्व विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— दादेर्धातोर्घः।

झलि पदान्ते चोपदेशे दादेर्धातोर्हस्य घः।

प्रश्नः ६८— सम्प्रसारण संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु।

उत्तरम्— इग्यण सम्प्रसारणम्।

यणः स्थाने प्रयुज्यमानो य इक् सः सम्प्रसारण संज्ञः स्यात्।

प्रश्नः ६९— अन्वादेश पदार्थं निरूपयन्तु?

उत्तरम्— किञ्चित् कार्यं विधातु मुपात्तस्य कार्यान्तरं विधातुं पुनरुपादानम्—अन्वादेशः।

प्रश्नः ७०— षट् संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— ष्णान्ता षट्।

षान्ता नान्ता च संख्या षट् संज्ञा स्यात्।

प्रश्नः ७१— कृत्संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— कृदतिङ्।

अत्र धात्वधिकारे तिङ् भिन्नः प्रत्ययः कृत् संज्ञः स्यात्।

प्रश्नः ७२— चवर्गस्य कवर्ग विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— चोः कुः ।

चवर्गस्य कवर्गः स्याज्जझलि।

प्रश्नः ७३— आमन्त्रितसंज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु?

उत्तरम्— सामन्त्रितम्।

सम्बोधने या प्रथमा तदन्तमामन्त्रितसंज्ञं स्यात्।

प्रश्नः ७४— अभ्यस्त संज्ञा विधायकं सूत्रं लिखन्तु।

उत्तरम्— उभे अभ्यस्तम्। षाष्ठ द्धित्व प्रकरणे ये द्वे विहिते ते उभे समुदिते अभ्यस्त संज्ञे स्तः।

प्रश्नः ७५— ताम् कारिकां लिखन्तु यस्यां सप्तानां अभ्यस्त संज्ञानां ६ ातूनां गणना कृता वर्तते?

उत्तरम्— जक्षिजागृ दरिद्रा शस् देधीङ् वेवीङ् चकास्तथा।

अभ्यस्त संज्ञाविज्ञेया धातवो मुनिभाषिता।। इति।

## मध्यसिद्धन्तकौमुद्यां लधूत्तरीयाः प्रश्नाः

**प्रश्नः १— माहेश्वराणि सूत्राणि लिखन्तु?**

उत्तरम्— अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच, हयवरट्, लण्, ञमङणनम्, झभञ, घढधष, जबगडदश, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर, हल्। इति माहेश्वराणि सूत्राणि।

**प्रश्न २— स्वादि विभक्तीः लिखन्तु?**

उत्तरम्— सु, औ, जस्, अम्, औट्, शस्, टा भ्याम्, भिस्, ङे, भ्याम, भ्यस, ङसि, भ्याम् भ्यस्, ङस् भ्याम्, भ्यस्, ङि, ओस्, सुप। इति स्वादि विभक्तयः

**प्रश्न ३— प्रादि गणं लिखन्तु?**

उत्तरम्— प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप। ऐते प्रादयः।

**प्रश्न ४— द्रव्य लक्षणं लिखन्तु।**

उत्तरम्— वस्तुपलक्षणे यत्र सर्वनाम प्रयुज्यते।
द्रव्यामित्युच्यते सोऽर्थो भेद्यत्वेन विवक्षितः।

**प्रश्न ५— सञ्च्छम्भुः अत्यस्य कति रूपाणि भवन्ति?**

उत्तरम्— सञ्च्छम्भु इत्यस्य चत्वारि रूपाणि भवन्ति।
सञ्च्छम्भुः, सञ्छम्भुः, सञ्च्शम्भुः, सञ्शम्भुः इति।

तथाचोक्तमपि—

ञछौ, ञचछा, ञ्चशा, ञशाविति चतुष्टयम्।
रूपाणामिह तुक्, छत्व चलोपानां विकल्पनात्।।

**प्रश्न ६— निम्नांकितानां सूत्राणामर्थं लिखन्तु?**

(१) अणुदित्सवर्णस्या चाप्रत्ययः, (२) आदिरन्त्येन सहेता (३) तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य, (४) अलोऽन्त्यस्य (५) तपरस्तत्कालस्य, (६) उपदेशऽजनुनासिक इत्, (७) पूर्वत्राऽसिद्धम् (८) एत्येधत्यूठ्सु, (९) उपसर्गादृति धातौ, (१०) ओमाङोश्च (११) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्, (१२) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वच, (१३) नपदन्ताट् टेरनाम्, (१४) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा, (१५) तस्मादित्युत्तरस्य,

(१६) मो राजि समः क्वौ, (१७) आद्यन्तौ टकितौ, (१८) ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्, (१९) शर्परिविसर्जनीयः, (२०) अतो रोरप्लुदप्लुते, (२१) हलि सर्वेषाम्, (२२) औङ आपः।

उत्तरम्– (१) अणुदित्सवर्णस्य चा प्रत्ययः–

आविधीयमानोऽण् उदिच्च सवर्णस्य संज्ञा स्यात्। अत्रैवाण् परेण णकारेण। कु चु टु तु पु एते उदितः।

(२) आदिरन्त्येन सेहिता'

अन्त्येनैता सहित आदिर्मध्यगानां स्वस्य च संज्ञा स्यात् यथा अण् इति अ इ उ वर्णानां संज्ञा। एवमच् हल् अलित्यादयः।

(३) स्मन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य–

सप्तमी निर्देशेन विधीयमानं कार्यं वर्णान्तरेणा व्यवहितस्यपूर्वस्य ज्ञेयम्।

(४) अलोऽन्त्यस्य–

षष्ठी निर्दिष्टोन्त्यस्याल आदेशः स्यात्।

(५) तरस्तत्कालस्य—

तः परो यस्मात् तात्परो वा उच्चार्यमाणो वर्णः समकालस्यैव संज्ञा स्यात्।

(६) उपदेशेऽजनुनासिक इत्–

उपदेशेऽनुनासिकोजित् संज्ञः स्यात्। प्रतिज्ञाऽनुनासिक्याः पाणिनीयाः। लण् सूत्रस्थावर्णेन सहोच्चार्यमाणो रेफो रलयोः संज्ञः।

(७) पूर्वत्राऽसिद्धम्–

सपादसप्ताध्यायीं प्रति त्रिपाद्यसिद्धा। त्रिपाद्यामपि पूर्वं प्रति परं शास्त्रमसिद्धम्।

(८) एत्येधत्यूठ्सु– अवर्णादिजाद्यो रेत्ये धात्योरूठि च परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्। पररूप गुणापवादः।

(९) उपसर्गादृतिधातौ–

अवर्णान्तादुपसर्गादृकारादौ धातौ परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्। प्राच्र्छति।

(१०) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्–

ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यं स्यात् हरी एतौ, विष्णू इमौ।

(११) ईकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च– पदान्ता इको ह्रस्वाः प्रकृत्या च वा स्युरसवर्णेऽचि। ह्रस्वविधानसामर्थ्यान्न स्वर सन्धिः। चक्रि अत्र।

(१२) न पदान्ताट्टोरनाम्—

अनामिति लुप्तषष्ठीकम्पदम् पदान्ताट् टवर्गात् परस्याऽनामः स्तोः ष्टुर्न स्यात्। षट् सन्तः।

(१३) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा— यरः पदान्तस्याऽनुनासिके परे ऽनुनासिको वा स्यात्। एतन्मुरारी, एतद् मुरारी।

(१४) तस्मादित्युत्तरस्य— पञ्चमी निर्देशेन क्रियमाणं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य परस्य ज्ञेयम्।

(१५) मो राजि समः क्वौ— क्विबन्ते राजतौ परे समो मस्य म एव स्यात्। सम्राट्।

(१६) आद्यन्तौ टकितौ—

टित् कितौ यस्योक्तौ तस्य क्रमादाद्यन्तावयवौ स्तः। षटत्सन्तः।

(१७) ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्—

ह्रस्वात् परो योङम् तदन्तं यत् पदं, तस्मात् परस्याचो नित्यं ङमुडागमः स्यात्। प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण्णीशः। सन्नच्युतः।

(१८) शर्परे विसर्जनीयः—

शर् परे खरि विसर्गस्य विसर्गो न त्वन्यत्। कः त्सरुः।

(१९) अतो रोरप्लुतादप्लुते— अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यात्। अप्लुतेऽति। शिवोर्च्यः।

(२०) हलि सर्वेषाम्— भो भगो अघो अपूर्वस्य लघ्वलघूच्चारणस्य यस्य नित्यं लोपः स्याद् हलि।

(२१) औङ आपः—

अजन्तादङ्गात् परस्यौङः शी स्यात्

औङ इत्यौकार विभक्तेः संज्ञा। रमे।

प्रश्नः ७— निम्नांकितानां सन्धि विच्छेदं कुर्वन्तु?

गव्यूतिः, नायकः, पावकः, रमेशः, गङ्गौघः, गवाग्रम्, उपेन्द्रः, कृष्णर्द्धिः, तवल्कारः, विष्ण इह, उपैधते, स्वैरी, स्वैरम्, प्रौहः, प्रैषः, पैष्यः, हरिश्शेते, रामष्षष्ठः, सन्नच्युतः, प्रश्नः, विश्नः, उत्थानम्, उत्तम्भनम्, यशांसि, किंयं ह्यः,

किन् ह्नुते, सुगणठ्षष्ठः, सञ्च्छम्भुः, संस्कर्ता, पुंस्कोकिलः, कौतस्कुतः विष्णुस्त्राता, शिवोऽर्च्यः, यशोदा, मनोरथः।

उत्तरम्— (१) सुद्ध्युपास्यः= सुधी+उपास्य = सुद्ध्युपास्यः। यणादेशः।

(२) हरये= हरे+ ए= हरये। आया देशः।

(३) गव्यूति= गो+यूतिः= गव्यूतिः। अवादेशः।

(४) नायकः= नै+ अकः= नायकः। अयादेशः।

(५) पावकः= पौ+ अकः= पावकः। आवादेशः।

(६) रमेशः= रमा+ईशः= रमेशः। गुण एकादेशः।

(७) गङ्गौघः= गङ्गा+ओघः= गङ्गौघः। वृद्ध्येकादेशः।

(८) गवाग्रम्= गो+अग्रम्= गवाग्रम्। अवङादेशः।

(९) उपेन्द्रः= उप+ इन्द्रः= उपेन्द्रः। गुण एकादेशः।

(१०) कृष्णर्द्धि= कृष्ण+ऋद्धिः= कृष्णर्द्धि। गुण एकादेशः।

(११) तवल्कारः= तव+लृकारः= तवल्कारः। गुण एकादेशः लपरश्च।

(१२) विष्ण इह= विष्णो+इह= विष्ण इह। अवादेश वलोपश्च।

(१३) उपैधते= अप+एधते= उपैधते। वृद्धि एकादेशः।

(१४) स्वैरी= स्व+ इरी= स्वैरी= वृद्ध्येकादेशः।

(१५) स्वैरम्= स्व+ईरम्= स्वैरम्= वृद्ध्यैकादेशः।

(१६) प्रौहः= प्र+उहः= प्रौहः= वृद्ध्योकादेशः।

(१७) प्रैषः= प्र+एषः= प्रैषः= वृद्ध्येकादेशः।

(१८) पैष्यः= प्र+एष्यः= प्रैष्यः= वृद्ध्येकादेशः।

(१९) हरिश्शेते= हरिस्+शेते= हरिश्शेते= श्चुत्वम्।

(२०) रामष्षष्ठः= रामस्+षष्ठः= रामष्षष्ठः= ष्टुत्वम्।

(२१) सन्नच्युतः= सन्+ अच्युतः= सन्नच्युतः= ङमुडागमः (नुडागमः)।

(२२) प्रश्नः= प्रश्+नः= प्रश्नः= श्चुत्वाभावः।

(२३) विश्नः= विश्+नः= विश्नः= श्चुत्वाभावः।

(२४) उत्थानम्= उद्+स्थानम्= उत्थानम्।

(२५) उत्तम्भनम्= उद्+स्तम्भनम्= उत्तम्भनम्।

(२६) यशांसि= यशान्+सि= यशांसि= नस्यानुस्वारः।

(२७) किंयं हयः=किम्+ह्यः= कियं ह्यः= मकारस्य यकारादेशः।

(२८) किन् ह्नुते= किम्+ह्नुते= किन् ह्नुते= मकारस्य यकारादेशः।

(२९) सुगणठ्षष्ठः= सुगण्+षष्ठः= सुगणठ्षष्ठः= टुक्आगमः।

(३०) सञ्च्छम्भुः= सन्+शम्भुः= सञ्च्छम्भुः= मुगागमः, श्चुत्वम्, छत्वञ्च।

(३१) संस्कर्ता= सम्+कर्ता= संस्कर्ता— सुडागमः, मकारस्य च रुत्वादिकम्।

(३२) पुंस्कोकिलः= पुम्+कोकिलः= पुंस्कोकिलः। मस्यरुत्वादिकम्।

(३३) कौतस्कुतः कौतः+कुतः=कौतस्कुतः= विसर्गस्य सकारः।

(३४) विष्णुस्त्राता= विष्णुः+त्राता= विष्णुस्त्राता= विसर्गस्य सः

(३५) शिवोर्च्यः= शिवस्+अर्च्यः= शिवोर्च्यः= रो उः।

(३६) यशोदा= यशस्+दा= यशोदा= सस्य रुत्वम्।

(३७) मनोरथः= मनस् रथः= मनोरथः= सस्य रुत्वम्।

प्रश्नः ८— निम्नाकितानि शब्द रूपाणि लिखन्तु?

(१) राम शब्दस्य तृतीया बहुवचने, षष्ट्या बहुवचने, सप्तम्याः एकवचने च रूपमं

(२) हरि शब्दस्य तृतीयैकवचने, पञ्चम्या एकवचने, सप्तम्येक वचने च रूपम्।

(३) सर्वशब्दस्य प्रथमा बहुवचने, पञ्चम्येकवचने, सप्तम्येक वचनो च रूपम्।

(४) निर्जर शब्दस्य प्रथमाद्विवचने, षष्ठ्याः बहुवचने च रूपम्।

(५) पादशब्दस्य द्वितीयायाः बहुवचने तृतीयैकवचने च रूपम्।

(६) विश्वपा शब्दस्य द्वितीया बहुवचने चतुर्थ्येकवचने च रूपम्।

(७) सखि शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने, तृतीयेकवचने च रूपम्।

(८) पति शब्दस्य तृतीयैकवचने, सप्तम्योकवचने च रूपम्।

(९) बहुश्रेयसी शब्दस्य षष्ठ्या बहुवचने रूपम्।

(१०) प्रधी शब्दस्य सप्तम्येकवचने रूपम्।

(११) ग्रामणी शब्दस्य सप्तम्येकवचने रूपम्।

(१२) क्रोष्टु शब्दस्य प्रथमैकवचने, द्वितीयायाः बहुवचने, चतुर्थ्येकवचने च रूपम्।

(१३) पितृशब्दस्य तृतीयैकवचने, चतुर्थ्येकवचने, सप्तम्येकवचने च रूपम्।

(१४) गौशब्दस्य द्वितीया बहुवचने षष्ठ्येक वचने च रूपम्।

(१५) रमा शब्दस्य प्रथमा बहुवचने, चतुर्थेकवचने सप्तम्येकवचने च रूपम्।

(१६) मति शब्दस्य द्वितीयाः बहुवचने, चतुर्थ्येकवचने च रूपम्।

(१७) स्त्रीलिङ्ग त्रिशब्दस्य प्रथमाबहुवचने षष्ठ्या बहुवचने च रूपम्।

(१८) श्री शब्दस्य प्रथमाया एकवचने सम्बोधनस्यैकवचने च रूपम्।

(१९) ज्ञान शब्दस्य प्रथमायाः बहुवचने, चतुर्थ्येकवचने च रूपम् ।

(२०) दधि शब्दस्य षष्ठ्येकवचने सप्तम्येकवचने च रूपम्।

(२१) दुह् शब्दस्य तृतीयैकवचने सप्तम्येक वचने च रूपम्।

(२२) अनुडुह् शब्दस्य द्वितीया बहुवचने सप्तम्येकवचने च रूपम्।

(२३) किम् शब्दस्य प्रथमायाः बहुवचने तृतीयाबहुवचने च रूपम्।

(२४) इदम् शब्दस्य चतुर्थ्येकवचने सप्तम्येकवचने च रूपम् पुंसि।

(२५) राजन् शब्दस्य द्वितीया बहुवचने षष्ठी बहुवचने च रूपम्।

(२६) वृत्रहन् शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने बहुवचने च रूपम्।

(२७) यज्वन् शब्दस्य द्वितीयायाः बहुवचने, तृतीयायाः द्विवचने च रूपम्।

(२८) युवन् शब्दस्य द्वितीयाबहुवचने तृतीयायाः द्विवचने च रूपम्।

(२९) अर्वन् शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने द्वितीयायाः बहुवचने च रूपम्।

(३०) पथिन् शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने द्वितीयायाः बहुवचने च रूपम्।

(३१) तत् शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने तृतीयायाः एकवचने च रूपम्।

(३२) अस्मद् शब्दस्य द्वितीयायाः बहुवचने चतुर्थ्येकवचने च रूपम्।

(३३) युस्मद् शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने षष्ठ्येकवचने च रूपम्।

उत्तरम्— (१) राम शब्दस्य तृतीयायाः एकवचने रूपम्— रामेण, षष्ठ्याः बहुवचने रूपम्। रामाणाम्, सप्तम्येकवचने च रूपम्— रामे।

(२) हरि शब्दस्य तृतीयायाः एक वचनेरूपम् हरिणा, पञ्चम्या एकववने रूपम्— हरेः, सप्तम्येकवचने च रूपम् हरौ।

(३) सर्वशब्दस्य प्रथमायाः बहुवचने— सर्वे, सर्वाः इति द्वे रूपे, पञ्चम्येक वचने— सर्वस्मात सर्वात् इति द्वे रूपे, सप्तम्येकवचने च सर्वस्मिन् सर्वे च रूपे।

(४) निर्जरशब्दस्य प्रथमायाः द्विवचने निर्जरौ, निर्जरसौ इति द्वे रूपे षष्ठ्याः बहुवचने च निर्जरसाम्। च निर्जराणाम् इति द्वे रूपे।

(५) पादशब्दस्य द्वितीयायाः बहुवचने पदः तृतीयायाः एक वचने च रूपम्— पदा।

(६) विश्वपाशब्दस्य द्वितीयायाः एकवचने च रूपम् विश्वपः। चतुर्थ्येकवचने च रूपम्— विश्वपे।

(७) सखि शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने रूपम्— सखा, तृतीयैकवचने च रूपम्— सख्या।

(८) पति शब्दस्य तृतीयैकवचने रूपम्— पत्या सप्तम्येकवचने च रूपम्— पत्यौ।

(९) बहुश्रेयसी शब्दस्य षष्ठ्याः बहुवचने रूपम्— बहुश्रेयसीनाम्।

(१०) प्रधी शब्दस्य सप्तम्येकवचने रूपम्— प्रध्यि।

(११) ग्रामणी शब्दस्य सप्तम्येकवचने रूपम्— ग्रामण्याम्।

(१२) क्रोष्टु शब्दस्य प्रथमैकवचने— क्रोष्टा, द्वितीयायाः बहुवचने रूपम्— क्रोष्टून् चतुर्थ्येक वचने च— क्रोष्ट्रे क्रोष्टवे इति द्वे रूपे।

(१३) पितृ शब्दस्य तृतीयायाः एकवचने पित्रा— चतुर्थ्येक वचने— पित्रे सप्तम्येक वचने च— पितरि इति रूपम्।

(१४) गौ शब्दस्य द्वितीयायाः बहुवचने— गाः, षष्ठ्येक वचने च— गोः, रूपम्।

(१५) रमा शब्दस्य प्रथमा बहुवचने— रमाः, चतुर्थ्येकवचने— रमायै, सप्तम्येक वचने च रूपम्— रमायाम्।

(१६) मति शब्दस्य द्वितीयायाः बहुवचने—मतीः, चतुर्थ्येकवचने— मत्यै मतये इति द्वे रूपे।

(१७) स्त्री शब्दस्य प्रथमायां बहुवचने— स्त्रियः षष्ठ्याः बहुवचने च— स्त्रीणाम् रूपम्।

(१८) श्री शब्दस्य प्रथमायाः एकवचने— श्रीः सम्बोधनस्यैकवचने च— हे श्रीः इति रूपम।

(१९) ज्ञान शब्दस्य प्रथमायाः बहुवचने रूपम्— ज्ञानानि, चतुर्थ्येकवचने च रूपम् ज्ञानाय।

(२०) दधि शब्दस्य षष्ठ्येकवचने– दध्न: रूपम्, सप्तम्येकवचने च– दध्नि, दधनि इति द्वे रूपे।

(२१) दुह शब्दस्य तृतीयाया: एकवचने– दुहा, सप्तम्येकवचने च– दुहि रूपम्।

(२२) अनडुह शब्दस्य द्वितीयाया: बहुवचने– अनुडुह:, सप्तम्येक वचने च अनुडुहि रूपमं

(२३) किम् शब्दस्य पुंसि प्रथमाया: बहुवचने– के रूपम्, तृतीयाया: बहुवचने च– कै: रूपम्।

(२४) इदम् शब्दस्य पुंसि चतुर्थ्येकवचने– अस्मै रूपम्, सप्तम्येक वचने च– अस्मिन् रूपम्।

(२५) यज्वन् शब्दस्य द्वितीयाया: बहुवचने– यज्वन: रूपम् तृतीयाया: द्विवचने यज्वभ्याम् च रूपम्।

(२६) वृत्रहन् शब्दस्य प्रथमाया: एकवचने– वृत्रहा रूपम्, प्रथमाया: बहुवचने च– वृत्रहण: रूपम्।

(२७) मघवन् शब्दस्य प्रथमाया: एकवचने– मघवा रूपम् द्वितीयाया: बहुवचने– मघोन: रूपम्।

(२८) युवन् शब्दस्य द्वितीयाया: बहुवचने–
यून: रूपम् तृतीयाया: द्विवचने युवभ्याम्।

(२९) अर्वन् शब्दस्य द्वितीयाया: बहुवचने– अर्वत: रूपम् तृतीयाया: द्विवचने अर्वद्भ्याम् इति रूपम्।

(३०) पथिन् शब्दस्य प्रथमाया: एकवचने– पन्था: द्वितीयाया: बहुवचने च– पथ: रूपम्।

(३१) तत् शब्दस्य पुंसि प्रथमाया: एकवचने– स: रूपम्, तृतीयाया: एकवचने च तेन रूपम्।

(३२) अस्मद् शब्दस्य द्वितीयाया: बहुवचने– अस्मान्, न: इति द्वे चतुर्थ्येक वचने च– अस्मभ्यम्, न: इति द्वे रूपे।

(३३) युष्मद् शब्दस्य प्रथमाया: एकवचने– त्वम्, षष्ठ्येकवचने ते इति द्वे रूपे।

प्रश्नः ९— निम्नांकितानि सूत्राणि पूर्णरूपेण लेखनीयानि।

(१) यथासंख्यम० (२) प्रवत्सतरः० (३) गुरोरनृतो० (४) ङमोह्रस्वादचि० (५) एतत्तदो० (६) अर्थवदधातु० (७) स्वौजस्मौ० (८) पूर्वपरावर० (९) प्रथमचरम० (१०) पदन्नोमास० (११) अप्तृन्तृच्० (१२) नलोपः सुप्स्वर० (१३) ऋत्विग्दधृक्० (१४) व्रश्चभ्रस्ज० (१५) युष्मदस्मदोः षष्ठी० (१६) नाऽमन्त्रिते०।

उत्तरम्— (१) यथासंख्यमनुदेशः समानाम्।

(२) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे।

(३) गुरोरनुतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम्।

(४) ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्।

(५) एतत्तदो सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि।

(६) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।

(७) स्वौजसमौट्छष्टाभ्यां भिस् ङेभ्यांभ्यस् ङसि भ्यां भ्यस्, ङसोसाम् ङ्योस्सुप।

(८) पुर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि— व्यवस्थायामसंज्ञायाम्।

(९) प्रथमचरमतयाल्पार्ध कतिपयनेमाश्च।

(१०) पदन्नोमास हृन्नसन्यूषन् दोषन् यकञ्छकन्नुदन्नसिञ्छस् प्रभृतिषु।

(११) अप्तृन्तृच् स्वसृ—नप्तृ— नेष्टृ—त्वष्टृ—क्षतृ—होतृ—पोतृ—प्रशास्तृणाम्।

(१२) न लोपः सुप् स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति।

(१३) ऋत्विग्दधृक् साग्दिगुष्णिाञ्चु युजिक्रुञ्चां च।

(१४) व्रश्च भ्रस्जसृजमृजयजराज भ्राजच्छशां षः।

(१५) युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीयास्थर्वान्नावौ।

(१६) नाऽमन्विते सामानाधिकरणे सामान्यवचनम्।

□□□

स्त्रीणाम् रू

(१८) श्री

श्रीः इति रूपम।

नोरमा-रत्नविमर्शः। केशवदेव तिवारी। (१-२ भाग)
हाभाष्यनवाह्निकीयालोचनम्। (नवाह्निक-प्रश्नोत्तरी) विजयमित्र शास्त्री
ालविकाग्निमित्र-रहस्यम्। डॉ. बालगोविन्द झा
ीमांसापरिभाषा सोपानम्। डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
क्तावली-प्रकाश। (न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-प्रश्नो.) राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
द्राराक्षस-विवेकः। लोकमणि दाहाल
च्छकटिक-सोपानम्। डॉ. नरेश झा
घदूत-तत्त्वालोकः। अशोकचन्द्र गौड़ शास्त्री
घुवंश-रहस्यम्। रामप्रसाद त्रिपाठी। १-३ सर्ग, ६-७ सर्ग, १३-१४ सर्ग
त्नावलीनाटिका सोपानम्। डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
रसगङ्गाधर-सारः। डॉ. नरेश झा
लघुशब्देन्दुशेखर-सोपानम्। डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
लघुसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका। आचार्य विजयमित्र शास्त्री
वक्रोक्तिजीवित-दीपिका। डॉ. नरेश झा
वाक्यपदीय-प्रकाशिका। (ब्रह्मकाण्ड)। डॉ. सुरेशचन्द्र शर्मा
वासवदत्ता-रहस्यम्। डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
वेणीसंहार-रहस्यम्। पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय
वेदान्तपरिभाषा-सौरभम्। आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
वेदान्तसार-प्रदीपः। श्री राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
वैदिकसाहित्येतिहास-सोपानम्। डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
वैयाकरणभूषणसार-दीपिका। श्री रामकिशोर त्रिपाठी
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका। शास्त्री एवं त्रिपाठी। (१-४ खण्ड) सम्पूर्ण
वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा-रहस्यम्। स्वामी रामेश्वर पुरी
वृत्तरत्नाकर-दीपिका। पं. वेदव्यास शुक्ल
व्यक्तिविवेकप्रश्नोत्तरीः। (१-२ विमर्श) कोठ्यारी एवं द्विवेदी
व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः। डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
शाकुन्तल-रहस्यम्। त्रिलोकीनाथ द्विवेदी
शिवराजविजय-दीपिका। पं. वेदव्यास शुक्ल। प्रथम विराम
शिशुपालवध-रहस्यम्। श्री अशोकचन्द्र गौड़ शास्त्री। १-४ सर्ग
संस्कृतसाहित्येतिहास-कुञ्जिका। आचार्य परमानन्द शास्त्री
सांख्यकारिकादर्शः। राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
साहित्यदर्पणालोकः। रामजीलाल शर्मा। (१-६ परि.; ७-१० परि.) सम्पूर्ण
साहित्यशास्त्रीयोनिबन्धेतिहासः। वेदव्यास शुक्ल।
सिन्धुवादवृत्त-रहस्यम्। डॉ कृष्णदेव प्रसाद
स्वरवैदिकी-प्रकाशः। डॉ. बालगोविन्द झा

भारतवर्ष के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों
( सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी;
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली;
जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी;
अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा;
पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर;
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर इत्यादि )

एवं

समस्त संस्कृत शिक्षा-संस्थानों ( माध्यमिक संस्कृत बोर्ड इत्यादि ) के परीक्षा पाठ्य-क्रम में निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें एवं प्रश्नोत्तरियाँ निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैं—

**चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन**
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129,
वाराणसी 221001
दूरभाष : (0542) 2335263

**चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस**
4697/2, भू-तल ( ग्राउण्ड फ्लोर )
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : (011) 23286537

**चौखम्बा विद्याभवन**
चौक ( बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे )
पो. बा. नं. 1069,
वाराणसी 221001
दूरभाष : 2420404

**चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113
दिल्ली 110007
दूरभाष : 23856391